CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

संस्करण

॥ श्रीः ॥

अथ देवीगीता ।

मुरादाबादनिवासी पं० ज्वालाप्रसादजी-
शर्मकृतभाषाटीकासमेता ।

2

मुद्रक व प्रकाशकः-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

कल्याण-बम्बई.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्करण - सन् १९९३, सम्वत् २०४९

मूल्य रु20.-00 मात्र

सर्वाधिकार
प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

Originaly printed and published by
M/s. Khemraj Shrikrishnadass.
prop. Shri Venkateshwar press,
7 th-Khetwadi, Khambatta Lane, Bombay-400004
This edition printed at
66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

...nal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MoE

श्रीजगदम्बायै नमः ।

सत्त्वादिस्थैरगणितगुणैर्हन्त विश्वं प्रसूय
व्यक्त धत्ते प्रहसनकरीं या कुमारीति संज्ञाम् ॥
मोहध्वान्तप्रसरविरतिर्विभ्रमार्तेः समन्ता-
दाद्या शक्तिः स्फुरतु मम सा दीपवद्देहगेहे ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्करण - सन् १९९३, सम्वत् २०४९

मूल्य ₹20.-00 मात्र

सर्वाधिकार
प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

Originaly printed and published by
M/s. Khemraj Shrikrishnadass.
prop. Shri Venkateshwar press,
7th-Khetwadi, Khambatta Lane, Bombay-400004
This edition printed at
66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

...nal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDP

श्रीजगदम्बायै नमः ।

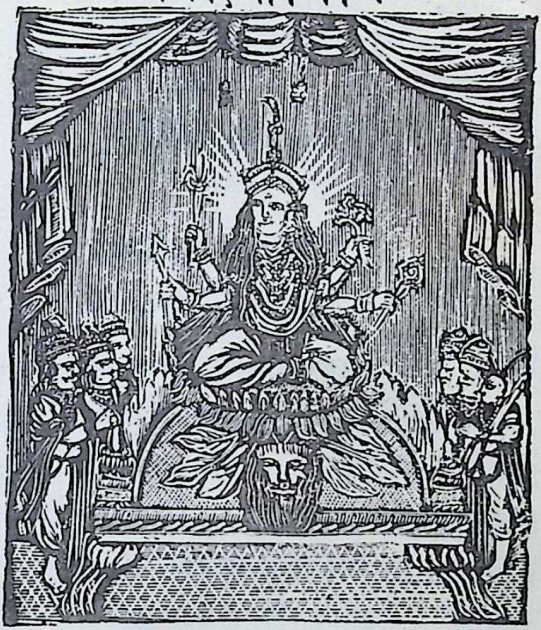

सत्त्वादिस्थैरगणितगुणैर्हन्त विश्वं प्रसूय
व्यक्त धत्ते प्रहसनकरीं या कुमारीति संज्ञाम् ॥
मोहध्वान्तप्रसरविरतिर्विश्वमूर्तेः समन्ता-
दाद्या शक्तिः स्फुरतु मम सा दीपवद्देहगेहे ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDP

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDP

श्रीः ।

अथ देवीगीता।

भाषाटीकासहिता.

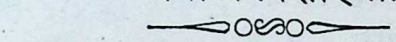

अथ प्रथमोऽध्यायः १.

जनमेजय उवाच ।

धराधराधीशमौलावाविरासीत्परंमहः ॥
यदुक्तंभवतापूर्वंविस्तरात्तद्वदस्वमे ॥ १ ॥

भा०टी०—जनमेजयने कहा हे मुनिवर ! आपने पहले कहा है कि, अनन्तर यह परमज्योति हिमालयके पृष्ठमें आविर्भूत हुई थी इस समय उस परमज्योतिका विषय विस्तार सहित मुझसे वर्णन कीजिये ॥ १ ॥

कोविरज्येतमतिमान्पिबञ्छक्तिकथामृतम् ॥
सुधांतुपिबतांमृत्युः सनैतच्छृण्वतो भवेत् ॥२॥

भा०टी०—कौन बुद्धिमान् मनुष्य इस शक्तिका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

कथामृत पान करनेसे विरत होगा यद्यपि सुधापायी देवताओंको किसी प्रकार मृत्युकी सम्भावना हो तथापि देवीगीता कथामृतपानकरनेवालोंके पक्षमें उसकी कुछ सम्भावना नहीं होती ॥ २ ॥

व्यासउवाच ।

धन्योऽसिकृतकृत्योऽसिशिक्षितोऽसिमहात्मभिः ॥
भाग्यवानसियद्देव्यांनिर्व्याजाभक्तिरस्तिते ॥ ३ ॥

भा०टी०—व्यासजीने कहा. हे महाराज ! देवीके प्रति जिस प्रकार आपकी एकान्त भक्ति देखता हूँ. इससे मुझको बोध होता है कि, आप महात्माओंसे शिक्षित कृतकृत्य भाग्यवान् और धन्य हुए हैं इसमें सन्देह नहीं ३ ॥

शृणुराजन्पुरावृत्तं सतीदेहेऽग्निभर्जिते ॥
भ्रांतःशिवस्तुबभ्रामक्वचिद्देशेस्थिरोऽभवत् ॥ ४ ॥

भा०टी०—हे राजन् ! अब मैं परमपुरातन तत्त्व वर्णन करता हूं श्रवण करो देवादिदेव महेश्वरने उस अग्नि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दग्ध सतीके देहको धारण कर भ्रान्त चित्तसे भूमण्डलपर भ्रमण करते करते जिस स्थानमें स्थिर होकर अवस्थिति की ॥ ४ ॥

प्रपंचभानरहितः समाधिगतमानसः ॥
ध्यायन्देवीस्वरूपंतुकालंनिन्येसआत्मवान्॥५॥

भा०टी—उस स्थानमें वह नियतेन्द्रिय संसारज्ञानरहित और समाधियुक्त होकर देवीके स्वरूपका ध्यान करते करते काल व्यतीत करने लगे ॥ ५ ॥

सौभाग्यरहितंजातं त्रैलोक्यंसचराचरम्॥
शक्तिहीनंजगत्सर्वंसाब्धिद्वीपंसपर्वतम् ॥ ६ ॥

भा०टी—इस समय देवीके विना चराचरयुक्त यह त्रैलोक्यमण्डल ऐश्वर्यरहित और पर्वत, समुद्र तथा द्वीप सहित यह सम्पूर्ण भूमण्डल शक्तिविहीन होगया॥ ६ ॥

आनंदःशुष्कतांयातःसर्वेषांहृदयांतरे ॥
उदासीनाःसर्वलोकाश्चिंताजर्जरचेतसः ॥ ७ ॥

भा०टी०—सम्पूर्ण जीवोंके हृदयका आनन्द शुष्क

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होगया सम्पूर्ण मनुष्य चिन्ताके कारण जर्जरचित्त हो दीनभावसे अवस्थिति करने लगे ॥ ७ ॥

सदादुःखोदधौमग्नारोगग्रस्तास्तदाऽभवन् ॥
ग्रहाणादेवतानाञ्च वैपरीत्येनवर्तनम् ॥ ८ ॥

भा०टी०—सब दुःखसागरमें निमग्न होकर रोगग्रस्त होनेलगे ग्रहोंकी विपरीत गति और देवताओंकी विपरीत अवस्था होने लगी ॥ ८ ॥

आधिभूताधिदैवानांसत्यभावानृपाऽभवन् ॥
अथाऽस्मिन्नेवकालेतुतारकाख्योमहासुरः ॥ ९॥

भा०टी०—राजालोग सतीके अभावसे आधिभौतिक और आधिदैविक दुःखपरम्पराके आधीन होकर स्थिति करने लगे ॥ ९ ॥

ब्रह्मदत्तवरोदैत्योऽभवत्त्रैलोक्यनायकः ॥
शिवौरसस्तुयःपुत्रःसतेहंताभविष्यति ॥ १० ॥

भा०टी—इसी समय तारकनामक महासुर ब्रह्माजीसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वर प्राप्तकर अत्यन्तदुर्जय हो उठा वह वीर मदसे मत्त हो त्रिभुवनको जीत त्रैलोक्यका एकमात्र अधीश्वर होगया १०

इतिकल्पितमृत्युः स देवदेवैर्महासुरः ॥
शिवौरससुताभावाज्जगर्जचननंदच ॥ ११ ॥

भा०टी०—प्रजापति ब्रह्माके "शिवका औरस पुत्र तुम्हारा हन्ता होगा" इस प्रकार वरदान करनेपर और उस समय शिवके औरस पुत्रका अभाव होनेके कारण वह महासुर सदा आनन्दसे उन्मत्त होकर जयका अभिमान करनेलगा ॥ ११ ॥

तेनचोपद्रुताःसर्वेस्वस्थानात्प्रच्युताः सुराः ॥
शिवौरससुताभावाच्चिन्तामापुर्दुरत्ययाम्॥ १२॥

भा०टी०—सम्पूर्ण देवता उसके उपद्रवसे स्थानभ्रष्ट होकर शिवका औरस पुत्र न होनेके कारण दुस्तर चिन्ता सागरमें निमग्न हुए ॥ १२ ॥

नांगनाशंकरस्यास्तिकथंतत्सुतसंभवः ॥
अस्माकंभाग्यहीनानांकथंकार्यंभविष्यति १३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी—सतीदेवीके इस समय प्राण त्यागनेपर महादेव भार्यारहित हुए हैं अतएव इस समय किस प्रकार उनके सुतोत्पत्ति सम्भव होसकती है ? हम अत्यन्त भाग्यहीन हैं कारण कि, शंकरकी पुत्रोत्पत्तिके अभावसे हमारा कार्य सिद्ध होना अत्यन्त कठिन होगया ॥ १३ ॥

इतिचिंतातुराःसर्वेजग्मुर्वैकुण्ठमंडले ॥
शशंसुर्हरिमेकांतेसचोपायंजगाद ह ॥ १४ ॥

भा०टी—इस प्रकार चिन्तासे कातर होकर सम्पूर्ण देवता वैकुण्ठमंडलमें गये और निर्जनमें भगवान् विष्णुसे समस्त वृत्तान्त निवेदन करनेपर वह उस विषयका उपाय कहने लगे ॥ १४ ॥

कुतश्चिंतातुराःसर्वेकामकल्पद्रुमाशिवा ॥
जागर्तिभुवनेशानीमणिद्वीपाधिवासिनी ॥ १५ ॥

भा०टी—हे सुरगण ! जब मणिद्वीपनिवासिनी वाञ्छाकल्पद्रुमरूपिणी कल्याणदायिनी करुणामयी देवी भुवने-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्वरी हमारेलिये सदा जागरित रहतीहै तब तुम चिन्तासे व्याकुल क्यों होते हो ॥ १५ ॥

अस्माकमनयादेवतदुपेक्षास्तिनान्यथा ॥
शिक्षैवेयंजगन्मात्राकृतास्मच्छिक्षणायच ॥१६॥

भा०टी०—वह जगज्जननी केवल हमारे अपराधसे हमको शिक्षा देनेके लिये उपेक्षा दिखाती हैं हे देवताओ ! तुम निश्चय जानों कि,वह शिक्षा हमारे विनाशके निमित्त नहीं है हमारे प्रति करुणा दिखानेके लियेही वह करती हैं ॥ १६ ॥

लालनेताडनेमातुर्नाकारुण्ययथार्भके ॥
तद्वदेवजमन्मातुर्नियंत्र्यागुणदोषयोः ॥ १७ ॥

भा०टी०—जिस प्रकार अपनी सन्तानके लालन पालन और ताडन विषयमें माताकी दयाहीनता नहीं दिखाई देती इसीप्रकार तुम्हारे गुण दोष विषयमें वह जगन्नियन्त्री जगज्जननी कभी निर्दय नहीं होगी ॥१७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपराधोभवत्येवतनयस्यपदेपदे ॥
कोपरःसहतेलोकेकेवलंमातरंविना ॥ १८ ॥

भा०टी०—सन्तानसे अपराध पद पदपर होताहै त्रैलोक्यमें एकमात्र जननीके विना और कौन उसको सह सकता है ? ॥ १८ ॥

तस्माद्यूयंपरांबांतांशरणंयातमाचिरम् ॥
निर्व्याजयाचित्तवृत्त्यासावःकार्यंविधास्यति १९ ॥

भा०टी—अतएव तुम शीघ्रही एकान्त भक्तिसहित उन्हीं परमजननी परमेश्वरीकी शरणागत होओ अवश्यही वह तुम्हारे कार्यसाधनमें यत्न करैंगी ॥ १९ ॥

इत्यादिश्यसुरान् सर्वान् महाविष्णुःस्वजायया॥
संयुतोनिर्जगामाऽऽशुदेवैःसहसुराधिपः ॥ २० ॥

भा०टी०—देवाधिपति महाविष्णु देवताओंसे इस प्रकार आदेशकर निजजाया लक्ष्मीके सहित देवीकी आराधनाके लिये देवताओंको संग ले शीघ्र निकले ॥ २० ॥

आजगामहिमशैलं हिमवन्तंनगाधिपम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अभवंश्चसुराःसर्वेपुरश्चरणकर्मिणः ॥ २१ ॥

भा०टी०—फिर शीघ्र शैलाधिपति हिमालयमें जाय समस्तही पुरश्चरण करनेमें प्रवृत्त हुए ॥ २१ ॥

अंबायज्ञविधानज्ञा अंबायज्ञंचचक्रिरे ॥
तृतीयादिव्रतान्याशुचक्रुःसर्वेसुरानृप ॥ २२ ॥

भा०टी०—हे नृपवर ! अम्बायज्ञके जाननेवाले देवताओंने अम्बायज्ञ आरम्भ किया और सम्पूर्णही तृतीयादि व्रतका अनुष्ठान करने लगे ॥ २२ ॥

केचित्समाधिनिष्णाताःकेचिन्नामपरायणाः ॥
केचित्सूक्तपराःकेचिन्नामपारायणोत्सुकाः ॥२३॥

भा०टी—कोई कोई देवीकी समाधि अर्थात् उनके धारावाहिक ध्यानमें परायण हुए कोई कोई निरन्तर उनका नाम जपने लगे. कोई कोई देवीसूक्त जप करनेमें प्रवृत्त हुए कोई कोई नामपरायण ॥ २३ ॥

मंत्रपारायणपराःकेचित्कृच्छ्रादिकारिणः ॥
अन्तर्यागपराःकेचित्केचिन्न्यासपरायणाः॥२४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—अथवा कोई कोई मंत्रपरायण हुए और कोई कोई कृच्छ्रचान्द्रायणादि व्रतपरायण हुए कोई कोई अन्तर्यागमें कोई कोई प्राणाग्निहोत्र योगमें अथवा कोई कोई न्यासादिमें नियुक्त हुए ॥ २४ ॥

ह्लेखयापराशक्तेःपूजांचक्रुरतंद्रिताः ॥
इत्येवंबहुवर्षाणिकालोऽगाज्जनमेजय ॥ २५ ॥

भा०टी०—और कोई कोई अतन्द्रित होकर माया-बीजमंत्र द्वारा परमाशक्ति भुवनेश्वरीकी पूजा करने लगे हे महाराज ! इस प्रकार देवताओंको बहुत वर्ष व्यतीत होगये ॥ २५ ॥

अकस्माच्चैत्रमासीयनवम्यांचभृगोर्दिने ॥
प्रादुर्बभूवपुरतस्तन्महः श्रुतिबोधितम् ॥ २६ ॥

भा०टी०—फिर एफ दिन चैत्रमासकी नवमी तिथि और भृगुवारमें वह श्रुतिबोधित शक्तिसम्बन्धीय परम-ज्योति अकस्मात् उनके सामने प्रगट हुई ॥ २६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चतुर्दिक्षुचतुर्वेदैर्मूर्तिमद्भिरभिष्टुतम् ॥
कोटिसूर्यप्रतीकाशंचंद्रकोटिसुशीतलम् ॥२७॥
विद्युत्कोटिसमानाभमरुणंतत्परंमहः ॥
नैवचोर्ध्वनातिर्यक्चनमध्येपरिजग्रभत् ॥ २८ ॥

भा०टी—यह तेज करोड करोड विद्युत्की समान अरुण वर्ण और करोड करोड चन्द्रमाके समान शीतल था उस परम ज्योतिकी प्रभा करोड करोड सूर्य्यके समान थी चारों ओर अवास्थित होकर मूर्तिमान् चारों वेद उसका स्तव करते थे वह तेजोराशि क्या ऊर्ध्वमें क्या पार्श्वमें क्या मध्यमें किसी दिशामें परिच्छिन्न नहीं हुई ॥ २७ ॥ २८ ॥

आद्यंतरहितंतत्तुनहस्ताद्यंगसंयुतम् ॥
नचस्त्रीरूपमथवा नपुंरूपमथोभयम् ॥ २९ ॥

भा०टी०—उसका आदिभी नहीं और अन्तभी नहीं वह हस्तपादादि अंगसंयुक्त स्त्रीरूप पुरुषरूप अथवा नपुंसकरूप भी नहीं थी ॥ २९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दीप्त्यापिधाननेत्राणांतेषामासीन्महीमते ॥
पुनश्चधैर्यमालंब्ययावत्तेदद्दशुःसुराः ॥ ३० ॥

भा०टी०—देवताओंने प्रथम उस तेजकी प्रभामें हत होकर नेत्र मूँदलिये किन्तु क्षणकालमेंही धैर्य्य अवलम्बन कर ज्योंही नेत्र खोले ॥ ३० ॥

तावत्तदेवस्त्रीरूपेणाऽभाद्दिव्यंमनोहरम् ॥
अतीवरमणीयांगींकुमारींनवयौवनाम् ॥ ३१ ॥

भा०टी०—त्योंही वह परमज्योति अतिमनोहर दिव्य रमणीरूपसे प्रकाशित हुई उस मनोरमाङ्गी नवयौवना कुमारीके ॥ ३१ ॥

उद्यत्पीनकुचद्वंदनिंदितांभोजकुड्मलाम् ॥
रणत्किंकिणिकाजालशिंजन्मंजीरमेखलाम् ॥ ३२ ॥

भा०टी०—कमलकलिकानिन्दित दोनों कुच ऊँचे परम शोभायमान होरहे थे कमरमें किंकिणी मेखलाके शब्द और चरणोंसे मनोहर मंजीरकी ध्वनि आती थी ॥ ३२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कनकांगदकेयूरग्रैवेयकविभूषिताम् ॥
अनर्घ्यमणिसंभिन्नगलबंधविराजिताम् ॥ ३३ ॥

भा०टी०—उसके चारों हाथोंमें कनकवलय, चारों बाहुओंमें केयूर, ग्रीवादेशमें ग्रैवेयक गलदेशमें अमूल्यमणिहार गल बन्ध और परमोज्ज्वल प्रभाजाल विस्तारित होकर शोभा पारहा था ॥ ३३ ॥

तनुकेतकसंराजन्नीलभ्रमरकुंतलाम् ॥
नितंबबिंबसुभगरोमराजिविराजिताम् ॥३४ ॥

भा०टी०—उनके कर्ण और कपोलके मध्यवर्ती केशवाली नवकेतकीपुष्पपत्रोपरि विराजित दीप्तप्रभ नीलवर्ण भ्रमरावलीके समान समुज्ज्वल शोभा पाती है. नितम्बबिम्ब सुघटित और अत्यन्त मनोहर रोमराजि नाभिमें विराजित होकर अपूर्व शोभा सम्पादन करती है ॥३४॥

कर्पूरशकलोन्मिश्रतांबूलापूरिताननाम् ॥
कनत्कनकताटंकविटंकवदनांबुजाम् ॥ ३५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

भा०टी०—दीप्यमानकनकताटङ्कमें उज्ज्वल परम सुन्दर मुखकमल कर्पूरखण्डमिश्रित ताम्बूलसे पूर्ण॥ ३५॥

अष्टमीचंद्रबिंबाभललाटामायतभ्रुवम् ॥
रक्तारविंदनयनामुन्नसांमधुराधराम् ॥ ३६ ॥

भा०टी०—ललाटमें अर्द्धचन्द्र शोभायमान दोनों भौंहें चौंडी नेत्रोंके उपांतभागमें कोकनदके समान अर्थात् लाल कमलके समान शोभा धारण की है. नासिका ऊँची अधर बिम्बाफलके समान अतिमनोहर ॥ ३६ ॥

कुंदकुड्मलदंताढ्यां मुक्ताहारविराजिताम् ॥
रत्नसंभिन्नमुकुटांचंद्ररेखावतंसिनीम् ॥ ३७ ॥

भा०टी०—सम्पूर्ण दांत कुन्दकलीके समान अत्यन्त मनोहर गलेमें लम्बायमान मोतियोंका हार विराजमान है मस्तकके ऊपर हीरक और मणिरत्नमें खचित प्रदीप्त मुकुटालङ्कार कर्णमें चन्द्ररेखाकी समान कर्णफूल॥ ३७॥

मल्लिकामालतीमालाकेशपाशविराजिताम् ॥
काश्मीरबिन्दुनिटिलां नेत्रत्रयविलासिनीम् ३८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—केशपाश मल्लिका और मालतीकी मालासे सुशोभित ललाट काश्मीरिबिन्दुद्वारा सुसाज्जित और तीनों नेत्र मुखमण्डलकी अपूर्व शोभा सम्पादन करते हैं॥ ३८॥

पाशांकुशवराभीतिचतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ॥
रक्तवस्त्रपरीधानांदाडिमीकुसुमप्रभाम् ॥ ३९ ॥

भा०टी०—उनके एक हस्तमें पाश और दूसरे हाथमें अंकुश तथा अन्यान्य दोनों हाथ वर और अभय दान भङ्गिमासे विराजितदेहकी कान्ति दाडिमीके फूलकी समान परिधान अरुणवर्ण अम्बर परमशोभा विस्तार करते हैं ॥ ३९ ॥

सर्वशृंगारवेषाढ्यां सर्वदेवनमस्कृताम् ॥
सर्वाशापूरिकांसर्वमातरंसर्वमोहिनीम् ॥ ४० ॥

भा०टी०—देवताओंने इस प्रकार समस्त शृंगार वेष धारिणी समस्त वाञ्छापूरिणी संपूर्णदेवताओंसे नमस्कृत हास्याननी अरिबलमोहनी ॥ ४० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

प्रसादसुमुखीमंबांमंदस्मितमुखांबुजाम् ॥
अव्याजकरुणामूर्तिंददृशुःपुरतःसुराः ॥ ४१ ॥

भा०टी०—अखिलजननी प्रसादसुमुखी कपटतारहित करुणाकी मूर्तिरूपिणी अम्बिका देवीको सामने देखा ४१ ॥

दृष्ट्वातांकरुणामूर्तिंप्रणेमुः सकलाःसुराः
वक्तुंनाशक्नुवन्किंचिद्बाष्पसंरुद्धनिःस्वनाः॥४२॥

भा०टी०—उस करुणामयी मूर्तिको देखकर देवताओंने प्रणाम किया किन्तु बाष्पभारसे कण्ठ रुकजानेके कारण कुछभी न कहसके ॥ ४२ ॥

कथंचित्स्थैर्यमालंब्यभक्त्याचानतकंधराः ॥
प्रेमाश्रुपूर्णनयनास्तुष्टुवुर्जगदंबिकाम् ॥ ४३ ॥

भा०टी०—फिर अतिकष्टसे धैर्य अवलम्बन कर भक्तिमें भर शिर झुकाय प्रेम अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे जगदम्बिकाका स्तव करने लगे ॥ ४३ ॥

देवाऊचुः ॥ नमोदेव्यैमहादेव्यैशिवायै सततंनमः॥
नमःप्रकृत्यैभद्रायैनियताःप्रणताः स्मताम्॥४४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—देवताओंने कहा. हे जगदम्बिके ! आप देवी और महादेवी हैं तथा आपही शिवरूपिणी हैं हम सदा संयत चित्तसे आपको वारंवार प्रणाम करते हैं. हे देवा आपही साम्यावस्थाविशिष्ट मायोपाधियुक्त ब्रह्मरूपिणी प्रकृति और आपही सर्वकल्याणरूपी हैं. हम संयतमनसे आपके चरणकमलोंमें प्रणाम करते हैं ॥ ४४ ॥

तामग्निवर्णांतपसाज्वलंतींवैरोचनींकर्मफलेषुजुष्टाम् ।
दुर्गांदेवींशरणमहंप्रपद्येसुतरसितरसेनमः ॥ ४५ ॥

भा०टी०—हे जननि ! आपही योगियोंके हृदयमें अनलशिखाकी समान अरुणवर्णसे दीप्ति पाती हैं आपही ज्ञानप्रभासे दीप्यमान हैं, हे मातः ! आपही इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्डमें चैतन्य रूपसे सर्वत्र प्रकाशित होती हैं ब्रह्मादिदेवता और मानवादि जीवगण कर्मफलप्राप्तिके लिये आपकी सेवा करते हैं; हे देवि ! आपही संसारसागरसे तारनेवाली हैं अतएव हम घोर संसारसमुद्रसे पार होनेके-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

लिये आपकी शरणागत होकर आपको वारंवार नमस्कार करते हैं ॥ ४५ ॥

देवींवाचमजनयंतदेवास्तांविश्वरूपाःपशवोवदंति ॥
सानोमंद्रेषमूर्जंदुहानाधेनुवागस्मानुपसुष्टुतैतु॥४६॥

भा०टी०—हे मातः ! प्राणादिपञ्चवायुकी सहायतासे जो सम्पूर्ण भावप्रकाशवाक्य उच्चारित होते हैं हम उसको माया कहते हैं, वह माया हमारी कामधेनु अर्थात् हम उस कामधेनुरूपिणी मायासे इच्छानुसार धन, मान और अन्नादि दुहकर अहंकारमें उन्मत्त होते हैं; हे मातः ! आप हमारी वही भाषास्वरूप हैं अतएव आप सन्तुष्ट होकर हमारी वाञ्छा पूर्ण कीजिये ॥ ४६ ॥

कालरात्रिंब्रह्मस्तुतांवैष्णवीस्कंदमातरम् ॥
सरस्वतीमदितिंदक्षदुहितरंनमामःपावनांशिवाम् ४७

भा०टी०—हे देवि ! आप सर्वसंहारक कालकाभी संहार करती हैं, भगवान् पद्मयोनि ब्रह्मा सदा आपकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्तुति करते हैं, हे मातः ! आपही विष्णुशक्ति लक्ष्मी, स्कन्दमाता शिवशक्ति पार्वती, ब्रह्मशक्ति सरस्वती देवमाता अदिति और आपही सती नाम्नी दक्षकी कन्या हैं, हे मातः! आपही इस प्रकार अनेकरूप धारण करके अखिलब्रह्माण्डपूत और सम्पूर्णको शान्तिदान करती हैं अतएव हे देवि ! आपको प्रमाण करते हैं ॥ ४७ ॥

महालक्ष्म्यैचविद्महेसर्वशक्त्यैचधीमहि ॥
तन्नोदेवीप्रचोदयात् ॥ ४८ ॥

भा०टी०—हम आपकोही महालक्ष्मी जानते हैं, इस आपको सर्वशक्तिरूपिणी देवी भगवती जानकर आपका ध्यान करते हैं हे जननि ! आपही हमको अपने श्रवण, मनन और ध्यानमें प्रेरणा कीजिये ॥ ४८ ॥

नमोविराट्स्वरूपिण्यैनमःसूत्रात्ममूर्तये ॥
नमोव्याकृतरूपिण्यैनमःश्रीब्रह्ममूर्तये ॥ ४९ ॥

भा०टी—हे देवि ! आपही विराट्रूपिणी हैं, आपको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नमस्कार है, आपही सूत्रात्मा, हिरण्यगर्भरूपिणी हैं आपको नमस्कार है, आपही महदादि षोडशविकृति-रूपिणी हैं आपको नमस्कार है हे मातः ! आपही ब्रह्मरूपिणी हैं आपको हम नमस्कार करते हैं ॥ ४९ ॥

यदज्ञानाज्जगद्भातिरज्जुसर्पस्रगादिवत् ॥
यज्ज्ञानाल्लयमाप्नोतिनुमस्तांभुवनेश्वरीम् ॥५०॥

भा०टी०—जिनके सृष्टि अविद्याजनित ज्ञानसे यह जगत रज्जु और सर्पादि (मालाआदि) में सर्पके समान सत्य जानकर भ्रम होता है फिर जिनके सृष्टिविद्याजनित ज्ञानसे वह भ्रम दूर होता है हम भक्तिनम्रमनसे उन्हीं सर्वान्तर्यामिनी भगवती भुवनेश्वरीका ध्यान करते हैं५०

नुमस्तत्पदलक्ष्यार्थांचिदेकरसरूपिणीम्॥
अखंडानंदरूपांतांवेदतात्पर्यभूमिकाम् ॥५१ ॥

भा०टी०—"तत्त्वमसि" इस महावाक्यस्थ तत् शब्दकी प्रतिपाद्य जो सम्पूर्णदेवताओंकी तात्पर्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूमि चैतन्यरसरूपिणी और अखण्डानन्दस्वरूप ब्रह्मस्वरूपिणी ॥ ५१ ॥

पंचकोशातिरिक्तांतामवस्थात्रयसाक्षिणीम् ॥
पुनस्त्वंपदलक्ष्यार्थांप्रत्यगात्मस्वरूपिणीम् ॥५२॥

भा०टी०—तथा जो अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय इन पञ्चकोशके अतिरिक्त हैं, जो जाग्रत्, स्वप्न और सुषुप्ति इन तीनों अवस्थाओंकी साक्षिणी और जो त्वम्पदकी भी लक्ष्यार्थ हैं, हम उन्हीं ज्ञानब्रह्मस्वरूपीणी भुवनेश्वरी देवीका ध्यान करते हैं ॥ ५२ ॥

नमःप्रणवरूपायैनमोह्रींकारमूर्तये ॥
नानामंत्रात्मिकायैतेकरुणायैनमोनमः ॥ ५३॥

भा०टी—हे मातः ! आपही प्रणवरूपिणी ह्रींकारमूर्ति नानाविधमन्त्रात्मिका और करुणामयी हो हम आपके चरण कमलोंमें बारम्बार प्रणाम करते हैं ॥ ५३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इतिस्तुतातदादेवैर्मणिद्वीपाधिवासिनी ॥
प्राहवाचामधुरयामत्तकोकिलनिःस्वना ॥५४॥

भा०टी०—देवताओंके इस प्रकार उन मणिद्वीपनिवासिनी जगदम्बिकाके स्तव करनेपर प्रमत्त कोकिलके कण्ठकी समान कण्ठवाली भगवती मधुरवचनोंद्वारा उनसे कहने लगी ॥ ५४ ॥

श्रीदेव्युवाच।वदंतुविबुधाःकार्यंयदर्थंमिहसंगताः ॥
वरदाहंसदाभक्तकामकल्पद्रुमाऽस्मिच॥ ५५ ॥

भा०टी०—देवी बोली, हे देवताओ ! तुम किसलिये यहां आये हो ? तुम्हारा क्या काय है सो कहो मैं सदाही भक्तोंकी वाञ्छाको कल्पतरु और वर देनेवाली विद्यमानरहती हूं ॥ ५५ ॥

तिष्ठंत्यांमायिकाचिंतायुष्माकंभक्तिशालिनाम् ।
समुद्धरामिमद्भक्तान्दुःखसंसारसागरात् ॥ ५६ ॥

भा०टी०—तुम मेरे भक्त हो मेरे विद्यमान रहते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुमको क्या चिन्ता है ? मैं तुमको दुःखसागरसे उद्धार करूंगी ॥ ५६ ॥

इतिप्रतिज्ञांमेसत्यांजानीथाविबुधोत्तमाः
इतिप्रेमाकुलांवाणींश्रुत्वासंतुष्टमानसाः ॥ ५७॥

भा०टी०—हे देवताओ ! तुम मेरी यह प्रतिज्ञा सत्यही जानो. हे राजन् ! देवतागण देवीके यह प्रेमपूर्ण वचन सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए ॥ ५७

निर्भयानिर्जराराजन्नूचुर्दुःखंस्वकायकम्॥देवाऊचुः।
नाऽज्ञातंकिंचिदप्यत्रभवत्याऽस्तिजगत्त्रये ॥ ५८ ॥

भा०टी०—और जगन्मातासे अपना मनोदुःख निवेदन करनेलगे देवता बोले, हे परमेश्वरि ! आप सर्वज्ञ और सब जगत्की साक्षी हैं इन तीनों जगतोंमें आपसे अज्ञात कुछ नहीं हैं ॥ ५८ ॥

सर्वज्ञयासर्वसाक्षिरूपिण्यापरमेश्वरि ॥
तारकेणाऽसुरेंद्रेणपीडिताःस्मोदिवानिशम्॥५९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—हे मातः! हे शिवे! तारक नामक असुर हमको दिनरात दुःख देता है ॥ ५९ ॥

शिवांगजाद्वधस्तस्यनिर्मितोब्रह्मणाशिवे ॥
शिवांगनातुनैवास्तिजानासित्वंमहेश्वरि ॥ ६० ॥

भा०टी०—विश्वस्रष्टा विधाता शिवके औरसपुत्रसे उसका वध निर्दिष्ट किया है. हे महेश्वरि! इस समय शिव-गृहिणी सतीने देह त्यागकिया है सो आप जानती हैं६० ॥

सर्वज्ञपुरतःकिंवावक्तव्यंपामरैर्जनैः ॥
एतदुद्देशतःप्रोक्तमपरंतर्कयांबिके ॥ ६१ ॥

भा०टी०—जो सर्वज्ञ हैं फिर उनके सामने पामरगण क्या कहे हैं? हे जगदम्बिके! हमने यह सम्पूर्ण वृत्तान्त संक्षेपसे वर्णन किया और हमारा अन्यान्य सम्पूर्ण दारुण दुःख आप मनमें जानसक्ती हैं ॥ ६१ ॥

सर्वदाचरणांभोजेभक्तिःस्यात्तवनिश्चला ॥
प्रार्थनीयमिदंसुरूपमपरंदेहहेतवे ॥ ६२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—हम अधिक और क्या कहैं ? आपके चरणकमलोंमें हमारी अचल भक्ति सदा विद्यमान रहै यही हमारी मुख्यप्रार्थना है और शिवकी सुतोत्पत्तिके लिये आप देहधारण कीजिये; यह हमारी दूसरी प्रार्थना जानिये ॥ ६२ ॥

इतितेषांवचःश्रुत्वाप्रोवाचपरमेश्वरी ॥
ममशक्तिस्तुयागौरीभविष्यतिहिमालये ॥६३॥

भा०टी०—देवताओंके यह वचन सुन प्रसदसुमुखी परमेश्वरी उनसे कहने लगी, मेरी शक्ति जो गौरीरूपसे हिमालयमें उत्पन्न होगी ॥ ६३ ॥

शिवायसाप्रदेयास्यात्सावःकार्यविधास्यति ॥
भक्तिर्यच्चरणांभोजेभूयाद्युष्माकमादरात् ॥६४॥

भा०टी—वही शिवसीमन्तिनी होकर पुत्रोत्पादन पूर्वक उसके द्वारा तारकासुरका वध करके तुम्हारा कार्यसाधन करेगी और मेरे चरणकमलोंमें तुम्हारी प्रेमपूर्ण निश्चल भक्ति होगी ॥ ६४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिमालयोहिमनसामामुपास्तेऽतिभक्तितः ॥
ततस्तस्यगृहेजन्ममममप्रियकरंमतम् ॥ ६५ ॥

भा०टी०—हिमालयभी अत्यन्त भक्तिसहित एकान्तमनसे मेरी उपासना करते हैं अतएव उनके गृहमें मेरा जन्म ग्रहण करना अत्यन्त प्रिय जानना चाहिये॥ ६५॥

व्यासउवाच।हिमालयोऽपितच्छ्रुत्वाऽत्यनुग्रहकरंवचः
बाष्पैःसंरुद्धकंठाक्षोमहाराज्ञींवचोऽब्रवीत् ॥ ६६ ॥

भा०टी०—व्यासजीने कहा हे राजन् ! गिरिराज हिमालय भी उनके अत्यन्त अनुग्रहसूचक वचन सुनकर प्रेमजनित बाष्पमें भर रुद्धकण्ठ हो अश्रुपूण नेत्रोंसे त्रैलोक्य साम्राज्ञी भुवनेश्वरीसे कहनेलगे ॥ ६६ ॥

महत्तरंतंकुरुषेयस्यानुग्रहमिच्छसि ॥
नोचेत्काहंजडःस्थाणुःक्वत्वंसच्चित्स्वरूपिणी ६७ ॥

भा०टी०—हे देवि ! आप जिसके प्रति अनुग्रह करती हैं उसको आप अत्यन्त महत् करदेती हैं नहीं तो जड और स्थावर पाषाणपुञ्ज मैं कहाँ ? और वाक्य तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनके अगोचर सच्चिदानन्दरूपिणी आप कहाँ ? हमारे गृहमें उत्पन्न होकर आप हमारे प्रति इतना अनुग्रह कर क्योंप्रकाशकरती यही आपके अनिर्वचनीय महत्त्वका रिचयप्रदान करता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ६७ ॥

असंभाव्यंजन्मशतैरस्त्वत्पितृत्वंममाऽनघे ॥
अश्वमेधादिपुण्यैर्वापुण्यैवातत्समाधिजैः ॥६८॥

भा०टी०—हे विमले ! हमारेपक्षमें आपके जनकत्व-लाभका अनन्तजन्म अश्वमेधादिजनित अथवा समाधिज-नित पुण्यके अतिरिक्त और कोई कारण दिखाई नहीं देता ॥ ६८ ॥

अद्यप्रपंचेकीर्तिःस्याज्जगन्मातासुताऽभवत् ॥
अहोहिमालयस्यास्यधन्योसौभाग्यवानिति ६९॥

भा०टी०—अहो ! हमारे प्रति आपने क्या अनुग्रह किया है " जगन्माता जगद्धात्री इन हिमालयकी कन्या हुई अतएव यह व्यक्तिही धन्य और भाग्यवान् है "

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अबसे हमारी इस प्रकार अतुलकीर्ति इस सम्पूर्ण जगत्में प्रचलित होगी ॥ ६९ ॥

यस्यास्तुजठरेसंतिब्रह्मांडानांचकोटयः ॥
सैवयस्यसुताजाताकोवास्यात्तत्समोभुवि ॥७०॥

भा०टी०—जिनके जठरमें करोड ब्रह्माण्ड स्थित रहते हैं वह जिनकी कन्या हुई पृथ्वीतलमें उसके समान सौभाग्यवान् और पुण्यवान् और कौन हो-सक्ता है ? ॥ ७० ॥

नजानेस्मात्पितॄणांकिंस्थानंस्यान्निर्मितंपरम् ॥
एतादृशानांवासाययेषांवंशेऽस्तिमादृशः ॥७१॥

भा०टी०—जिनके वंशमें मेरे समान पुण्यवान् मनुष्यने जन्म ग्रहण कियाहै मेरे उन पितरोंके वासार्थ कैसे परमोत्कृष्ट समस्त स्थान निर्मित हुए हैं वह मैं नहीं कह सक्ता ॥ ७१ ॥

इदंयथाचदत्तंमे कृपयाप्रेमपूर्णया ॥
सर्ववेदांतसिद्धंच त्वद्रूपंब्रूहिमेतथा ॥ ७२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—हे मातः परमेश्वरी ! आपने जिस प्रकार प्रेम परिपूर्ण होकर कृपा प्रकाश की है इसी प्रकार आप हमसे अपना सर्व वेदान्तसिद्ध स्वरूप कहैं ॥ ७२ ॥

योगंचभक्तिसहितंज्ञानंचश्रुतिसंमतम् ॥
वदस्वपरमेशानित्वमेवाहंयतोभवेः ॥ ७३ ॥

भा०टी०—और श्रुतिसम्मत भक्तियुक्त ज्ञान तथा योगका विषय कीर्त्तन कीजिये; क्योंकि हम उसी ज्ञानके बलसे आपका स्वरूपत्व प्राप्त करनेमें समर्थ होंगे ॥ ७३ ॥

व्यास उवाच इतितस्यवचःश्रुत्वाप्रसन्नमुखपंकजा॥
वक्तुमारभताम्बासारहस्यं श्रुतिगूहितम् ॥ ७४ ॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे देवीगीतायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

भा०टी०—व्यासजीने कहा हे महाराज! हिमालयके इस प्रकार स्तुतियुक्त वचन सुनकर भुवनेश्वरीने प्रसन्न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुखसे श्रुति युक्त गूढरहस्यका विषय कहना आरम्भ किया ॥ ७४ ॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे देवीगीता भाषाटीकायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः २.

श्रीदेव्युवाच॥ शृण्वंतुनिर्जराः सर्वेव्याहरंत्यावचोमम।
यस्य श्रवणमात्रेण मद्रूपत्वं प्रपद्यत ॥ १ ॥

भा०टी०—देवीने कहा जिसके श्रवणमात्रसे जीवगण मेरा स्वरूपत्व प्राप्तकरनेमें समर्थ होते हैं इस समय वही विषय वर्णन करती हूं तुम समाहित चित्तसे श्रवण करो ॥ १ ॥

अहमेवाऽऽसपूर्वन्तुनान्यत्किंचिन्नगाधिप ॥
तदात्मरूपंचित्संवित्परब्रह्मैकनामकम् ॥ २ ॥

भा०टी०—हे गिरिवर! सृष्टिके पूर्वमें एकमात्र मैंही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विद्यमान थी अन्य और कुछ नहीं था मेरेही आत्मरूपको चित् संवित् और परब्रह्म इत्यादि नामसे निर्देश कियाहै ॥ २ ॥

अप्रतर्क्यमनिर्देश्यमनौपम्यमनामयम् ॥
तस्यकाचित्स्वतःसिद्धाशक्तिर्मायेतिविश्रुता ॥३॥

भा०टी०—मेरा आत्मा अनुमानके अतीत लक्ष्यके अतीत उपमाके अतीत और जन्ममरणादिविकारके भी अतीत पदार्थ हैं मेरेही आत्माकी स्वतः सिद्ध एक शक्ति है यह शक्ति मायानामसे विख्यात है ॥ ३ ॥

नसतीसानाऽसतीसानोभयात्माविरोधतः ॥
एतद्विलक्षणाकाचिद्वस्तुभूताऽस्तिसर्वदा ॥ ४॥

भा०टी—ब्रह्मज्ञानद्वारा मायाका विनाश होता है यह माया सती अर्थात् सदा नित्य नहीं है और मायाके न होनेसे व्यावहारिक सत्ताका विरोध होनेके कारण असतीभी नहीं है सत्ता और असत्ताकी स्थिति सम्भव नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होसकती, अतएव माया सती और असती यह उभयात्मिकाभी नहीं होसकती इस प्रकार अनिर्वचनीय वस्तुरूप मायाशक्ति मोक्ष कालपर्यन्त विद्यमान रहती है ॥ ४ ॥

पावकस्योष्णतेवेयमुष्णांशोरिवदीधितिः ॥
चंद्रस्यचंद्रिकेवेयंममेयंसहजाध्रुवा ॥ ५ ॥

भा०टी०--मेरी यह अनादि मोक्षपर्यन्त स्थायिनी माया शक्ति अग्निकी उष्णताके समान सूर्यकी मरीचिके समान चन्द्रमाकी ज्योत्स्नाके समान स्वभावसे उत्पन्न होती है ॥ ५ ॥

तस्यांकर्माणिजीवानांजीवाः कालाश्चसंचरे ॥
अभेदेनाविलीनाः स्युः सुषुप्तौव्यवहारवत् ॥ ६ ॥

भा०टी०—सुषुप्तिकालकें समय जीवोंका व्यवहार जिस प्रकार उसमें लीन होता है इसीप्रकार प्रलयकालके समय जीवोंके कार्यसमूह जीव और काल यह समस्तही अभिन्न भावसे मायामें लीन हो जाते हैं ॥ ६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वशक्तेश्चसमायोगादहंबीजात्मतांगता ॥
स्वाधारावरणात्तस्यादोषत्वंचसमागतम् ॥ ७ ॥

भा०टी०—हे गिरिवर! यद्यपि मैं निर्गुण हूं तथापि ऐसी मायाशक्तिके संयोगसे जगत्की कारण स्वरूप हुई हूं किंतु जो माया मेरा आश्रय करके रहती है उस मायाके मुझको आवरण करनेसे मायामें आश्रयावरकता दोष विद्यमान रहता है हे हिमवान्! तुमको जानना चाहिये कि मेरे माया और अविद्या नामसे दो रूप हैं तिनमें विद्यारूपिणी प्रथम इसमें स्वाश्रयव्यामोहकारित्व दोष नहीं है और अविद्यारूपिणी दूसरा इसमें स्वाश्रय व्यामोहकारित्व दोष विद्यमान है इसके द्वाराही जीवोंकी सृष्टि होती है और विद्याके द्वारा जीवगण मोक्ष प्राप्त करते हैं ॥ ७ ॥

चैतन्यस्यसमायोगान्निमित्तत्वंचकथ्यते ॥
प्रपंचपरिणामाच्चसमवायित्वमुच्यते ॥ ८ ॥

भा०टी०—मायाके सहित चैतन्यका संयोग होनेपरही वह मायाप्रतिबिम्बित चैतन्य अर्थात् चिदाभासही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जगत्का निमित्त कारण है और यह माया प्रपञ्चरूप परिमाण समवायिकारण कहा जाता है ॥ ८ ॥

केचित्तांतपइत्याहुस्तमः केचिज्जडंपरे ॥
ज्ञानंमायांप्रधानंचप्रकृतिंशक्तिमप्यजाम् ॥ ९ ॥

भा० टी०—कोई कोई शाखाध्यायी वेदके जाननेवाले इस मायाको तप, कोई कोई तम, कोई कोई जड, कोई कोई ज्ञान, अथवा कोई कोई माया प्रधान प्रकृति अजा और शक्ति नामसे निर्देश करते हैं ॥ ९ ॥

विमर्शइतितांप्राहुःशैवशास्त्रविशारदाः ॥
अविद्यामितरेप्राहुर्वेदतत्त्वार्थचिंतकाः ॥ १० ॥

भा०टी०—शैवशास्त्रतत्त्वज्ञ पंडितलोग उसको विमर्श और अन्यान्य वेदतत्त्वार्थचिन्तक कोविदगण अविद्या कहकर निर्देश करते हैं फलतः यह माया समस्त वेदान्तिगणोंकी उपजीव्य (निर्वाहक) है इस प्रकार निगमादि शास्त्रमें माया अनेक नामोंसे कही गई है ॥ १० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एवं नानाविधानिस्युर्नामानिनिगमादिषु ॥
तस्याजडत्वंदृश्यत्वाज्ज्ञाननाशात्ततोसती ११॥

भा० टी०—जो वस्तु दृश्यमान हैं वही २ वस्तु जड हैं इस अभिचारी लक्षण हेतु मायाका जडत्व और स्वाधिष्ठान ज्ञाननाशहेतु मिथ्यात्व प्रतिपादित होता है किन्तु चैतन्य दृश्य पदार्थ नहीं है अतएव उसको जडभी नहीं कहा जाता ॥ ११ ॥

चैतन्यस्यनदृश्यत्वंदृश्यत्वेजडमेवतत् ॥
स्वप्रकाशंचचैतन्यंनपरेणप्रकाशितम् ॥१२॥

भा०टी०—चैतन्य स्वप्रकाश है वह अन्यके द्वारा प्रकाशित नहीं होता क्योंकि चैतन्य अन्यद्वारा प्रकाशित होता है, यह स्वीकार करनेसे चैतन्यप्रकाशक प्रकाशित होता है ॥ १२ ॥

अनवस्थादोषसत्त्वान्न स्वेनाऽपिप्रकाशितम् ॥
कर्मकर्त्रीविरोधःस्यात्तस्मात्तद्दीपवत्स्वयम् ॥१३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—वह अन्यद्वारा प्रकाशित होताहै इस प्रकार अनवस्था दोष उपस्थित होता है स्वयंप्रकाश पदार्थकी स्थिरता नहीं है यहभी नहीं कहा जाता क्योंकि उसमें कर्म कर्त्ताका विरोध होता है एक पदार्थमेंही एक कालमें कर्तृत्व और कर्मत्व नहीं रहसकता अतएव दीपककी समान चैतन्यको स्वप्रकाश पदार्थ स्वीकार करना चाहिये ॥ १३ ॥

प्रकाशमानमन्येषांभासकंविद्धिपर्वत ॥
अतएवचनित्यत्वंसिद्धंसंवित्तनोर्मम ॥ १४ ॥

भा०टी०—चैतन्य स्वयंप्रकाशमान पदार्थ होनेपरभी अन्य चन्द्र सूर्य्यादि पदार्थोंकोभी प्रकाशित करता है अतएव हे पर्वतवर मेरे संवित् रूप तनुका नित्यत्व सिद्ध हुआ ॥ १४ ॥

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादौदृश्यस्यव्यभिचारतः ॥
संविदोव्यभिचारश्चनानुभूतोऽस्तिकर्हिचित् ॥१५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०--कारण कि जाग्रत्, स्वप्न और सुषुप्ति इत्यादि अवस्थाओंमें दृश्य पदार्थका व्यभिचार होता है किन्तु किसी अवस्थामेंही संवित् वा चैतन्यका व्यभिचार अनुभव नहीं होता क्योंकि जो मैंने जाग्रत् अवस्थाका अनुभव किया है वही मैं स्वप्न और सुषुप्ति अवस्थाका अनुभव करती हूं मैं इस समय सोती थी, इस प्रकार अनुभव किया अतएव संवित् पदार्थका कभी व्यभिचार नहीं होता ॥ १५ ॥

यदितस्याऽप्यनुभवस्तर्ह्ययंयेनसाक्षिणा ॥
अनुभूतःसएवाऽत्रशिष्टःसंविद्वपुः पुरा ॥ १६ ॥

भा०टी०--बौद्धगण कहते हैं, कि जिस प्रकार संवित्का अनुभव होता है इसीप्रकार संवित्के अभावकाभी अनुभव होता है जो सत् है वही क्षणिक है इस प्रकार अनुमानद्वारा ज्ञानका भी अनित्यत्व प्रदिपादित होता है इससे कहाजाता है कि, यद्यपि सम्वित्के अभावका अनुभव होता है तथापि जिस साक्षीद्वारा उस संवित्के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अभवका अनुभव होता है वही साक्षी संवित्वपु है अर्थात् ज्ञानशरीररूपसे प्रतिपन्न होता है क्योंकि साक्षी ज्ञानका नित्यत्व सबकोही स्वीकार करना होता है॥१६॥

अतएवचनित्यत्वंप्रोक्तंसच्छास्त्रकोविदैः ॥
आनंदरूपताचाऽस्याःपरप्रेमास्पदत्वतः ॥१७॥

भा०टी—अतएव अनवद्य सत् शास्त्रोंके तत्त्वज्ञ पंडितगण कहते हैं कि, संवित् नित्य और परम प्रेमका आस्पद होनेसे वह आनन्दस्वरूप है कारण कि, असुख कभी परम प्रेमका आस्पदीभूत नहीं होसकता ॥१७॥

मानभूवंहिभूयासमितिप्रेमात्मनिस्थितम् ॥
सर्वस्याऽन्यस्यमिथ्यात्वादसंगत्वंममस्फुटम् ॥१८॥

भा०टी०—और "मै हूं" जीवोंका इस प्रकार अनुभव नहीं होता किन्तु "मैं विद्यमान हूं" इस प्रकार प्रेम सम्पूर्ण जीवोंके आत्मामें प्रतिष्ठित रहता है यदि आत्माका आनन्दरूपत्व न हो तो इस प्रकार आत्मप्रेम कभी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संभव नहीं होता अतएव प्राणिमात्रके अनुभवहेतु संवित्का आनन्दरूपत्व सर्वथा सिद्ध हुआ है हे गिरिराज ! यह सम्पूर्ण जगत्प्रपंच मायानिर्मित है अतएव वह मिथ्या भ्रम होनेसे सर्पादि मिथ्या पदार्थका जिस प्रकार रज्जु इत्यादिके सहित सम्बन्ध नहीं होता इसी प्रकार इस जगत्के साहित मेरा (आत्माका) असङ्गत्व भलीभाँति सिद्ध हुआ और यह सम्पूर्ण संसार मिथ्या और परिच्छेद्य होनेसे मेरी आत्मस्वरूपिणीकी अपरिच्छिन्नता प्रमाणित होती है ॥१८॥

अपरिच्छिन्नताप्येवमतएवमताममम ॥
तच्चज्ञानंनात्मधर्मोधर्मत्वेजडतात्मनः ॥ १९ ॥

भा०टी०—यदि कोई कहै कि, ज्ञान आत्माका स्वरूप नहीं है वह आत्माका धर्म है यह भ्रान्तिविलास है क्योंकि यदि आत्माका धर्म होता तो अवश्यही उसकी जडता संघटित होती इसमें सन्देह नहीं ज्ञानका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जडत्व सम्भव नहीं होता अतएव अन्य कहीं भी ज्ञानका जडपरिणामित्व दिखाई नहीं देता ॥ १९ ॥

ज्ञानस्यजडशेषत्वंनदृष्टंनचसंभवि ॥
चिद्धर्मत्वंतथानास्तिचितश्चिन्नहिभिद्यते ॥२०॥

भा०टी०—यदि कहो कि, जो ज्ञानका जडत्व हो वह भी नहीं होसकता क्योंकि ज्ञान भी चित् स्वरूप और आत्माभी चित्स्वरूप है चित् पदार्थका धर्मत्व नहीं और चित्पदार्थ चित्से भी भिन्न नहीं होसकता अतएव चिद्रूप ज्ञानका धर्मधर्मिभाव किस प्रकार सम्भव होसकता है २०

तस्मादात्माज्ञानरूपःसुखरूपश्चसर्वदा ॥
सत्यःपूर्णोऽप्यसंगश्चद्वैतजालविवर्जितः॥ २१ ॥

भा०टी०—अतएव आत्मा सर्वदाही ज्ञानस्वरूप आनन्दस्वरूप सत्यस्वरूप पूर्ण संगरहित और द्वैत-वर्जित है ॥ २१ ॥

सपुनःकामकर्मादियुक्तयास्वयिमायया ॥
पूर्वानुभूतसंस्कारात्कालकर्मविपाकतः ॥ २२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—यह आत्मा कामना और कर्मादियुक्त अपनी मायाद्वारा पूर्वानुभूत संस्कार वशसे काल और कर्मके विपाकानुसार ॥ २२ ॥

अविवेकाच्चतत्त्वस्यासिसृक्षावान्प्रजायते ॥
अबुद्धिपूर्वःसर्गोऽयंकथितस्तेनगाधिप ॥ २३॥

भा०टी०—चौवीस तत्त्वोंके अविवेकजनितही इस प्रकार सृष्टिविषयमें इच्छावान् होता है हे गिरिवर ! सोता हुआ पुरुष जिस प्रकार पूर्व संस्कारसे अबुद्धिपूर्वक नींदसे उठता है इसीप्रकार आत्माकी यह सृष्टिभी कालकर्मके संस्कार अबुद्धिपूर्वकही साधित होती है ॥ २३ ॥

एतद्धियन्मयाप्रोक्तंममरूपमलौकिकम् ॥
अव्याकृतंतदव्यक्तंमायाशबलमित्यपि ॥ २४ ॥

भा० टी—हे अचलेन्द्र ! मैंने जो तत्त्वका विषय वर्णन किया यही सर्वोत्तम और मेरा अलौकिक रूपमात्र है वेदमें यही अव्याकृत अव्यक्त और मायाशबल कहकर उल्लिखित हुआ है ॥ २४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रोच्यतेसर्वशास्त्रेषुसर्वकारणकारणम् ॥
तत्त्वानन्दादिभूतंचसच्चिदानंदविग्रहम् ॥२५॥

भा०टी०—और सम्पूर्ण शास्त्रोंमें इसको सर्व कारणोंका कारण सब तत्त्वका आदिभूत तथा सच्चिदानन्दविग्रह कहकर निर्देश करते हैं ॥ २५ ॥

सर्वकर्मघनीभूतमिच्छाज्ञानक्रियाश्रयम् ॥
ह्रींकारमंत्रवाच्यंतदादितत्त्वंतदुच्यते ॥ २६ ॥

भा०टी०—ज्ञान और क्रियासंयुक्त समस्त कर्म घनीभूत होनेसे वह ह्रींकार मंत्रका वाच्य होताहै तत्त्वदर्शी महर्षिगण उस ह्रींकाररूप मायाबीजकोही सम्पूर्ण ब्रह्माण्डका आदि तत्त्व कहकर उल्लेख करते हैं ॥ २६ ॥

तस्मादाकाशउत्पन्नः शब्दतन्मात्ररूपकः ॥
भवेत्स्पर्शात्मकोवायुस्तेजोरूपात्मकंपुनः ॥२७

भा०टी०—उस ह्रींकारवाच्य महत्स्वरूप मायाबीजरूप आदितत्त्वसे क्रमानुसार शब्दतन्मात्ररूप अपञ्चीतक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आकाश उत्पन्न होता है अनन्तर उससे स्पर्शात्मक वायु, अनन्तर उससे क्रमानुसार रूपात्मक तेज ॥ २७ ॥

जलंरसात्मकंपश्चात्ततोगंधात्मिकाधरा ॥
शब्दैकगुणआकाशोवायुःस्पर्शवान्वितः॥२८॥

भा०टी०—इसके उपरान्त रसात्मक जल तदनन्तर गन्धगुणात्मक पृथ्वी उत्पन्न होती है पंडित लोग कहतेहैं कि आकाशका गुण एकमात्र शब्द है वायुका गुण शब्द और स्पर्श हैं ॥ २८ ॥

शब्दस्पर्शरूपगुणं तेजइत्युच्यतेबुधैः ॥
शब्दस्पर्शरूपरसैरापोवेदगुणाःस्मृताः ॥ २९ ॥

भा०टी०—तेजका गुण शब्द स्पर्श और रूप जलका गुण शब्द स्पर्श रूप और रस है ॥ २९ ॥

शब्दस्पर्शरूपरसगंधैः पंचगुणाधरा ॥
तेभ्योऽभवन्महत्सूत्रंयल्लिंगंपरिचक्षते ॥ ३० ॥

भा०टी०—तथा शब्द स्पर्श रूप रस और गन्ध यह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाँच पृथ्वीके गुण हैं इन अपञ्चीकृत भूतोंसे व्यापक सूत्र उत्पन्न होता है वही लिङ्गदेहनामसे कहागया है ॥ ३० ॥

सर्वात्मकंतत्संप्रोक्तंसूक्ष्मदेहोऽयमात्मनः ॥
अव्यक्तंकारणोदेहः सचोक्तः पूर्वमेवहि ॥ ३१ ॥
यस्मिञ्जगद्बीजरूपंस्थितंलिंगोद्भवोयतः ॥
ततःस्थूलानिभूतानिपंचीकरणमार्गतः ॥ ३२ ॥

भा०टी०—यह सूत्र अर्थात् लिंगदेह सर्वप्राणात्मक और यही परमात्माका सूक्ष्म देह है पूर्वमें जो कहागया है जिसमें जगत्का बीज प्रतिष्ठित और जिससे लिङ्ग-देहकी उत्पत्ति है वही परमात्माका कारणदेह है पूर्वोक्त रूपसे अपञ्चीकृत पञ्चमहाभूत उत्पन्न होनेपर ३१ ॥ ३२ ॥

पंचसंख्यानिजायंतेतत्प्रकारस्त्वथोच्यते ॥
पूर्वोक्तानिचभूतानिप्रत्येकंविभजेद्द्विधा ॥ ३३ ॥

भा०टी०—फिर उनसे पञ्चीकरण द्वारा जिस प्रकार पञ्चीकृत भूतकी उत्पत्ति होती है इस समय उसकाही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नियम कहती हूँ हे गिरिराज ! पूर्वोक्त पञ्चमहाभूतोंके प्रत्येकको दो भागोंमें विभक्त करके ॥ ३३ ॥

एकैकंभागमेकस्यचतुर्धाविभजेद्गिरे ॥
स्वस्वेतरद्वितीयांशैर्योजनात्पंचपंचते ॥ ३४ ॥

भा०टी०—और उनके एकएक भागको पुनर्वार चार भागमें विभक्त करके फिर एक २ सबमेंसे ले प्रत्येकमें मिलावे इस प्रकार यह अष्टमांश पंचीकरण लानेसे वह पंचपंच अंश युक्त हो एक एक स्थूल महाभूत होता है ॥ ३४ ॥

तत्कार्यंचविराड्देहःस्थूलदेहोऽयमात्मनः ॥
पंचभूतस्थसत्त्वांशैःश्रोत्रादीनांसमुद्भवः ॥ ३५॥

भा०टी०—इस पंचीकृत भूतपंचकका कार्य विराड् देह है वह परमेश्वरका स्थूलदेह कहागया है इन पचभूत-स्थित प्रत्येकके सत्त्वांशसे श्रोत्र (कान) त्वादि (त्वचाआदि) पंच ज्ञानेन्द्रियोंकी उत्पत्ति होती है ॥ ३५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्ञानेंद्रियाणांराजेंद्रप्रत्येकंमिलितैस्तुतैः ॥
अंतःकरणमेकंस्याद्वृत्तिभेदाच्चतुर्विधम्॥३६॥

भा०टी०—उक्त सम्पूर्ण ज्ञानेन्द्रियोंके प्रत्येकका सत्वांश मिलित होकर एक अन्तःकरण होता है यह अन्तःकरण वृत्तिभेदसे चार प्रकार हैं ॥ ३६ ॥

यदातुसंकल्पविकल्पकृत्यंतदाभवेत्तन्मनइत्यभिख्यम्। स्याद्बुद्धिसंज्ञंचयदाप्रवेत्तिसुनिश्चितं संशयहीनरूपम् ॥ ३७ ॥

भा०टी०—जब उसका संकल्प और विकल्पात्मक कार्य होता है तब उसको मन जब संशय विहीनरूपसे निश्चित ज्ञान रूप कार्य होता है तब उसको बुद्धि॥ ३७॥

अनुसंधानरूपंतच्चित्तंचपरिकीर्तितम् ॥
अहंकृत्यात्मवृत्त्यातुतदहंकारतांगतम् ॥ ३८ ॥

भा०टी०—जब अनुसंधानरूप वृत्ति होती है तब चित्त जब अहंकृतिस्वरूप आत्मवृत्तिसमन्वित होता है तब उसको अहंकार कहते हैं ॥ ३८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तेषांरजोंशैर्जातानिक्रमात्कर्मेंद्रियाणिच ॥
प्रत्येकंमिलितैस्तैस्तुप्राणोभवतिपंचधा ॥३९॥

भा०टी०—उन पंचभूतोंके प्रत्येक रज अंशसे वाक् पाणी पाद पायु (गुदा) और उपस्थनामक पंच कर्मेन्द्रियों की उत्पत्ति होती है उनमें प्रत्येकके सम्पूर्ण रज-अंशमिलित होकर प्राण अपान समान उदान और व्यान यह पंच प्राणवायु उत्पन्न होती हैं ॥ ३९ ॥

हृदिप्राणोगुदेपानोनाभिस्थस्तुसमानकः ॥
कंठदेशेप्युदानःस्याद्व्यानःसर्वशरीरिगः ॥ ४० ॥

भा०टी०—उनमें प्राणवायु हृदयमें, अपानवायु गुह्यमें, समानवायु नाभिस्थलमें, उदानवायु कण्ठमें और व्यानवायु समस्त शरीरमें व्याप्त होकर स्थिति करती है ॥ ४० ॥

ज्ञानेंद्रियाणिपंचैवपंचकर्मेंद्रियाणिच ॥
प्राणादिपंचकंचैवधियाचसहितंमनः ॥ ४१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—पंच ज्ञानेंद्रिय पंच कर्मेंद्रिय पंच वायु और बुद्धि तथा मन यह सत्रह पदार्थ मिलित होकर ॥४१॥

एतत्सूक्ष्मशरीरंस्यान्ममलिंगंयदुच्यते ॥
तत्रयाप्रकृतिः प्रोक्तासाराजन्विविधास्मृता४२॥

भा०टी०—मेरे सूक्ष्म शरीर अथवा लिंगदेहकी उत्पत्ति होती है, उसमें जो प्रकृति स्थिति करती है वह दो भागमें विभक्त है ॥ ४२ ॥

सत्त्वात्मिकातुमायास्यादविद्यागुणामाश्रिता ॥
स्वाश्रयंयातुसंरक्षेत्सामायेतिनिगद्यते ॥ ४३ ॥

भा०टी०—एक शुद्धसत्त्वात्मिक माया और दूसरी गुणमिश्रित मलिनसत्त्वप्रधान अविद्या कही जाती है जो स्वाश्रयको आवृत न करके रक्षा करती है वही माया-शब्दसे उक्त हुई है ॥ ४३ ॥

तस्यांयत्प्रतिबिंबंस्यात्बिंबभूतस्यचेशितुः ॥
सईश्वरःसमाख्यातः स्वाश्रयज्ञानवान्परः॥४४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—इस स्वाश्रयकी अव्यामोहकारिणी शुद्ध सत्त्व प्रधान मायामें परमात्माका जो प्रतिबिम्ब पडता है वही ईश्वरनामसे कहागया है शुद्धसत्त्वप्रधान माया तदाधारब्रह्मको आवरण न करनेके कारण यह स्वाश्रय ज्ञानवान् अर्थात् व्यापक ब्रह्मको जानती है और सर्वव्यापित्व हेतु तथा सर्वत्र इसके ज्ञानावरणके अभावहेतु इसको सर्वज्ञ कहा जाताहै और अचिन्त्य मायाशक्तिविशिष्ट होनेके कारण सर्वकर्ता और सम्पूर्ण जगत्का अनुग्रह करनेवाला कहा जाता है ॥ ४४ ॥

सर्वज्ञःसर्वकर्ताचसर्वानुग्रहकारकः॥
अविद्यायांतुयत्किंचित्प्रतिबिंबंनगाधिप ॥४५॥

भा०टी०—और मलिनसत्त्वप्रधान अविद्यामें परमात्माका जो प्रतिबिम्ब पडता है वह जीवनामसे अभिहित हुआ है ॥ ४५ ॥

तदेवजीवसंज्ञंस्यात्सर्वदुःखाश्रयंपुनः ॥
द्वयोरपीहसंप्रोक्तंदेहत्रयमविद्यया॥ ४६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—मलिनसत्त्वप्रधान अविद्या तदाश्रयरूप आनंद करनेके कारण यह जीव सर्वदुःखका आश्रय होता है उक्त जीव और ईश्वर दोनोंकेही अविद्या और विद्याद्वारा तीन देह होते हैं ॥ ४६ ॥

देहत्रयाभिमानाच्चाप्यभून्नामत्रयंपुनः ॥
प्राज्ञस्तुकारणात्मास्यात्सूक्ष्मदेहीतुतैजसः ४७॥

भा०टी०—इन तीनों देहके अभिमानहेतु तीन नाम हैं जीव कारणदेहाभिमानी होनेसे उसको प्राज्ञ सूक्ष्मदेहाभिमानी होनेसे तैजस ॥ ४७ ॥

स्थूलदेहीतुविश्वाख्यास्त्रिविधः परिकीर्तितः ॥
एवमीशोपिसंप्रोक्तईशसूत्रविराट्पदैः ॥ ४८ ॥

भा०टी०—और स्थूलदेहाभिमानी होनेसे विश्व कहा जाता है और ईश्वरभी कारणदेहाभिमानी होनेसे 'ईश' सूक्ष्मदेहाभिमानी होनेसे 'सूत्र' और स्थूलदेहाभिमानी होनेसे 'विराट्' नामसे अभिहित होता है ॥ ४८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रथमोव्यष्टिरूपस्तुसमष्ट्यात्मापरःस्मृतः ॥
साहिसर्वेश्वरःसाक्षाज्जीवानुग्रहकाम्यया ॥ ४९ ॥

भा०टी०—प्रथम जीव व्यष्टि देहत्रयाभिमानी और ईश्वर समष्टिदेहत्रयाभिमानी होता है, यह सर्वेश्वर निरन्तर आनन्दानुभवहेतु तृप्त होनेपरभी जीवके प्रति मोक्षलाभरूप अनुग्रह करनेकी इच्छासे ॥ ४९ ॥

करोतिविविधांविश्वंनानाभोगाश्रयंपुनः ॥
मच्छक्तिप्रेरितोनित्यंमयिराजन्प्रकल्पितः॥५०॥

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेदेवीगीतायांद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

भा०टी०—विविध भोगका आश्रयस्वरूप विश्वकी सृष्टि करता है. हे राजन् ! वह ईश्वरभी ब्रह्मरूपिणी मेरी माया शक्तिसे प्रेरित होकरही सम्पूर्ण विश्वकी सृष्टि करता है. क्योंकि मैं ब्रह्मरूपिणी हूं वह मुझमेंही रज्जु कल्पित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सर्पके समान कल्पित होरहा है अतएव उनको भी मेरी शक्तिके अधीन जानना चाहिये ॥ ५० ॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे देवीगीता-भाषाटीकायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः ३.

देव्युवाच।

मन्मायाशक्तिसंकल्पितंजगत्सर्वंचराचरम् ॥
सापिमत्तःपथङ्मायानास्त्येवपरमार्थतः ॥१॥

भा०टी०—देवीने कहा हे गिरिराज ! चराचरयुक्त यह सम्पूर्ण जगत् मेरीही मायाशक्तिद्वारा रचित होता है वह माया मुझमेंही कल्पित होती है किन्तु वास्तवमें वह माया मुझसे पृथक् नहीं है अतएव एकमात्र मैंही चिद्वस्तु हूं मेरे अतिरिक्त चिद्वस्तु अन्य कुछ नहीं है ॥ १ ॥

व्यवहारदृशासेयं विद्यामायेतिविश्रुता ॥
तत्त्वदृष्ट्यातुनास्त्येवतत्त्वमेवास्तिकेवलम्॥२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—व्यवहारदृष्टिसे वह माया विद्यादि स्वतन्त्र नामसे विख्यात होता है किन्तु तत्त्व अथवा ब्रह्मदृष्टिसे मायाकी विद्यमानता नहीं है केवल एकमात्र ब्रह्मही विद्यमान रहता है ॥ २ ॥

साऽहंसर्वंजगत्सृष्ट्वातदंतः प्रविशाम्यहम् ॥
मायाकर्मादिसहितागिरेप्राणपुरःसरा ॥ ३ ॥

भा०टी०—मैंही वह चिद्ब्रह्मरूपिणी अविद्या कर्म और अनेकप्रकार संस्कारयुक्त कूटस्थ ब्रह्मरूपसे सम्पूर्ण जगत्की सृष्टि करके भीतर चिदाभासरूपसे प्राणवायु आगे करके प्रवेश करती हूं ॥ ३ ॥

लोकांतरगतिर्नोचेत्कथंस्यादितिहेतुना ॥
यथायथाभवंत्येवमायाभेदास्तथातथा ॥ ४ ॥

भा०टी०—हे गिरिवर ! इस प्रकार मेरे प्राणस्वीकारपूर्वक प्रवेशन करनेपर लोकान्तरगमन जन्म और मरणादि व्यवहार किस प्रकार सिद्ध होसकते हैं? जिस प्रकार एकमात्र व्यापक महाकाश उपाधि भेदसे घटाकाश और मठाकाश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इत्यादि भिन्नभिन्न नामसे विख्यात होते हैं. इसीप्रकार मैं अनेक स्थलमें प्राण स्वीकार करके अविद्या और अन्तःकरणके प्रभेदके हेतु भिन्न भिन्न होतीहूं अतएव उसमेंही अनेक प्रकार भिन्न भिन्न जीवोंकी उत्पत्ति होती है ॥ ४ ॥

उपाधभेदाद्भिन्नाऽहं घटाकाशादयोयथा ॥
उच्चनीचादिवस्तूनिभासयन्भास्करःसदा॥ ५ ॥

भा०टी०—जिस प्रकार सूर्य स्वीय किरणसंयोगसे पृथ्वीकी सम्पूर्ण वस्तु प्रदीपितकरके भी दूषित नहीं होता इसीप्रकार मैं भी उत्कृष्ट और निकृष्ट सम्पूर्ण वस्तुके अन्तः प्रवेश हेतु दोष लिप्त नहीं होती ॥ ५ ॥

नदुष्यतितथैवाऽहंदोषैर्लिप्ताकदापिन ॥
मयिबुद्ध्यादिकर्तृत्वमध्यस्यैवाऽपरेजनाः॥ ६ ॥

भा०टी०मूढबुद्धि अज्ञानद्वारा बुद्ध्यादिनिष्ठ कर्तृत्व आत्मरूपिणी मुझमें आरोपित करके आत्माकोही कर्ता कहते हैं किन्तु बुद्धिमान् पांडितगण उसको स्वीकार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नहीं करते फलतः मैं जीवके भीतर कर्त्रीरूपसे न रहकर साक्षीरूपसे स्थिति करती हूँ ॥ ६ ॥

वदंतिचाऽऽत्माकर्मेतिविमूढानसुबुद्धयः ॥
अज्ञानभेदतस्तद्वन्मायायाभेदतस्तथा ॥ ७ ॥

भा०टी०—हे अचलेन्द्र ! अविद्या और विद्याके भेदहेतु जीवबहुत्व और ईश्वरबहुत्व प्रतिपादित होता है, फलतः मायाद्वारा ही मनुष्य पशु इत्यादि जीवभेद और ब्रह्मा, विष्णु इत्यादिमें ईश्वरभेद होता है ॥ ७ ॥

जीवेश्वरविभागश्चकल्पितोमाययैवतु ॥
घटाकाशमहाकाशविभागः कल्पितोयथा ॥८॥

भा०टी०—जिस प्रकार महाकाश घटावच्छिन्न होने-पर महाकाश और घटाकाश ऐसा विभाग कल्पित होता है इसी प्रकार व्यापक परमात्मा जीवावच्छिन्न होकर परमात्मा और जीवात्माका इस प्रकार भेद कल्पित होता है ॥ ८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथैवकल्पितोभेदोजीवात्मपरमात्मनोः ॥
यथाजीवबहुत्वंचमाययैवनचस्वतः ॥ ९ ॥

भा०टी०—जिस प्रकार जीवका बहुत्व मायाद्वारा कल्पित होता है स्वभावसे नहीं होता इसीप्रकार ईश्वरबहुत्वभी स्वभावसे नहीं होता मायाद्वाराही कल्पित होता है ॥ ९ ॥

तथेश्वरबहुत्वंचमाययानस्वभावतः ॥
देहेंद्रियादिसंघातवासनाभेदभेदिता ॥ १० ॥

भा०टी०—हे धरणीधर! देह इन्द्रिय और मन इत्यादिके भेदसे अविद्याही जीवके भेदका हेतु है अन्य कुछ नहीं है ॥ १० ॥

अविद्याजीवभेदस्यहेतुर्नान्यः प्रकीर्तितः ॥
गुणानांवासनाभेदभेदितायाधराधर ॥ ११ ॥

भा०टी०—और जो तीनों गुणकी वासनाभेदसे अर्थात् सात्त्विक राजस और तामस वासनाभेदसे मायाकीभी भिन्नता उत्पत्ति होती है ॥ ११ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मायासापरभेदस्यहेतुर्नान्यःकदाचन ॥
मयिसर्वमिदंप्रोतमोतंचधरणीधर ॥ १२ ॥

भा०टी०—वह विभिन्नमायाही ब्रह्मा विष्णु इत्यादि ईश्वरके भेदका कारण है नहीं तो और कुछ नहीं है; धराधरेन्द्र ! यह सम्पूर्ण जगत् ओत प्रोतभावसे मुझमेंही स्थित रहता है ॥ १२ ॥

ईश्वरोऽहंचसूत्रात्माविराडात्माऽहमस्मिच ॥
ब्रह्माऽहंविष्णुरुद्रौचगौरीब्राह्मीचवैष्णवी ॥१३॥

भा०टी—अतएव मैंहीं कारण देहाभिमानी ईश्वर लिंगदेहाभिमानी सूत्रात्मा हिरण्यगर्भ और स्थूल देहाभिमानी विराट् हूं मैं ही ब्रह्मा विष्णु महेश्वर और मैंही ब्राह्मी वैष्णवी और रौद्री शक्ति हूं ॥ १३ ॥

सूर्योऽहंतारकाश्चाऽहंतारकेशस्तथाऽस्म्यहम् ॥
पपशुपक्षिस्वरूपाऽहंचांडालोऽहंचतस्करः॥१४॥

भा०टी०—मैंही सूर्य मैंही चन्द्रमा मैंहीतारका और मैंही पशु पक्षी चाण्डाल और तस्कर हूँ ॥ १४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्याधोऽहंक्रूरकर्माऽहंसत्कर्माऽहंमहाजनः ॥
स्त्रीपुन्नपुंसकाकारोप्यहमेवनसंशयः ॥ १५ ॥

भा०टी०—मैंही क्रूरकर्मा व्याध और सत्कर्मा महाजन तथा मैंही स्त्री पुरुष और नपुंसक हूं इसमें सन्देह नहीं ॥ १५ ॥

यच्चकिंचित्क्वचिद्वस्तुदृश्यतेश्रूयतेऽपिवा ॥
अंतर्बहिश्चतत्सर्वंव्याप्याऽहंसर्वदास्थिता ॥ १६ ॥

भा०टी०—हे गिरिवर! जिस किस स्थानमें जो कोई वस्तु दिखाई देती अथवा सुनाई देती है मैं उस सम्पूर्ण वस्तुके भीतर और बाहर व्याप्त होकर सर्वदा स्थित रहती हूं ॥ १६ ॥

नतदस्तिमयात्यक्तंवस्तुकिंचिच्चराचरम् ॥
यद्यस्तिचेत्तच्छून्यंस्याद्वंध्यापुत्रोपमंहितत् ॥ १७ ॥

भा०टी०—मेरे विना चराचरकी कोई वस्तु विद्यमान नहीं है यदि कुछ है तो वह वन्ध्याके पुत्रकी समान निरर्थकहै ॥ १७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रज्जुर्यथासर्पमालाभेदैरेकाविभातिहि ॥
तथैवेशादिरूपेणभाम्यहंनात्रसंशयः ॥ १८ ॥

भा०टी०—जिस प्रकार एकमात्र रज्जु सर्प और माला-दिरूपसे प्रतिभात होती हैं इस प्रकार एकमात्र मैंही ब्रह्म-स्वरूपिणी मैंही ईश्वरादि रूपसे प्रतिभात होती हूं इसमें सन्देह नहीं है ॥ १८ ॥

अधिष्ठानातिरेकेणकल्पितंतन्नभासते ॥
तस्मान्मत्सत्तयैवैतत्सत्तावान्नान्यथाभवेत्॥१९॥

भा०टी०—क्योंकि यह कल्पित जगत् अधिष्ठान-सत्ताके अतिरिक्त हेतु प्रतिभात नहीं होता यह मेरी सत्ता द्वाराही सत्तावान् होता है नहीं तो अन्य किसी प्रकार सम्भव नहीं हो सकता ॥ १९ ॥

हिमालयउवाच ।

यथावदसिदेवेशिसमष्ट्यात्मवपुस्त्विदम् ॥
तथैवद्रष्टुमिच्छामियादिदेविकृपामयि ॥ २० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—हिमालयने कहा हे देवि ! यदि मेरे प्रति आपकी कृपा हो तो आपकी समष्ट्यात्मक अर्थात् सर्व-समष्टिरूप सर्वाभिमानी विराट्मूर्ति देखनेकी इच्छा करता हूं आप अनुग्रहकरके वह मुझको दिखाइये ॥ २० ॥

व्यासउवाच ।

इतितस्यवचःश्रुत्वासर्वेदेवाः साविष्णवः॥
ननंदुर्मुदितात्मानः पूजयंतश्चतद्वचः ॥ २१ ॥

भा०टी०—व्यासजीने कहा हे महाराज ! गिरिवरके यह वचन सुनकर विष्णु इत्यादि सम्पूर्ण देवताओंने प्रसन्नचित्त हो अत्यन्त मानसहित उनके उस वचनका अनुमोदन किया ॥ २१ ॥

अथदेवमतंज्ञात्वाभक्तकामदुघाशिवा ॥
अदर्शयन्निजंरूपंभक्तकामप्रपूरिणी ॥ २२॥

भा०टी०—अनन्तर भक्तोंकी वाञ्छा पूर्ण करनेवाली भक्तोंकी कामधेनु और कल्याणरूपिणी देवी भुव-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नेश्वरीने अपना रूप देखनेमें देवताओंको उत्सुक जान-कर अपना विराट्रूप दिखाया ॥ २२ ॥

अपश्यंस्तेमहादेव्याविराड्रूपंपरात्परम् ॥
द्यौर्मस्तकंभवेद्यस्यचंद्रसूर्यौचचक्षुषी ॥ २३ ॥

भा०टी०—वह महादेवीके उस विराट्रूपको देखनेलगे सम्पूर्ण ऊर्ध्वस्थित सत्यलोक उस विराट्रूपिणीका मस्तक चन्द्रमा और सूर्य उसकी दोनों आँखें ॥ २३ ॥

दिशःश्रोत्रेवचोवेदाः प्राणोवायुः प्रकीर्तितः ॥
विश्वहृदयमित्याहुः पृथिवीजघनंस्मृतम् ॥२४॥

भा०टी०—सम्पूर्ण दिशा श्रोत्र (कान) सम्पूर्ण वेद वाक्य, वायु उसका प्राण, विश्व उसका हृदय, पृथ्वी जघनस्थल ॥ २४ ॥

नभस्तलंनाभिसरोज्योतिश्चक्रमुरः स्थलम् ॥
महर्लोकस्तुग्रीवास्याज्जनोलोकोमुखंस्मृतम् २५

भा०टी०—नभस्थल अर्थात् भुवर्लोक नाभिसरोवर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्योतिष्कमण्डल उरःस्थल, महर्लोक ग्रीवा, जनलोक मुखमण्डल ॥ २५ ॥

तपोलोकोररादिस्तुसत्यलोकादधः स्थितः ॥
इंद्रादयोबाहवः स्युः शब्दश्रोत्रंमहेशितुः ॥ २६

भा०टी०—सत्यलोकके अधःस्थित तपोलोक उसका ललाटफलक, इन्द्रादि देवतायुक्त स्वर्गलोक उसकी बाहु शब्द उस महेश्वरीका श्रवणेन्द्रिय ॥ २६ ॥

नासत्यदस्रौनासेस्तोगंधोघ्राणंस्मृतोबुधैः ॥
मुखमग्निः समाख्यातोदिवारात्रीचपक्ष्मणी ॥२७

भा०टी०—दोनों अश्विनीकुमार उसके नासापुट, गन्ध घ्राणेन्द्रिय, मुखके भीतर अग्नि, दिन और रात उसके दोनों पक्षरूपसे प्रकाश पाते थे ॥ २७ ॥

ब्रह्मस्थानंभ्रुविजृम्भोऽप्यापस्तालुःप्रकीर्तिताः ॥
रसोजिह्वासमाख्यातायमोदंष्ट्राःप्रकीर्तिताः॥ २८

भा०टी०—और उनकी दोनों भौंहें चतुर्मुख ब्रह्मा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जीका स्थान, जल उसका तालु, रस उसकी जिह्वा, यमराज उनकी डाढें ॥ २८ ॥

दंताःस्नेहकलायस्यहासोमायाप्रकीर्तिता ॥
सर्गस्त्वपांगमोक्षःस्याद्व्रीडोध्वोष्ठोमहेशितुः ॥२९॥

भा०टी०—स्नेह विलास दाँत, माया उसका हास्य, ब्रह्माण्डसृष्टि उसका कटाक्ष, व्रीडा ऊर्ध्व ओष्ठ ॥२९॥

लोभःस्यादधरोष्ठोऽस्याधर्ममार्गस्तुपृष्ठभूः ॥
प्रजापतिश्चमेढ्रंस्याद्यः स्रष्टाजगतांतले ॥ ३० ॥

भा०टी०—लोभ अधर और अधर्म उसका पृष्ठभाग, जो जगतीतलमें सृष्टिकर्ता प्रजापति हैं वह उसका मेढ्र ३० ॥

कुक्षिः समुद्रागिरयोऽस्थीनिदेव्यामहेशितुः ॥
नद्योनाड्यःसमाख्याताव्रक्षाःकेशाःप्रकीर्तिताः ३१

भा०टी०—सम्पूर्ण समुद्र कुक्षि समस्त पर्वत उस महेश्वरीके अस्थिस्वरूप, समस्त नदियें नाडी और सम्पूर्ण वृक्ष उसके केशरूपसे प्रकाश पाते थे ॥ ३१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कौमार्य्यौवनजरावयोऽस्यागतिरुत्तमा ॥
बलाहकास्तुकेशाःस्युः संध्यंतेवाससीविभोः ॥३२॥

भा०टी–हे राजेन्द्र ! कौमार यौवन और जरा उसकी उत्तम गति, मेघसमूह उसका केशजाल, दोनों सन्ध्या उन परमप्रभुकी दोनों वस्त्रस्वरूप ॥ ३२ ॥

राजञ्छ्रीजगदंबायाश्चंद्रमास्तुमनः स्मृतः ॥
विज्ञानशक्तिस्तुहरीरुद्रोंतःकरणंस्मृतम् ॥३३॥

भा०टी–चन्द्रमा उस जगदम्बिकाका मन हरि उसकी विज्ञान शक्ति और रुद्र उसके अन्तःकरण ॥ ३३॥

अश्वादिजातयःसर्वाः श्रोणिदेशेस्थितविभोः ॥
अतलादिमहालोकाःकटयधोभागतांगताः॥ ३४ ॥

भा०टी०–अश्वादि सम्पूर्ण जीव उसके नितम्ब देश और अतलादि सम्पूर्ण महर्लोक उसके कटिदेशसे चरण-कमलोंतक स्थिति करते थे ॥ ३४ ॥

एतादृशंमहारूपंदृष्ट्वासुरपुंगवाः ॥
ज्वालामालासहस्राढ्यंलेलिहानंचजिह्वया॥३५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—देवतागण आश्चर्ययुक्त नेत्रोंसे जगदम्बिकाकी इस प्रकार मूर्ति देखने लगे उनकी उस मूर्तिसे सहस्र सहस्र ज्वालामाला निकलने लगीं जिह्वाद्वारा सम्पूर्ण जगत्का आस्वादन करने लगीं ॥ ३५ ॥

दंष्ट्राकटकटारावंवमंतंवह्निमक्षिभिः ॥
नानायुधधरंवीरंब्रह्मक्षत्रौदनंचयत् ॥ ३६॥

भा०टी०—दोनों दशनपंक्तियोंमें कटकटा शब्द होने लगा सम्पूर्णअक्षियोंसे अग्नि उद्गार आरम्भ हुआ हाथमें अनेक प्रकारके आयुध ब्राह्मण और क्षत्रिय उस घोरदर्शन वीरपुरुषके ओदनस्वरूप ॥ ३६ ॥

सहस्रशीर्षनयनंसहस्रचरणंतथा ॥
कोटिसूर्यप्रतीकाशंविद्युत्कोटिसमप्रभम् ॥३७॥

भा०टी०—उनकी उस मूर्तिमें अनेक मस्तक अनेक नेत्र और अनेक चरण थे जिनकी सीमा नहीं उस मूर्तिके देखनेका बोध होता था कि, एकवारही करोड़ सूर्य उदय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हुए हैं मानों अनेक विद्युन्माला एकत्र प्रकाशित होरहीं हैं ॥ ३७ ॥

भयंकरंमहाघोरंत्रदक्ष्णोस्त्रासकारकम् ॥
ददृशुस्तेसुराः सर्वेहाहाकारंचक्रिरे ॥ ३८ ॥

भा०टी०—महादेवीके वह महाभयंकर नेत्रभी मनको त्रास उत्पन्न करते थे इस प्रकार महादीर विराट्मूर्ति देख सम्पूर्ण देवतालोग भीत होकर हाहाकार करनेलगे ॥ ३८॥

विकंपमानत्रदयामूर्च्छामापुर्दुरत्ययाम् ॥
स्मरणंचगतंतेषांजगदंबेयमित्यपि ॥ ३९ ॥

भा०टी०—और उनका हृदय काँपनेलगा वह अत्यन्त मूर्च्छासे आक्रान्त होगये "यही हमारी पालनकरनेवाली जगदम्बिका है" यह ज्ञान एकवारही दूर होगया ॥ ३९ ॥

अथतेये स्थिता वेदाश्चतुर्दिक्षु महाविभोः ॥
बोधयामासुरत्युग्रंमच्छांतोमूर्च्छितान्सुरान् ४०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी—उस समय उन भुवनेश्वरीके चारोंओर जो सम्पूर्ण वेद स्थिति करते थे उन्होंने मूर्च्छासे उठायकर देवताओंको समझाया ॥ ४० ॥

अथतेधैर्यमालंब्यलब्ध्वाचश्रुतिमुत्तमाम् ॥
प्रेमाश्रुपूर्णनयनारुद्धकंठास्तुनिर्जराः ॥ ४१ ॥

भा०टी०—अनन्तर वह निर्जरगण अत्युत्तम श्रुति प्राप्त कर धैर्यअवलम्बनपूर्वक अन्तर्जनित बाष्पसे रुद्धकण्ठ हो ॥ ४१ ॥

देवाऊचुः।

बाष्पगद्गदयावाचास्तोतुंसमुपचक्रिरे ॥
अपराधंक्षमस्वांबपाहिदीनांस्त्वदुद्भवान् ॥४२॥

भा०टी०—प्रेमविगलित अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे गद्गदवचनद्वारा जगदम्बिकाका स्तव करनेलगे देवताओंने कहा हे मातः ! हम अत्यन्त दीन और आपसेही हम उत्पन्न हुए हैं आप हमारा अपराध क्षमा कीजिये ॥ ४२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कोपंसंहरदेवेशिसभयारूपदर्शनात् ॥
कातेस्तुतिःप्रकर्तव्यापामरैर्निजरोरिह ॥ ४३ ॥

भा०टी०—और हमारे प्रति कोप त्यागकीजिये, हम आपके इस रूपको देखनेसे अत्यन्त भीत हुए हैं हे देवि ! पामर अमरगण आपकी क्या स्तुति करैं ॥ ४३ ॥

स्वस्याप्यज्ञेयएवाऽसौयावान्यश्चस्वविक्रमः ॥
तदर्वाग्जायमानानांकथंसविषयोभवेत् ॥ ४४ ॥

भा०टी०—आप स्वयं जब कि, अपने पराक्रमकी सीमा करनेमें असमर्थ हैं तब हम आपके पीछे जन्म ग्रहण करके किस प्रकार उसको जानसकते हैं ॥ ४४ ॥

नमस्तेभुवनेशानिनमस्तेप्रणवात्मिके ॥
सर्ववेदांतसंसिद्धेनमोह्रींकारमूर्तये ॥ ४५ ॥

भा०टी०—हे प्रणवात्मिके भुवनेश्वरि ! हम आपको नमस्कार करतेहैं हे देवि ! सम्पूर्ण वेदान्तशास्त्रमें आपको प्रतिपादित किया है हम आपकी उसी ह्रींकारमूर्तिको नमस्कार करते हैं ॥ ४५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यस्मादग्निःसमुत्पन्नोयस्मात्सूर्यश्चचंद्रमाः ॥
यस्मादोषधयःसर्वास्तस्मैसर्वात्मनेनमः ॥४६॥

भा०टी०—जिनसे अग्नि सूर्य चन्द्रमा और जिनसे सम्पूर्ण औषधियें उत्पन्न हुई हैं उन्हीं सर्वात्मरूपिणीको नमस्कार है ॥ ४६ ॥

यस्माच्चिदेवाःसंभूताः साध्याःपक्षिणएवच ॥
पशवश्चमनुष्याश्चतस्मैसर्वात्मनेनमः ॥ ४७ ॥

भा०टी०—जिनसे सम्पूर्ण देवतागण साध्यगण पशुगण पक्षिगण और मनुष्यगण उत्पन्न हुए हैं हम उन्हीं सर्वात्मरूपिणी देवीके विराट्रूपको नमस्कार करते हैं ॥ ४७ ॥

प्राणापानौव्रीहियवोतपःश्रद्धाऋतंतथा ॥
ब्रह्मचर्यंविधिश्चैवयस्मात्तस्मैनमोनमः ॥ ४८ ॥

भा०टी०—जिनसे प्राण अपान व्रीहि यव तपस्या श्रद्धा सत्य ब्रह्मचर्य और सम्पूर्ण हितकर्तव्यतारूप विधि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्पन्न हुई है हम उन्हीं सर्वात्मिका महामायाकी महामूर्तिको नमस्कार करते हैं ॥ ४८ ॥

सप्तप्राणार्चिषोयस्मात्समिधःसप्तएवच ॥
होमाःसप्ततथालोकास्तस्मैसर्वात्मनेनमः॥४९॥

भा०टी०—जिनसे सप्त प्राण सप्त दीप्ति सप्त समाधि सप्त होम और सप्त लोक उत्पन्न हुएहैं हम उन्हीं सर्वस्वरूपिणीको नमस्कार करतेहैं ॥ ४९ ॥

यस्मात्समुद्रागिरयःसिंधवःप्रचरंतिच ॥
यस्मादोषधयःसर्वारसास्तस्मैनमोनमः॥ ५० ॥

भा०टी०—जिनसे सम्पूर्ण समुद्र सम्पूर्ण पर्वत समस्त नदी सम्पूर्ण औषधि और समस्त रस उत्पन्न हुए हैं हम उन्हीं भुवनेश्वरीकी विराट्मूर्तिको नमस्कार करतेहैं ॥ ५० ॥

यस्माद्यज्ञःसमुद्भूतो दक्षिायुपश्चदक्षिणाः ॥
ऋचोयजूंषिसामानितस्मैसर्वात्मनेनमः ॥५१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—जिनसे यज्ञ यूप और दक्षिणा एवं ऋक् यजु और सामवेद उत्पन्न हुए हैं हम महामायाके उस अखिल विश्वात्मक विराट्रूपको नमस्कार करते हैं॥५१॥

नमःपुरस्तात्पृष्ठेचनमस्तेपार्श्वयोर्द्वयोः ॥
अधऊर्ध्वंचतुर्दिक्षुमातर्भूयोनमोनमः ॥ ५२ ॥

भा०टी०—हे मातः महामाये! आपके पुरोभागमें नमस्कार आपके पृष्ठ भागमें नमस्कार आपके दोनों पार्श्वमें नमस्कार आपके ऊर्ध्वभागमें नमस्कार आपके अधोभागमें नस्कार और आपके चारोंओर वारंवार नमस्कार करते हैं ॥ ५२ ॥

उपसंहरदेवेशिरूपमेतदलौकिकम् ॥
तदेवदर्शयाऽस्माकंरूपंसुंदरसुंदरम् ॥ ५३ ॥

भा०टी०—हे देवि! आप अपने इस अलौकिक रूपको दूर करके अपना परम सुन्दर मनोहररूप हमको दिखाइये ॥ ५३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यासउवाच।

इतिभीतान्सुरान्दृष्ट्वाजगंदबाकृपार्णवा ॥
संहृत्यरूपंघोरंतद्दर्शयामाससुन्दरम् ॥ ५४ ॥

भा०टी०—व्यासजीने कहा हे राजन् ! करुणाकी अर्णवरूपिणी जगदम्बिकाने सुरगणोंको भीत देख अपना घोर विराट्रूप दूर करक परमसुन्दर भुवनमोहन पूर्वरूप दिखाया ॥ ५४ ॥

पाशांकुशवराभीतिधरंसर्वांगकोमलम् ॥
करुणापूर्णनयनंमंदस्मितमुखांबुजम् ॥ ५५ ॥

भा०टी—उनका सम्पूर्ण शरीर कोमल होगया उन्होंने एक हस्तमें पाश और एक हस्तमें अङ्कुशास्त्र धारण किया अपर दोनों हाथोंमेंसे एक हस्तमें वरदान और अन्य हस्त अभयदानभङ्गिमामें उद्यत था उनके नेत्र देख बोध होता था कि, मानो उनके एकवारही करुणारससे परिपूर्ण मुख कमलमें कुछेक हास्य विराजमान है ॥ ५५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दृष्ट्वातत्सुंदरंरूपंतदाभीतिविवर्जिताः ॥
शांतचित्ताःप्रणेमुस्तेहर्षगद्गदनिःस्वनाः ॥ ५६॥
इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे
देवीगीतायां तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

भा०टी०—देवतागण जगदम्बिकाकी इस प्रकार मूर्ति देखकर भयरहित हो शान्तचित्तसे हर्ष और गद्गद-शब्दपूर्वक प्रणाम करनेलगे ॥ ५६ ॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे देवीगीता
भाषाटीकायां तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः ४.

श्रीदेव्युवाच ।

क्वयूयंमदभाग्यावैक्वेदंरूपंमहाद्भुतम् ॥
तथापिभक्तवात्सल्यादीदृशंदर्शितंमया ॥ १ ॥

भा०टी०—श्रीदेवी बोली कहां—तो तुम मंदभाग्य और कहां यह मेरा अद्भुत रूप तौभी भक्तिवत्सलतासे तुमको मैंने यह रूप दिखाया है ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नवेदाध्ययनैर्यागैर्नदानैस्तपसेज्यया ॥
रूपंद्रष्टुमिदंशक्यंकेवलंमत्कृपांविना ॥ २ ॥

भा०टी–वेदाध्ययन योग दान तप यज्ञसे यह मेरा रूप नहीं दीखता इसमें केवल मेरी कृपाही कारण है ॥ २ ॥

प्रकृतंशृणुराजेन्द्रपरमात्माऽत्रजीवताम् ॥
उपाधियोगात्संप्राप्तःकर्तृत्वादिकमप्युत ॥ ३ ॥

भा०टी०–अब उसी प्रकृत विषयको श्रवणकरो जो परमात्मा उपाधियोगसे जीवताको प्राप्त और कर्तृआदि-पदसे व्यवहार किया जाता है ॥ ३ ॥

क्रियाःकरोतिविविधाधर्माधर्मैकहेतवः ॥
नानायोनीस्ततःप्राप्यसुखदुःखैश्चयुज्यते ॥४ ॥

भा०टी०–धर्म अधर्मके कारण अनेकप्रकारकी क्रिया करता है और यह जीव अनेकयोनियोंको प्राप्त होकर सुख दुःख भोगता है ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुनस्तत्संस्कृतिवशान्नानाकर्मरतःसदा ॥
नानादेहान्समाप्नोतिसुखदुःखैश्चयुज्यते ॥ ५ ॥

भा०टी०—फिर उन्हीं संस्कारोंके वशसे अनेकप्रकारके कर्मोंमें रत होता है, अनेक देहोंसे युक्त हो अनेक सुखदुःखको पाताहै ॥ ५ ॥

घटीयंत्रवदेतस्यनविरामः कदापिहि ॥
अज्ञानमेवमूलंस्यात्ततःकामःक्रियास्ततः ॥६॥

भा०टी०—घटीयंत्रके समान यह सदा विचरताही रहता है इसको कभी विश्राम नहीं मिलता, आजतक अनेकसृष्टि प्रलय हुई, पर इसका विराम न हुआ, इसका मूल अज्ञान है, इस अज्ञानसे इच्छा और उससे क्रिया होती है ॥ ६ ॥

तस्मादज्ञाननाशायततेनियतंनरः ॥
एतद्धिजन्मसाफल्यंयदज्ञानस्य नाशनम् ॥ ७ ॥

भा०टी०—इससे अज्ञान नाशके निमित्त क्रिया करनी चाहिये यही जन्मकी सफलता है ॥ ७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुरुषार्थसमाप्तिश्चजीवन्मुक्तदशापिच ॥
अज्ञाननाशनेशक्ताविद्यैवतुपटीयसी ॥ ८ ॥

भा०टी०—जो अज्ञाननाश कियाजाय "यो ह्यविदित्वात्मानमस्माँल्लोकात्प्रैति स कृपणः" इति श्रुतेः । पुरुषार्थकी समाप्ति जीवन्मुक्तकी दशाकी प्राप्ति और अज्ञाननाशनमें एक विद्याही समर्थ है ॥ ८ ॥

नकर्मतज्जंनोपास्तिर्विरोधाभावतोगिरे ॥
प्रत्युताशाज्ञाननाशेकर्मणानैवभाव्यताम् ॥ ९ ॥

भा टी०—हे पर्वतराज ! अज्ञानसे उत्पन्न कर्म अज्ञानसे उत्पन्न हुए कर्मके नाशमें समर्थ नहीं है, कारण कि इन दोनोंका परस्पर विरोध नहीं है. कर्मद्वारा अज्ञानके नाशकी आशा न करनी चाहिये ॥ ९ ॥

अनर्थदानिकर्माणिपुनःपुनरुशंतिहि ॥
ततोरागस्ततोद्वेषस्ततोनर्थोमहान्भवेत् ॥१०॥

भा०टी०—कारण कि, यह अनर्थके देनेवाले कर्म

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वारंवार प्रगट होते हैं फिर राग और फिर द्वेष इससे महाअनर्थ होता है ॥ १० ॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेनज्ञानंसंपादयेन्नरः ॥
कुर्वन्नेवेहकर्माणीत्यतःकर्माप्यवश्यकम् ॥११॥

भा०टी०—इस कारण सब प्रयत्नसे मनुष्यको ज्ञान सम्पादन करना चाहिये और "कुर्वन्नेवेह कर्माणि" इस श्रुतिसे कर्मकोभी सदा करना आवश्यक कहा है११॥

ज्ञानादेवाहिकैवल्यमतःस्यात्तत्समुच्चयः॥
सहायतांव्रजेत्कर्मज्ञानस्यहितकारिच ॥ १२ ॥

भा०टी०—तथा 'ज्ञानादेव हि कैवल्यम्' अर्थात् ज्ञानसेही मुक्ति होतीहै इनका समुच्चय इस प्रकार है कि ज्ञानके होनेमें कर्म सदा सहायक है ॥ १२ ॥

इतिकेचिद्वदंत्यत्रतद्विरोधान्नसंभवेत् ॥
ज्ञानाद्ध्रन्थिभेदःस्याद्ध्रंथौकर्मसंभवः ॥ १३ ॥

भा०टी०—इस प्रकार इस विषयमें कोई कहते हैं इस भांतिसे विरोध सम्भव नहीं होता. कारण कि, ज्ञानसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हृदयकी गांठ खुलती है और हृदयकी ग्रंथियें कर्म स्थि
है जहां ज्ञानके आगे कर्मकी भावना हो वहां ज्ञानकर्मका
समुच्चय कहना चाहिये ॥ १३ ॥

यौगपद्यंनसंभाव्यंविरोधात्तुततस्तयोः ॥
तमःप्रकाशयोर्यद्वद्यौगपद्यंनसंभवि ॥ १४ ॥

भा०टी०—इस कारण उन ज्ञान और कर्मका तम
और प्रकाशकी समान एकसाथ विरोध नहीं संभव हो
सकता, इस कारण यदि ज्ञान उत्पन्न न हो तो यावज्जीव
कर्मानुष्ठान करता रहै ॥ १४ ॥

तस्मात्सर्वाणिकर्माणिवैदिकानिमहामते ॥
चित्तशुद्ध्यंतमेवस्युस्तानिकुर्यात्प्रयत्नतः ॥१५॥

भा०टी०—हे महामते ! इस कारण जितने वैदिक
कर्म हैं वह सब चित्तशुद्धिके निमित्त हैं उनको यत्नपू
र्वक करना चाहिये चित्तशुद्धि होनेसे ज्ञान प्राप्त होक
ज्ञानी होगा ॥ १५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शमोदमास्तितितिक्षाचवैराग्यंसत्त्वसंभवः ॥
तावत्पर्यंतमेवस्युःकर्माणिननतःपरम् ॥ १६ ॥

भा०टी०—शम—अन्तर इंद्रियका निग्रह, दम-बाह्य इंद्रियोंका निग्रह, तितिक्षा-शीत उष्ण आदिका सहना, वैराग्य—दोनों लोकके फलमें विराग और अन्तःकरणकी शुद्धि जब तक यह प्राप्त न हो तबतक कर्म करता रहै; फिर कर्म करनेकी आवश्यकता नहीं ॥ १६ ॥

तदंतेचैवसंन्यस्यसंश्रयेद्गुरुमात्मवान् ॥
श्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठंचभक्त्यानिर्व्याजयापुनः ॥ १७ ॥

भा०टी०—ज्ञान होनेपर सब कुछ त्याग आत्मवान् गुरुका आश्रय करै वेदपाठी ब्रह्ममें निष्ठावाले वेदवेदांगके ज्ञातासे छल रहित भक्तिपूर्वक ॥ १७ ॥

वेदांतश्रवणंकुर्यान्नित्यमेवमतंद्रितः ॥
तत्त्वमस्यादिवाक्यस्यानित्यमर्थंविचारयेत् १८॥

भा०टी—सावधान हो नित्य वेदांत श्रवण करै और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'तत्त्वमसि' इत्यादि वाक्योंका नित्यही अर्थ विचारता रहै ॥ १८ ॥

तत्त्वमस्यादिवाक्यंतुजीवब्रह्मैक्यबोधकम् ॥
ऐक्येज्ञातेनिर्भयस्तुमद्रूपोहिप्रजायते ॥ १९ ॥

भा०टी०—"तत्त्वमसि" इत्यादि वाक्य जीव और ईशकी एकताबोधक हैं. इनकी एकता जानकर यह निर्भय होकर मेरा रूप होजाता है ॥ १९ ॥

पदार्थावगतिःपूर्ववाक्यार्थावगतिस्ततः॥
तत्पदस्यचवाक्यार्थोगिरेऽहंपरिकीर्तितः ॥२०॥

भा०टी०—पहले पदार्थका ज्ञान फिर वाक्यार्थका ज्ञान करै. हे पर्वतराज ! 'तत्' पदका अर्थ षड्गुणऐश्वर्य सम्पन्न मैं हूं ॥ २० ॥

त्वंपदस्यचवाच्यार्थोजीवएवनसंशयः ॥
उभयोरैक्यमसिनापदेनप्रोच्यतेबुधैः ॥ २१ ॥

भा०टी०—और 'त्वं' पदका वाच्यार्थ निःसन्देह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जीव है; 'असि' पदसे दोनों जीव ईश्वरकी एकता ज्ञात होती है अर्थात् वही तू है ॥ २१ ॥

वाच्यार्थयोर्विरुद्धत्वादैक्यंनैवघटेतह ॥
लक्षणाऽतःप्रकर्तव्यातत्त्वमोःश्रुतिसंस्थयोः॥२२॥

भा०टी०—यदि कहो कि, अत्यन्त विरुद्ध धर्मवाले जीवेश्वरकी एकता किस प्रकार होसकती है ? तो भागलक्षणासे कहते हैं आशय यह कि, जब वाच्यार्थ विरुद्ध होनेसे दोनोंकी एकता न घटे तो उसमें लक्षणा करनी चाहिये जीवके असर्वज्ञत्व और परिच्छिन्नत्व आदि निकृष्ट धर्म हैं ईश्वरकी सर्वज्ञता व्यापकताआदि उत्कृष्ट धर्म हैं तब इनका अभेद कैसे हो ? इस पर श्रुतिसम्मत 'तत्, त्वं' पदकी लक्षणा करनी चाहिये ॥ २२ ॥

चिन्मात्रंतुतयोर्लक्ष्यंतयोरैक्यस्यसम्भवः ॥
तयोरैक्यंतथाज्ञात्वास्वाभेदेनाद्वयोभवेत्॥२३॥

भा०टी०—किस अर्थमें लक्षणा करनी चाहिये, तब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कहते हैं कि; चिन्मात्रमें लक्षणा होती है, सर्वज्ञत्वादिवि-
शिष्ट ब्रह्मचैतन्य ईश्वर है असर्वज्ञत्वादिविशिष्ट ब्रह्मचैतन्य
जीव है इनमें दोनों धर्म छोडकर चिन्मात्र भागत्यागलक्ष-
णासे ग्रहण करना, इस प्रकार लक्षणासे दोनोंकी एकता
होगी अपने अभेदसे इनकी एकताका ज्ञान होनेसे अद्वय
होगा यह इसका महाफल है ॥ २३ ॥

देवदत्तः सएवाऽयमितिवल्लक्षणास्मृता ॥
स्थूलादिदेहरहितोब्रह्मसंपद्यतेनरः ॥ २४ ॥

भा०टी०—वही यह देवदत्त है इस वाक्यसे तत्का-
लविशिष्ट देवदत्तका इस कालविशिष्ट देवदत्तसे भेद होनेपर
भी वैशिष्ट्य रूप दोनों धर्मके त्यागसे अविरुद्ध व्यक्तिको
भागत्यागलक्षणासे ग्रहणकर अभेद किया जाता है इसी
प्रकार लक्षणा ग्रहण की है इस अनुभवसे स्थूलादिदेह
रहित हो यह ब्रह्मभावको प्राप्त होता है ॥ २४ ॥

पंचीकृतमहाभूतसंभूतः स्थूलदेहकः ॥
भोगालयोजराव्याधिसंयुतः सर्वकर्मणाम् ॥ २५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—पंचीकृतमहाभूतसेही यह स्थूलदेह प्रगट हुआ है, यह भोगका स्थान जरा व्याधि तथा सब कर्मोंसे युक्त है ॥ २५ ॥

मिथ्याभूतोऽयमाभातिस्फुटंमायामयंत्वतः ॥
सोऽयंस्थूलउपाधिः स्यादात्मनोमेनगेश्वर ॥२६॥

भा०टी०—यह मिथ्या भी है परन्तु मायासे सत्यसा दीखता है, हे पर्वतराज ! यह मेरे आत्माकी स्थूलउपाधि है ॥ २६ ॥

ज्ञानकर्मेंद्रिययुतंप्राणपंचकसंयुतम् ॥
मनोबुद्धियुतंचैतत्सूक्ष्मंतत्कवयोविदुः ॥ २७ ॥

भा०टी०—ज्ञानकर्मेन्द्रियसे युक्त प्राणपंचकसे संयुक्त तथा मनबुद्धिसे युक्त देह सूक्ष्म उपाधि है ॥ २७ ॥

अपंचीकृतभूतोत्थंसूक्ष्मदेहोऽयमात्मनः ॥
द्वितीयोऽयमुपाधिःस्यात्सुखादेरवबोधकः ॥२८॥

भा०टी०—अपंचीकृत भूतोंसे प्रगट यह आत्माका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूक्ष्म देह है, यह अन्तःकरणकी सुखदुःखादि अ
बोधक दूसरी उपाधि है ॥ २८ ॥

अनाद्यनिर्वाच्यमिदमज्ञानंतुतृतीयकः ॥
देहोऽयमात्मनोभातिकारणात्मानगेश्वर ॥२९॥
भा०टी०—हे नगेश्वर ! अनादि अनिर्वाच्य अज्ञा
युक्त यह कारणशरीर तीसरा है ॥ २९ ॥

उपाधिविलयेजातेकेवलात्मावशिष्यते ॥
देहत्रयेपंचकोशाअंतःस्थाःसंतिसर्वदा ॥ ३० ॥
भा०टी०—इन स्थूलसूक्ष्मकारण उपाधियोंके ली
होनेमें केवल आत्मा अवशेष रहता है, इन तीनों देहों
अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय य
पाँच कोश सदा अन्तरास्थित रहते हैं ॥ ३० ॥

पंचकोशपरित्यागेब्रह्मपुच्छंहिलभ्यते ॥
नेतिनेतीत्यादिवाक्यैर्ममरूपंयदुच्यते ॥ ३१ ॥
भा०टी०—इन पंचकोशके त्यागमें 'ब्रह्म पुच्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रतिष्ठा' ब्रह्ममें प्रतिष्ठा प्राप्त होती है जो नेति २ इत्यादि वाक्यों से मेरारूप कहा जाता है ॥ ३१ ॥

नजायतेम्रियतेतत्कदाचिन्नाऽयंभूत्वानभूव
काश्चित् ॥ अजोनित्यःशाश्वतोऽयंपुराणो
नहन्यतेहन्यमानेशरीरे ॥ ३२ ॥

भा०टी०—यह ब्रह्मरूप न कभी उत्पन्न होता न मरता, न कभी होनेवाला और न कभी हुआ है यह अज नित्य शाश्वत पुरातन छहों विकारोंसे रहित है शरीरके हन्यमान होनेपरभी मरता नहीं हन्यमान नहीं होता॥ ३२॥

हतंचेन्मन्यतेहंतुंहतश्चेन्मन्यतेहतम् ॥
उभौतौनाविजानीतोनाऽयंहंतिनहन्यते ॥ ३३ ॥

भा०टी०—जो मारनेवाला मारा ऐसा जानता है हत हुआ अपनेको हत मानता है यह दोनोंही इसको नहीं जानते कारण कि, न यह मरता न माराजाता है॥ ३३॥

अणोरणीयान्महतोमहीयानात्मास्यजंतोर्नि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हितोगुहायाम् । तमक्रतुःपश्यतिवीतशोको
धातुःप्रसादान्महिमानमस्य ॥ ३४ ॥

भा०टी०—नासिकाके अभ्यन्तर फिरनेवाले प्राण अपानको समानकर विषयादिकी होकरभी इस प्राणीके हृदयरूपी गुहा वा बुद्धिमें स्थित है. इस आत्माकी महिमाको चित्तकी निर्मलता संकल्पविकल्परहित होनेसे जानता है तब वीतशोक होता है ॥ ३४ ॥

आत्मानंरथिनंविद्धिशरीरंरथमेवतु ॥
बुद्धिंतुसारथिंविद्धिमनः प्रग्रहमेवच ॥ ३५ ॥

भा०टी०—आत्मा रथी, शरीर रथ, बुद्धि सारथि, मन लगाम ॥ ३५ ॥

इंद्रियाणिहयानाहुर्विषयांस्तेषुगोचरान् ॥
आत्मेंद्रियमनोयुक्तंभोक्तेत्याहुर्मनीषिणः॥ ३६॥

भा०टी०—इन्द्रिय घोडेहैं यह विषयरूपी मार्गमें निरन्तर गमन करते हैं, आत्मा चिदाभास, इन्द्रिय मन यह तीन कूटस्थ मिलित होकर भोक्ता कहा जाता है॥ ३६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यस्त्वविद्वान्भवतिचाऽमनस्कश्चसदाऽशुचिः ॥
नतत्पदमवाप्नोतिसंसारंचाधिगच्छति ॥ ३७ ॥

भा०टी०—जो पुरुष अविद्वान् अर्थात् अविवेकी होता है अस्वाधीन अशुचि होता है वह तत्पदको प्राप्त न होकर संसारमें पडता है ॥ ३७ ॥

यस्तुविज्ञानवान्भवतिसमनस्कःसदाशुचिः ॥
सतुतत्पदमाप्नोतियस्माद्भूयोनजायते ॥ ३८ ॥

भा०टी०—और जो विज्ञानवान् स्वाधीन मन सदा पवित्र होता है वह उस पदको प्राप्त होता है जहां फिरसे आना नहीं होता ॥ ३८ ॥

विज्ञानसारथिर्यस्तुमनःप्रग्रहवान्नरः ॥
सोऽध्वनःपारमाप्नोतिमदीयंयत्परंपदम्॥ ३९ ॥

भा०टी०—जिसका विज्ञान सारथि मनकी लगाम रोके हुए है वह इस संसारके पार हो मेरे परमपदको प्राप्त होता है ॥ ३९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इत्थंश्रुत्याचमत्याचनिश्चित्यात्मानमात्मना ॥
भावयेन्मामात्मरूपांनिदिध्यासनतोऽपिच ४०॥

भा०टी०--इस प्रकार श्रुति बुद्धिद्वारा आत्मासेही आत्माका निश्चय कर विक्षेपादिरहित हो साक्षात्कार होनेसे चित्तकी एकाग्र वृत्तिसे आत्मरूप मेरा ध्यान करे ४०

योगवृत्तेःपुरास्वस्मिन्भावयेदक्षरत्रयम् ॥
देवीप्रणवसंज्ञस्यध्यानार्थंमंत्रवाच्ययोः ॥ ४१ ॥

भा०टी०--इस प्रकार निदिध्यासन अभ्याससे जब चित्तमें समाधिकी योग्यता होजाय तब समाधिसे पहले अपने शरीरमें प्रणवसंज्ञक मायाबीजमंत्रके तीन अक्षरोंका ध्यान करै, मंत्रवाच्य मायाबीजमंत्रार्थके समष्टि व्यष्टिके ध्यानार्थ है ॥ ४१ ॥

हकारःस्थूलदेहःस्याद्रकारस्सूक्ष्मदेहकः ॥
ईकारःकारणात्मासौहींकारोऽहंतुरीयकम् ४२।

भा०टी-हकार स्थूलदेह रकार सूक्ष्मदेह ईका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कारण देहरूप है और मैं जो तुरीयरूप हूँ सोई ह्रींकार है ॥ ४२ ॥

एवंसमष्टिदेहेऽपिज्ञात्वाबीजत्रयंक्रमात् ॥
समष्टिव्यष्ट्योरेकत्वंभावयेन्मतिमान्नरः ॥ ४३॥

भा०टी०—जैसे व्यष्टिदेहमें भावना की है इसीप्रकार समष्टिदेहसे क्रमसे तीनों बीजोंको जानकर बुद्धिमान् समष्टिव्यष्टि पिण्ड और ब्रह्माण्डकी एकता ध्यान करै ४३॥

समाधिकालात्पूर्वंतुभावयित्वैवमादृतः ॥
ततोध्यायेन्निलीनाक्षोदेवींमांजगदीश्वरीम्॥४४॥

भा०टी०—इस प्रकार आदरपूर्वक समाधिसे पहले ध्यान कर नेत्र मूँद मुझ जगदीश्वरीका ध्यान करै॥४४॥

प्राणापानौसमौकृत्वानासाभ्यंतरचारिणौ ॥
निवृत्तविषयाकांक्षोवीतदोषोविमत्सरः ॥ ४५ ॥

भा०टी०—नासिकाके अभ्यन्तर फिरनेवाले प्राण अपानको समानकर विषयादिकी आकांक्षासे निवृत्त हुआ दोष और मत्सरतासे रहित ॥ ४५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भक्त्यानिर्व्याजयायुक्तोगुहायांनिःस्वनेस्थले ॥
हकारंविश्वमात्मानंरकारेप्रविलापयेत् ॥ ४६ ॥

भा०टी०—छलरहित भक्तिसे युक्त हुआ गुह्य वा शब्द रहित एकान्त स्थानमें वैश्वानरात्मक हकारको रकारमें लीन करै अर्थात् हकारवाच्य स्थूल देहको रकारवाच्य सूक्ष्मदेहमें लीन करै ॥ ४६ ॥

रकारंतैजसंदेवमीकारेप्रविलापयेत् ॥
ईकारंप्राज्ञमात्मानंहींकारेप्रविलापयेत् ॥ ४७ ॥

भा०टी०—रकावाच्य तैजस अर्थात् सूक्ष्मदेहको ईकारवाच्य कारण देहमें लय करै ईकारवाच्य कारणदेहको हींकारवाच्य ब्रह्ममें लय करै ॥ ४७ ॥

वाच्यवाचकताहीनंद्वैतभाववर्जितम् ॥
अखंडंसच्चिदानंदंभावयेत्तच्छिखांतरे ॥ ४८ ॥

भा०टी०—जब वाच्य और वाचकतासे हीन, द्वैतभावसे वर्जित होजाय तब चैतन्य अग्नि दीपशिखान्तरमें अखंड सच्चिदानंदकी भावना करै ॥ ४८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इतिध्यानेनमांराजन्साक्षात्कृत्यनरोत्तमः ॥
मद्रूपएवभवतिद्वयोरप्येकतायतः ॥ ४९ ॥

भा०टी०—हे राजन् ! इस प्रकार नरोत्तम ध्यानमें मेरा साक्षात्कार करके मेराही रूप होजाता है कारण कि दोनोंका एकता सिद्ध है ॥ ४९ ॥

योगयुक्त्याऽनयाद्द्राक्षामात्मानंपरात्परम् ॥
अज्ञानस्यसकार्यस्यतत्क्षणेनाशकोभवेत् ॥५०॥

इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधे
देवीगीतायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

भा०टी०—इस प्रकार इस योगेयुक्तिसे परात्पर मुझ आत्माको देखतेही अपने कार्यसहित अज्ञान उसीसमय नष्ट होजाता है ॥ ५० ॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे देवीगीता
भाषाटीकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDP

अथ पञ्चमोऽध्यायः।

हिमालयउवाच।

योगंवदमहेशानिसांगंसंवित्प्रदायकम् ॥
कृतेनयेनयोग्योऽहंभवेयंतत्त्वदर्शने ॥ १ ॥

भा०टी०—हिमालयने कहा, हे महेश्वरि ! जिस योगद्वारा ब्रह्मलाभ होता है उस योगका विषय अंगोंसहित वर्णन करो जिसका अनुष्ठान कर मैं तत्त्वदर्शनका अधिकारी होऊं ॥ १ ॥

श्रीदेव्युवाच।

नयोगोनभसः पृष्ठेनभूमौनरसातले ॥
ऐक्यंजीवात्मनोराहुर्योगंयोगविशारदाः ॥ २ ॥

भा०टी—श्रीदेवी बोली, आकाश भूमि रसातलादिस्थानोंमें योग नहीं है जीव और आत्माकी अभेदविषयक चित्तवृत्तिकोही योगविशारद योग कहते हैं॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तत्प्रत्यूहाःषडाख्यातायोगविघ्नकरानघ ॥
कामक्रोधौलोभमोहौमदमात्सर्यसंज्ञकौ ॥ ३ ॥

भा०टी०—हे पापरहित! काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य यह छः योगके शत्रु हैं जो इसमें विघ्न किया करते हैं ॥ ३ ॥

योगांगैरेवमित्त्वात्यान्योगिनोयोगमाप्नुयुः ॥
यमंनियममासनप्राणायामौततःपरम् ॥ ४ ॥

भा०टी०—इस कारण योगियोंको आगे लिखे योगके अंगोंसे योगशत्रुओंको विनाश करके योग प्राप्त करना चाहिये यम, नियम, आसान, प्राणायाम ॥ ४ ॥

प्रत्याहारंधारणाख्यंध्यानंसाधंसमाधिना ॥
अष्टांगान्याहुरेतानियोगिनांयोगसाधने ॥ ५ ॥

भा०टी०—प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि यह आठ अंग योगियोंको योगमें सहायक हैं ॥ ५ ॥

अहिंसासत्यमस्तेयंब्रह्मचर्यंदयार्जवम् ॥
क्षमाधृतिर्मिताहारःशौचंचेतियमादश ॥ ६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDP

भा०टी०—किसीकी हिंसा न करना, सत्य बोलना, चोरी न करना, ब्रह्मचर्य, दया, ऋजुता, क्षमा, धृति, सर्वनाशमें भी धीरता, मितभोजन दो भाग अन्नसे पूर्ण करै, एकभाग जलसे, चौथा भाग वायुके गमनागमनको रक्खे, यह अल्पाहार है. तथा बाह्य आभ्यन्तरकी शुद्धि करै यह दश यम हैं ॥ ६ ॥

तपः संतोषआस्तिक्यंदानंदेवस्यपूजनम् ॥
सिद्धांतश्रवणंचैवह्रीर्मतिश्चजपोहुतम् ॥ ७ ॥

भा०टी०—तपस्या, सन्तोष, आस्तिक्य, वेद, (देव, द्विज और गुरुमें विश्वास) दान, देवपूजा, सिद्धान्त अर्थात् वेदान्त वाक्यका श्रवण, अकार्यकरनेमें लज्जा मति (सत्कर्म और सच्छास्त्रविषयक ज्ञान) जप और नित्यहोमादि ॥ ७ ॥

दशैतेनियमाःप्रोक्तामयापर्वतनायक॥
पद्मासनंस्वस्तिकंचभद्रंवज्रासनंतथा ॥ ८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—हे पर्वतनायक ! यह मैंने दश नियम कहे हैं. पद्मासन, स्वस्तिक, भद्र, वज्रासन ॥ ८ ॥

वीरासनमितिप्रोक्तंक्रमादासनपंचकम् ॥
ऊर्वोरुपरिविन्यस्यसम्यक्पादतलेशुभे ॥ ९ ॥

भा०टी—और वीरासन यह क्रमसे पाँच आसन कहेहैं. दोनों पैरोंके तलुए दोनों जंघाओंपर रखकर॥९॥

अंगुष्ठौचनिबध्नीयाद्धस्ताभ्यांव्युत्क्रमात्ततः ॥
पद्मासनमितिप्रोक्तंयोगिनांहृदयंगमम् ॥ १० ॥

भा०टी०—हाथोंको पीठकी ओरसे ले आगे दहिने हाथसे दाहिने चरणका बाँयेंसे बांये चरणका अँगूठा पकडै यह योगियोंको प्रसन्नकरनेवाला पद्मासन कहा है॥१०॥

जानूर्वोरंतरेसम्यक्कृत्वापादतलेशुभे ॥
ऋजुकायोविशेद्योगीस्वस्तिकंतत्प्रचक्षते ॥११॥

भा०टी०—जानु और ऊरुओंके अन्तर दोनों पैरके तलुवे भलीभांति स्थापितकर सरलभावसे सुखपूर्वक बैठनेको स्वस्तिक आसन कहते हैं ॥ ११ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सीवन्याःपार्श्वयोर्न्यस्यगुल्फयुग्मंसुनिश्चितम् ॥
वृषणाधः पादपार्ष्णीपार्ष्णिभ्यांपरिबंधयेत् ॥ १२॥

भा०टी०—अंडकोशकी शिराके नीचे सीमनके दोनों पार्श्वमें दोनों गुल्फोंको भलीप्रकार स्थापित कर दोनों हाथोंसे अंडकोशके अधोभागमें दोनों पैरोंका पार्ष्णिभाग हाथोंसे दृढभावसे बाँधकर ॥ १२ ॥

भद्रासनमितिप्रोक्तंयोगिभिःपरिपूजितम् ॥
ऊर्वोःपादौक्रमान्न्यस्यजान्वोःप्रत्यङ्मुखांगुली १३॥

भा०टी०—बैठनेका नाम योगियोंने भद्रासन कहा है योगी इसका विशेष आदर करते हैं दोनों चरण क्रमसे दोनों ऊरुओंपर रखकर दोनों जानुओंके निम्नभागमें अंगुली रखकर ॥ १३ ॥

करौविदध्यादाख्यातंवज्रासनमनुत्तमम् ॥
एकंपादमधःकृत्वाविन्यस्योरुतथोत्तरे ॥ १४ ॥

भा०टी०—दोनों हाथ स्थापनकर बैठनेको वज्रासन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कहते हैं योगीजन एक ऊरुके नीचे एक चरण दूसरी ऊरुके नीचे दूसरा पद स्थापनकर ॥ १४ ॥

ऋजुकायोविशेद्योगीवीरासनमितीरितम् ॥
इडयाकर्षयेद्वायुंबाह्यंषोडशमात्रया ॥ १५ ॥

भा०टी—सरल कायासे जो स्थिति करते हैं इसको बीरासन कहते हैं योगका ज्ञाता प्रथम सोलह वार प्रणव उच्चारण करके इडा अर्थात् बांई नासिकाद्वारा गुह्य वायुको आकर्षण करै ॥ १५ ॥

धारयेत्पूरितंयोगीचतुःषष्ट्यातुमात्रया ॥
सुषुम्नामध्यगंसम्यग्द्वात्रिंशन्मात्रयाशनैः ॥ १६ ॥

भा०टी०—फिर जितनी देरमें चौंसठ वार प्रणव उच्चारण हो उतने समयतक यह खैंची हुई वायु धारण करके पूरक करै फिर ३२ वार प्रणवोच्चारणकालमें शनैः शनैः सुषुम्नामध्यगत वायुको ॥ १६ ॥

नाड्यापिंगलयाचैवरेचयेद्योगवित्तमः ॥
प्राणायाममिमंप्राहुर्योगशास्त्रविशारदाः ॥ १७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०--दक्षिणनासापुटद्वारा रेचन करै योगशास्त्र ज्ञाता पंडितोंने इसका नाम प्राणायाम कहा है ॥ १७ ॥

भूयोभूयःक्रमात्तस्यबाह्यमेवंसमाचरेत् ॥
मात्रावृद्धिःक्रमेणैवसम्यग्द्वादशषोडश ॥ १८ ॥

भा०टी०--इस प्रकार वारंवार बाह्य वायु ग्रहण करके पूरक कुंभक और रेचकका अभ्यास करै और क्रमानुसार प्रणवोच्चारणकी संख्या बढावै यह प्राणायाम पहले १२ वार फिर १६ वार और फिर क्रमसे और भी अधिक करै ॥ १८ ॥

जपध्यानादिभिःसार्धंसगर्भंतंविदुर्बुधाः ॥
तदपेतंविगर्भंचप्राणायामंपरेविदुः ॥ १९ ॥

भा०टी०--सगर्भ और अगर्भके भेदसे प्राणायाम दो प्रकारका है इष्ट मंत्रके जप ध्यानादिपूर्वक जो प्राणायाम कियाजाता है वह सगर्भ है और जो प्राणायाम इष्ट-मंत्रके जप ध्यानादिविना होता है वह विगर्भ प्राणायाम है ॥ १९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्रमाद्भ्यस्यतःपुंसोदेहेस्वेदोद्गमोधमः ॥
मध्यमःकंपसंयुक्तोभूमित्यागःपरोमतः ॥ २० ॥

भा०टी०—इस प्रकार क्रमसे प्राणायामका अभ्यास करते २ देहमें पसीना आनेसे वह प्राणायाम अधम, कम्प उत्पन्न होनेसे मध्यम और जिस प्राणायाममें साधक भूमि त्यागकर ऊंचा उठता है वह उत्तम प्राणायाम है ॥ २० ॥

उत्तमस्यगुणावाप्तिर्यावच्छीलनमिष्यते ॥
इंद्रियाणांविचरतांविषयेषुनिरर्गलम् ॥ २१ ॥

भा०टी०—जबतक उत्तम प्राणायामका फल लाभ न हो तबतक अभ्यास करता रहै इन्द्रिय सदाही अपने २ विषयोंमें अबाधित भावसे विचरण करती हैं ॥ २१ ॥

बलादाहरणंतेभ्यःप्रत्याहारोभिधीयते ॥
अंगुष्ठगुल्फजानूरुमूलाधारलिंगनाभिषु ॥ २२॥

भा०टी०—उनको विषयोंसे बलपूर्वक रोकनेहीका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाम प्रत्याहार है, अँगुठा, गुल्फ, जानु, ऊरु, मूलाधार, लिंग, नाभि ॥ २२॥

हृद्ग्रीवाकंठदेशेषुलंबिकायांततोनसि ॥
भ्रूमध्येमस्तकेमूर्ध्निद्वादशांतेयथाविधि ॥ २३ ॥

भा०टी०—हृदय, ग्रीवा, कंठ, लम्बिका, नासिका, भ्रूमध्य, मस्तक मूर्धा (ब्रह्मरंध्र) इन द्वादशान्त स्थानमें विधिपूर्वक ॥ २३ ॥

धारणंप्राणमरुतोधारणेतिनिगद्यते ॥
समाहितेनमनसाचैतन्यांतरवर्तिना ॥ २४ ॥

भा०टी०—प्राणवायुको रोक रखनेका नाम धारणा है प्रथम ध्यानसे अन्तःकरणको चैतन्यवर्ती अर्थात् आत्मवर्ती करके ॥ २४ ॥

आत्मन्यभीष्टदेवानांध्यानंध्यानमिहोच्यते ॥
समत्वभावनानित्यंजीवात्मपरमात्मनोः ॥२५॥

भा०टी०—उसमें अभीष्ट देवताके चिन्तनका नाम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ध्यान है. जीवात्मा और परमात्माकी एकता भावना संप्रज्ञात समाधिको ॥ २५ ॥

समाधिमाहुर्मुनयःप्रोक्तमष्टांगलक्षणम् ॥
इदानींकथयेतेऽहंमत्रयोगमनुत्तमम् ॥ २६ ॥

भा०टी०—मुनियोंने समाधि कहा है. यह अष्टांग लक्षणवाला योग तुमसे वर्णन किया अब मंत्रोंका सिद्धिदायक अति उत्कृष्टयोग तुमसे वर्णन करती हूं ॥ २६ ॥

विश्वंशरीरमित्युक्तंपञ्चभूतात्मकंनग ॥
चंद्रसूर्याग्नितेजोभिर्जीवब्रह्मैक्यरूपकम् ॥२७॥

भा०टी०—हे पर्वतराज ! पिण्ड और ब्रह्माण्डकी एकता होनेसे यह शरीर विश्व वा ब्रह्माण्ड कहा जाता है. यह पंचभूतात्मक चन्द्र सूर्य और अग्निसे युक्त होकर जीव ब्रह्मके ऐक्यज्ञानदायक होताहै ॥ २७ ॥

तिस्रःकोट्यस्तदर्धेनशरीरेनाडयोमताः ॥
तासुमुख्यादशप्रोक्तास्ताभ्यस्तिस्रोव्यवस्थिताः २८

भा०टी०—इस शरीरमें साढेतीन कोड नाड़ियाँ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं उनमें दश मुख्य हैं और दशमें भी तीन अतिशय प्रधान हैं ॥ २८ ॥

प्रधानामेरुदंडेऽत्रचंद्रसूर्याग्निरूपिणी ॥
इडावामेस्थितानाडीशुभ्रातुचंद्ररूपिणी ॥२९॥

भा०टी०—इनमें भी एक सुषुम्ना नाडी प्रधान है चन्द्र सूर्य और अग्निरूपिणी इस नाडीने मेरुदण्डके मध्यभागमें स्थित होकर मूलाधारसे ब्रह्मरन्ध्र पर्यन्त गमन किया है इसके वामभागमें शुभ्रवर्ण चन्द्ररूपिणी इडा है ॥ २९ ॥

शक्तिरूपातुसानाडीसाक्षादमृतविग्रहा ॥
दक्षिणेयापिंगलाख्यापुंरूपासूर्यविग्रहा ॥ ३० ॥

भा०टी०—यह शक्तिरूपा अमृतमयी है और दक्षिण भागमें पुरुषरूपिणी सूर्यस्वरूपा पिंगला नाडी स्थित है ॥ ३० ॥

सर्वतेजोमयी सा तु सुषुम्नावह्निरूपिणी ॥
तस्यामध्येविचित्राख्येइच्छाज्ञानाक्रियात्मकम् ३१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी—और वह्निप्रधाना सुषुम्नानाडी सब तेजोमयी इसके मध्यमें स्थित चित्ररेखानामक नाडीके भीतर इच्छा, ज्ञान और क्रियात्मक ॥ ३१ ॥

मध्येस्वयंभूलिंगंतुकोटिसूर्यसमप्रभम् ॥
तदूर्ध्वंमायाबीजंतुहरात्मबिंदुनादकम् ॥ ३२ ॥

भा०टी०—कोटिसूर्यके समान प्रभावशाली स्वयंभू-लिंग प्रतिष्ठित है उसके ऊपर भागमें हरात्मा बिन्दुनाद अर्थात् हकार, रेफ, ईकार बिन्दुनादात्मक मायाबीज स्थित है ॥ ३२ ॥

तदूर्ध्वंतुशिखाकाराकुंडलीरक्तविग्रहा ॥
देव्यात्मिकातुसाप्रोक्तामदभिन्नानगाधिप॥३३॥

भा०टी—उसके ऊपरी भागमें दीपशिखाके समान लाल वर्ण देवीरूपिणी कुंडलिनी शक्ति विराजमान है, हे नगेश्वर ! यह मुझसे अभिन्न है ॥ ३३ ॥

तद्बाह्येहेमरूपाभंवादिसांतचतुर्दलम् ॥
द्रुतहेमसमप्रख्यंपद्मंतत्रविचिंतयेत् ॥ ३४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी–इसके बहिर्भागमें पीतवर्ण सुवर्णके समान कान्तिवाले कमलकी चिन्ता करै उससे चार दलोंमें, व, श, ष, स, यह चार अक्षर ध्यान करै ॥ ३४ ॥

तदूर्ध्वंत्वनलप्रख्यंषड्दलंहरिकप्रभम् ॥
बादिलांतषड्वर्णैनस्वाधिष्ठानमनुत्तमम् ॥३५॥

भा०टी०–इसके ऊपर षट्कोण कमलका ध्यान करै जो अग्निके समान छः दलोंसे युक्त हीरेकेसी कान्तिवाला है, इसके छहों दल ब, भ, म, य, र, ल, इन अक्षरोंसे सम्पन्न हैं,स्वशब्दसे परलिंग जानना चाहिये ॥ ३५॥

मूलमाधारषट्कोणंमूलाधारंततोविदुः ॥
स्वशब्देनपरंलिंगंस्वाधिष्ठानंततोविदुः ॥ ३६॥

भा०टी०–यह षट्कोण मूलके आधारवाला है, इसीसे इसको मूलाधार कहते हैं, स्वशब्दसे परलिंग और स्वाधिष्ठान जानना चाहिये यही स्वाधिष्ठान पद्म है ॥ ३६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तदूर्ध्वनाभिदेशेतुमणिपूरमहाप्रभम् ॥
मेघाभंविद्युदाभंचबहुतेजोमयंततः ॥ ३७ ॥

भा०टी०—इसके ऊपर नाभिस्थानमें विद्युत् छटा और मेघके समान कान्तिमान् अतितेजयुक्त महा प्रभावाला मणिपूर ॥ ३७ ॥

मणिवद्विभ्रंतत्पद्ममणिपद्मंतथोच्यते ॥
दशभिश्चदलैर्युक्तंडादिफांताक्षरान्वितम् ॥३८॥

भा०टी०—मणिवत्प्रभावाला होनेसे मणिपद्म कहाता है उसमें दशदल—ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, यह अक्षर युक्त हैं ॥ ३८ ॥

विष्णुनाधिष्ठितंपद्मंविष्ण्वालोकनकारणम् ॥
तदूर्ध्वेनाहतंपद्ममुद्यदादित्यसन्निभम् ॥ ३९ ॥

भा०टी०—यह पद्म विष्णुसे अधिष्ठित होनेसे इसके ध्यानसे विष्णुका साक्षात्कार होता है. इसके उर्ध्वभागमें बालसूर्यके समान प्रभायुक्त अनाहत पद्म है ॥ ३९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कादिठांतदलैरर्कपैत्रश्चसमधिष्ठितम् ॥
तन्मध्येबाणलिंगंतुसूर्यायुतसमप्रभम् ॥ ४० ॥

भा०टी०—यह क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, इन बारह वर्णों युक्त बारहदल सम्पन्न है इसके मध्यमें अयुत १०००० सूर्यके समान प्रभासम्पन्न बाणलिंग विराजमान है ॥ ४० ॥

शब्दब्रह्ममयंशब्दानाहतंतत्रदृश्यते ॥
अनाहताख्यंतत्पद्मंमुनिभिःपरिकीर्तितम् ॥४१॥

भा०टी०—किसी प्रकारकी ताडनाके विनाही इससे शब्द ब्रह्मकी उत्पत्ति होती है इसीसे मुनिजन इसको अनाहत पद्म कहते हैं ॥ ४१ ॥

आनंदसदनंतत्तुपुरुषाधिष्ठितंपरम् ॥
तदूर्ध्वंभुविशुद्धाख्यंदलषोडशपंकजम् ॥ ४२ ॥

भा०टी०—यह पद्म आनंदका धाम है इसमें रुद्ररूपी पुरुष विराजते हैं इसके ऊपर भुविशुद्धनामक षोडश दल कमल ॥ ४२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वरैःषोडशभिर्युक्तंधूम्रवर्णंमहाप्रभम् ॥
विशुद्धंतनुतेयस्माज्जीवस्यहंसलोकनात् ॥४३॥

भा०टी०—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः इन सोलह स्वरों युक्त धूम्रवर्ण महाकान्तिमान् है. परमात्माके अवलोकनसे इसमें जीव शुद्ध होता है अर्थात् दोनोंका अभेद साक्षात्कार होनेसे जीव विशुद्धिको प्राप्त होता है ॥ ४३ ॥

विशुद्धंपद्ममाख्यातमाकाशाख्यंमहाद्भुतम् ॥
आज्ञाचक्रंतदूर्ध्वंतुआत्मनाधिष्ठितंपरम् ॥४४॥

भा०टी०—इसीकारण इसको विशुद्ध पद्म कहते हैं. यह महाअद्भुत पद्म आकाशनामसे अभिहित है इसके ऊपर भ्रूमध्यमें आत्माका परम अधिष्ठान आज्ञाचक्र है ४४

आज्ञासंक्रमणंतत्रतेनाज्ञेतिप्रकीर्तितम् ॥
द्विदलंहक्षसंयुक्तंपद्मंतत्सुमनोहरम् ॥ ४५ ॥

भा०टी०—यह ह और क्ष द्विदलसे युक्त मनोहर है इसमें चित् स्थित होनेसे सब पदार्थोंका साक्षात्कार हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आता है. भूत भविष्य वर्तमान वस्तुओंमें यह तुम्हारा कर्त्तव्य है. इस प्रकार परमेश्वरकी आज्ञाका संक्रमण होता है. इसीसे इसको आज्ञापद्म कहते हैं ॥ ४५ ॥

कैलासाख्यंतदूर्ध्वंतुरोधिनीतुतदूर्ध्वतः ॥
एवंत्वाधारचक्राणिप्रोक्तानितवसुव्रत ॥ ४६ ॥

भा०टी०—इसके ऊर्ध्वमें कैलासचक्र उसके उर्ध्वमें रोधिनीचक्र है. हे सुव्रत ! इस प्रकार आपके निकट आधार चक्रोंका वर्णन किया ॥ ४६ ॥

सहस्रारयुतंबिंदुस्थानंतदूर्ध्वमीरितम् ॥
इत्येतत्कथितंसर्वयोगमार्गमनुत्तमम् ॥ ४७ ॥

भा०टी०—योगियोंका कथन है कि, उसके ऊर्ध्वमें सहस्रारचक्र है यह बिन्दु अर्थात् परमात्माका स्थान है यह आपसे सम्पूर्ण योगमार्ग वर्णन किया ॥ ४७ ॥

आदौपूरकयोगेनाप्याधारेयोजयेन्मनः ॥
गुदमेढ्रांतरेशक्तिस्तामाकुंच्यप्रबोधयेत् ॥ ४८॥

भा०टी०—यह जानकर जो करना चाहिये सोई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कहती हूं पहले पूरक प्राणायाम द्वारा आधारचक्रमें मन संयुक्त करै, गुदा और मेढ्रके भीतर मूलाधारमें विराजमान कुंडलिनी शक्तिको मूलाधारमें प्राप्त वायुद्वारा आकुंचित करके प्रबोधित करे ॥ ४८ ॥

लिंगभेदक्रमेणैवबिंदुचक्रंचप्रापयेत् ॥
शंभुनातांपराशक्तिमेकीभूतांविचिंतयेत् ॥४९॥

भा०टी०—अनन्तर लिंगभेद क्रमसे अर्थात् पूर्वोक्त चक्र स्थित तेजोमय स्वयंभू इत्यादि लिंगका भेदकर उस उस मार्गमें उस कुंडलिनी शक्तिको सहस्रार स्थानमें लावै फिर उस परम शक्तिको सहस्रारमें स्थित शंभुके सहित एकीभूत रूपसे चिन्तन करै ॥ ४९ ॥

तत्रोत्थितामृतं चुय द्रुतलाक्षारसोपमम् ॥
पाययित्वातुतांशक्तिमाधाख्यांयोगसिद्धिदाम् ।५०॥

भा०टी०—अनन्तर शिवशक्तिके संगमसे लाक्षारसके समान जो अमृत निर्गत होता है उसी आनंदस्वरूप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अमृतसे योगसिद्धिकरी मायानामिनी कुंडलिनी शक्तिको-तृप्तकरै ॥ ५० ॥

षट्चक्रदेवतास्तत्रसंतर्प्यामृतधारया ॥
आनयेत्तेनमार्गेणमूलाधारंततः सुधीः ॥ ५१ ॥

भा०टी०—और छहों चक्रोंमें स्थित देवसमूहोंको उस अमृत धारा द्वारा तृप्त करके पूर्वोक्त मार्गसे उस शक्तिको मूलाधार पद्ममें लावै ॥ ५१ ॥

एवमभ्यस्यमानस्याऽप्यहन्यहनिनिश्चितम् ॥
पूर्वोक्तदूषितामंत्राः सर्वेसिध्यंतिनान्यथा ॥५२॥

भा०टी०—जो प्रतिदिन इस प्रकार योगका अभ्यास करते हैं उनके सम्बन्धमें छिन्नादिदोष दूषित सब मंत्र सिद्ध होते हैं इसमें अन्यथा नहीं है ॥ ५२ ॥

जरामरणदुःखाद्यैर्मुच्यतेभवबंधनात् ॥
येगुणाः संतिदेव्यामेजगन्मातुर्यथातथा ॥५३॥

भा०टी०—और इसीसे जरामरणादि दुःखवाले संसार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बंधनसे मुक्त होते हैं और मुझ जगन्मातामें जो सब गुण विद्यमान हैं ॥ ५३ ॥

तेगुणाः साधकवरेभवंत्येवनचान्यथा ॥
इत्येवंकथितंतातवायुधारणमुत्तमम् ॥ ५४ ॥

भा०टी०—ऐसे साधकको वह समस्त गुण प्राप्त होते हैं इसमें सन्देह नहीं हे तात! यह तुमसे अति उत्तम वायुधारण योग कथन किया ॥ ५४ ॥

इदानींधारणाख्यंतुशृणुष्वावहितोमम ॥
दिक्कालाद्यनवच्छिन्नदेव्यांचेतोविधायच ॥५५॥

भा०टी०—अब सावधान होकर चित्तधारणाख्ययोग सुनो दिक् काल और देशादिद्वारा अपरिच्छिन्न देवीमूर्तिमें चित्तको स्थिर कर सकनेसे ॥ ५५ ॥

तन्मयोभवतिक्षिप्रंजीवब्रह्मैक्ययोजनात् ॥
अथवासमलंचेतोयदिक्षिप्रंनसिद्ध्यति ॥ ५६ ॥

भा०टी—तन्मय होनेसे शीघ्रही जीवब्रह्मकी एकताका ज्ञान होता है उस समय साधक ब्रह्ममय हो जाता है और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि चित्त रज तम द्वारा मलीन हो तो शीघ्र योगसिद्धि नहीं होती ॥ ५६ ॥

तदावयवयोगेनयोगीयोगान्समभ्यसेत् ॥
मदीयहस्तपादादावंगेतुमधुरेनग ॥ ५७ ॥

भा०टी०—तब योगी अवयवयोगसे योगाभ्यास करे अर्थात् मेरे हस्तपादादि किसी मनोहर अंगमें ॥ ५७ ॥

चित्तंसंस्थापयेन्मंत्रीस्थानस्थानजयात्पुनः ॥
विशुद्धचित्तःसर्वस्मिन्रूपेसंस्थापयेन्मनः॥५८॥

भा०टी०—चित्तको लगाय एक एक स्थानको जय करता हुआ, चित्तकी शुद्धता होनेसे मेरे सब स्वरूपमें मनको स्थापन करै ॥ ५८ ॥

यावन्मनोलयंयातिदेव्यांसंविदिपर्वत ॥
तावदिष्टमनुंमंत्रीजपहोमैः समभ्यसेत् ॥ ५९ ॥

भा०टी०—हे नगेन्द्र ! जबतक मुझ ब्रह्मरूपिणीमें चित्तका लय न हो तबतक मंत्रयोगपरायण साधक जप और होमके द्वारा इष्टमंत्रसाधनका अभ्यास करै ॥ ५९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मंत्राभ्यासेनयोगेनज्ञेयज्ञानायकल्पते ॥
नयोगेनविनामंत्रोनमंत्रेणविनाहिसः ॥ ६० ॥

भा०टी०--मंत्राभ्यासयोगद्वारा ब्रह्मज्ञान प्राप्त होता है योगके विना मंत्रासिद्धि नहीं होती और मंत्रके विना योग सिद्ध नहीं होता, मंत्र और योग दोनोंका अभ्यासही ब्रह्म ज्ञानका कारण है ॥ ६० ॥

द्वयोरभ्यासयोगोहिब्रह्मसंसिद्धिकारणम् ॥
तमः परिवृतेगेहेघटोदीपेनदृश्यते ॥ ६१ ॥

भा०टी०--घरमें रक्खा हुआ अंधकारसे आच्छन्न घडा जिस प्रकार दीपकसे दिखाई देता है इसीप्रकार मायासे आवृतजीवात्माभी मन्त्रद्वारा प्रकाशित होताहै अर्थात् मंत्रमायाअंधकारको दूरकरके आत्माका स्वरूप प्रकाश करदेता है ॥ ६१ ॥

एवंमायावृतोह्यात्मामनुनागोचरीकृतः ॥
इतियोगविधिःकृत्स्नःसांगप्रोक्तोमयाऽधुना६२॥

भा०टी०--हे पर्वतराज ! यह मैंने तुम्हारे समीप अंगके सहित सब योग विधिका वर्णन किया ॥ ६२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गुरूपदेशतोज्ञेयोनान्यथाशास्त्रकोटिभिः॥६३॥
इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे देवी-
गीतायांपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

भा०टी०—यह विद्या गुरुके निकट उपदेश प्राप्तकर-केही जानी जातीहै अन्यथा कोटिशास्त्रद्वारा भी इसका लाभ नहीं हो सकता है ॥ ६३ ॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे देवीगीता
भाषाटीकायां पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठोऽध्यायः ६.

देव्युवाच ।

इत्यादियोगयुक्तात्माध्यायेन्मांब्रह्मरूपिणीम् ॥
भक्त्यानिर्व्याजयाराजन्नासनेसमुपस्थितः ॥ १॥

भा०टी०—श्रीदेवी बोलीं, हे गिरिराज ! योगीजन इस प्रकार योगयुक्त हो आसनमें बैठ छलरहित भक्तिसे मुझ ब्रह्मरूपिणीका ध्यान करै ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आविःसन्निहितंगुहाचरंनाममहत्पदम् ॥
अत्रैतत्सर्वमर्पितमेजत्प्राणन्निमिषच्चयत् ॥ २ ॥

भा०टी०—अब ब्रह्मस्वरूपका वर्णन करती हूं सुनो यह ब्रह्म आवि अर्थात् प्रकाशमान वस्तु अतिसमीपवर्ती और गुहाचर अर्थात् सर्वव्यापक होकरभी केवल बुद्धि-रूप गुहामें ही इसकी प्राप्ति होती है यह योगादि साधन गम्य है इस ब्रह्मसे ही आकाशादि समस्त पदार्थ कल्पित होते हैं इसमें ही पक्षी मनुष्य निमेषादि क्रियावान् सब पदार्थ स्थापित हैं ॥ २ ॥

एतज्ज्ञानथसदसद्वरेण्यंपरंविज्ञानाद्यद्वरिष्ठंप्रजा
नाम् ॥ यदर्चिमद्यदणुभ्योऽणुचयास्मिँल्लोकानि
हितालोकिनश्च ॥ ३ ॥

भा०टी०—हे देवताओ ! मेरे इस ब्रह्मरूपको जानो जो माया और जगत् इन दोनोंसे श्रेष्ठ है लोकमें ज्ञानातीत और वरिष्ठ अर्थात् सम्पूर्ण बुद्धियोंको भी गम्य नहीं है जो सूर्यादि तेजका भी प्रकाशक है इससे वह सूर्यादितेजसे भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अत्यन्त दीप्तिमान् और अणुसेभी अणु अर्थात् अति सूक्ष्म है. जिसमें भूरादि लोक और उन लोकनिवासियोंकी स्थिति है ॥ ३ ॥

तदेतदक्षरंब्रह्मसप्राणस्तदुवाङ्मनः ॥
तदेतत्सत्यममृतंवेद्धव्यंसौम्यविद्धि ॥ ४ ॥

भा०टी०—वह अक्षर अविनाशी पदार्थही ब्रह्म है, यही प्राण वाणी और मनस्वरूप है. वही सत्य और अमृत स्वरूप है, हे सौम्य ! मनरूपी बाणसे उसको विद्धकरना चाहिये अर्थात् उसमें मन समाधान करै ॥ ४ ॥

धनुर्गृहीत्वौपनिषदंमहास्त्रंशरंह्युपासानिशितंसंधयीत ॥ आयम्यतद्भावगतेनचेतसाल-क्ष्यंतदेवाक्षरंसौम्यविद्धि ॥ ५ ॥

भा०टी०—हे सौम्य ! उसके विद्ध करनेका उपाय कहती हूँ उपनिषद्शास्त्ररूपी महाधनुष ग्रहणकर उसमें ध्यान और उपासनाका तीक्ष्ण बाण संधान और सब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रियोंको अपने अपने विषयसे खैंचकर तद्गत चित्तसे उस ब्रह्मरूप लक्ष्यको विद्ध करै ॥ ५ ॥

प्रणवोधनुःशरोह्यात्माब्रह्मतल्लक्ष्यमुच्यते ॥
अप्रमत्तेनवेद्धव्यंशरवत्तन्मयाभवेत् ॥ ६ ॥

भा०टी०—जिस धनुआदिका विषय कहा है वह भली भाँति वर्णन करती हूं इस ब्रह्मरूप लक्ष्यवेधमें ॐ कार वा देवीप्रणवही धनु है, जिस प्रकार लक्ष्यमें बाणप्रवेशका कारण धनुषही है इसीप्रकार चित्तरूपी लक्ष्यमें प्रवेशसम्बन्धका प्रणवही कारण है प्रणवका अभ्यास करते २ उससे संस्कृत हो प्रणवको अवलम्बनपूर्वक अप्रतिबद्ध भावसे ब्रह्ममें स्थिति की जाती है इसमें आत्मा अर्थात् अन्तःकरणही शर है, जिस प्रकार शर लक्ष्यको विद्ध करता है इसीप्रकार अन्तःकरणही आत्माको विद्ध करता है. इसीकारण अन्तःकरणको शर कहा गया है इस स्थलमें ब्रह्मही लक्ष्यवस्तु है साधक अप्रमत्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चित्तसे इस लक्ष्यको विद्ध करै तो बाण जिस प्रकार लक्ष्य भेद करके उसके संग एकात्मताको प्राप्त होताहै इसीप्रकार साधकभी ब्रह्मके संग एकात्मताको प्राप्त होसकते हैं॥ ६॥

यस्मिन्द्यौश्चपृथिवीचांतरिक्षमोतंमनःसहप्राणै
श्चसर्वैः॥ तमेवैकंजानथात्मानमन्यावाचोवि-
मुंचथामृतस्यैषसेतुः॥ ७॥

भा०टी०—वह ब्रह्मपदार्थ अतिदुर्लक्ष्य वस्तु है इससे भलीभाँति लक्ष्य करनेको फिर कहा जाता है, जिसमें स्वर्ग, पृथ्वी, अन्तरिक्ष सब इन्द्रियें और प्राणोंके सहित मन स्थित है, उसीको आत्मा जानना चाहिये, हे देवताओ! इसको जानकर अन्य अपर विद्यारूप वाक्योंका त्याग करै यह ब्रह्मज्ञानही मुक्तिका सेतु अर्थात् संसार सागरसे तारनेका हेतु है॥ ७॥

अराइवरथनाभौसंहतायत्रनाड्यः॥
सएषोंतश्चरतेबहुधाजायमानः॥ ८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—जिस प्रकार रथकी नाभिमें सब आरे मिलकर सन्निविष्ट रहतेहैं इसीप्रकार जिस हृदयमें नाडियें प्रविष्ट हुई हैं उसी हृदयमें बुद्धिवृत्तिका साक्षीरूप आत्मा बुद्धिवृत्तिके द्वारा अनेकरूपयुक्त होकर स्थिति करता है ॥ ८ ॥

ओमित्येवंध्यायथात्मानंस्वस्तिवःपारायतमसःपरस्तात्दिव्येब्रह्मपुरेव्योम्नि आत्मासंप्रतिष्ठितः॥९ ॥

भा०टी०—ॐकारका अवलम्बन कर यथोक्त प्रकारसे उसी आत्माकी चिन्ता करनी चाहिये संसारसागरके पार जानेकी प्राप्तिमें तुम निर्विघ्न हो यह भगवतीका आशीर्वाद है तुम अविद्यारहित ब्रह्मस्वरूपको अवगत हो, वह ब्रह्म जिस स्थानमें प्रतिष्ठित है सुनो, जो सर्वज्ञ सर्ववित् और जिसके जगत्सृष्टि आदिरूपकी विभूति पृथ्वीमें प्रसिद्ध है वह प्रकाशशाली आत्मा दिव्य हृदयकमलमें प्रतिष्ठित होनेसे प्राप्त होताहै ॥ ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनोमयःप्राणशरीरनेताप्रतिष्ठितोऽन्नेहृदयंस-
न्निधाय । ताद्विज्ञाननेपरिपश्यंतिधीराआनं-
दरूपममृतंयाद्विभाति ॥ १० ॥

भा०टी०-उस आत्माकी मनोवृत्तिद्वारा भावना होती है, इसी कारण उसको मनोमय कहते हैं, यही प्राण और शरीरका नेता यही अन्नमय हृदयपिण्डमें बुद्धिको स्थितकर प्रतिष्ठित है, विवेकी पुरुष इसको भलीभाँति जान-सकते हैं वह आनन्दरूप दुःखसे परे है. अविनाशीरूपसे प्रकाशित होता है ॥ १० ॥

भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसंशयाः ॥
क्षीयंतेचाऽस्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥११॥

भा०टी०-आत्मज्ञानका फल कहती हैं उस परमा-त्माका साक्षात्कार होनेसे हृदयग्रंथि अर्थात् चैतन्य और अहंकारका तादात्म्यभाव नष्ट होजाता है, समस्त ज्ञेयवस्तु विषयक सन्देह दूर होजाता है प्रारब्धके अति-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रिक्त सब कर्म नष्ट होजाते हैं जब उस परात्परका साक्षा त्कार होताहै. ॥ ११ ॥

हिरण्मयेपरकोशेविरजंब्रह्मनिष्कलम् ॥
तच्छुभ्रंज्योतिषांज्योतिरुत्तद्यदात्मविदोविदुः ॥१२॥

भा०टी०—फिर पूर्वोक्त विषयको संक्षेपसे कहती हूं यह ब्रह्म ज्योतिर्मय परकोश अर्थात् आनंदमयकोशमें प्रतिष्ठित है यह सत्त्वादि तीनों गुणरहित निष्कल (माया सहित) स्वच्छ वस्तु यह सर्वप्रकाश सूर्यादिकाभी प्रकाशक है आत्मवित् जिसको बडे परिश्रमसे जानते हैं वह हिरण्मय परकोशमें स्थित है ॥ १२ ॥

नतत्रसूर्योभातिनचंद्रतारकंनेमाविद्युतोभांति
कुतोऽयमग्निः । तमेवभांतमनुभातिसर्वंतस्य-
भासासर्वमिदंविभाति ॥१३॥

भा०टी०—उस ब्रह्मको सूर्य प्रकाश नहीं करसकते चन्द्र तारा बिजली वा अग्निभी उसके प्रकाश करनेमें समर्थ नहीं बहुत क्या यह सम्पूर्ण जगत् उस स्वप्रकाश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आत्मासे ही प्रकाशित होता है उससेही यह सब प्रकाशित है ॥ १३ ॥

ब्रह्मैवेदममृतंपुरस्ताद्ब्रह्मपश्चाद्ब्रह्मदक्षिणतश्चोत्तरेण ॥
अधश्चोर्ध्वंचप्रसृतंब्रह्मैवेदंविश्वंवरिष्ठम् ॥ १४ ॥

भा०टी०—यह अमृतमय ब्रह्मही आगे पीछे दक्षिण उत्तर नीचे और ऊपर भागमें स्थित है अधिक क्या इस सब जगत्कोही ब्रह्ममय जानना चाहिये ॥ १४ ॥

एतादृगनुभवोयस्यसकृतार्थोनरोत्तमः ॥
ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मानशोचतिनकांक्षति ॥१५॥

भा०टी०—हे गिरिराज ! जो पुरुषश्रेष्ठ इस प्रकार अनुभव कर सकते हैं वह कृतार्थ हैं वह ब्रह्मस्वरूप प्रसन्नस्वभाव होकर शोक और विषयकी कांक्षा रहित होते हैं ॥ १५ ॥

द्वितीयाद्वैभयंराजंस्तदभावाद्भिभेतिन ॥
नतद्वियोगोमेप्यस्तिमद्वियोगोऽपितस्य न ॥१६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—हे गिरिराज ! द्वैतभावही भयका कारण है द्वैतभाव दूर होनेसे फिर संसारभय नहीं रहता, मैं अद्वैतभाव निष्ठसे वियुक्त नहीं हूं और वह मुझसे पृथक् नहीं है ॥ १६ ॥

अहमेवससोऽहंवैनिश्चितंविद्धिपर्वत ॥
मद्दर्शनंतुतत्रस्याद्यत्रज्ञानीस्थितोमम ॥ १७ ॥

भा०टी०—हे पर्वतराज ! यह निश्चय जानो, वह ज्ञानी व्यक्ति मैं हूं जो मैं हूं सो वह ज्ञानी है. जिस किसी स्थानमें ज्ञानी क्यों न रहे उसी स्थानमें उसको मेरा दर्शन प्राप्त होता है ॥ १७ ॥

नाऽहंतीर्थेनकैलासेवैकुंठेवानकर्हिचित् ॥
वसामिकिंतुमज्ज्ञानिहृदयांभोजमध्यमे ॥१८॥

भा०टी०—मैं तीर्थ कैलास और वैकुण्ठमें निवास नहीं करती परन्तु जो ज्ञानी मुझमें परायण है उसीके हृदयकमलमें वास करती हूं ॥ १८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मत्पूजाकोटिफलदंसकृन्मज्ज्ञानिनोऽर्चनम् ॥
कुलंपवित्रंतस्याऽस्तिजननीकृतकृत्यका॥१९॥

भा०टी०—जो कोई मुझमें निष्ठावाले ज्ञानीकी एक वार पूजा करता है उसको मेरी पूजाका कोटिगुण फल होता है, जिसका चित्त चैतन्यस्वरूप ब्रह्ममें लीन हुआ है उसका वंश पवित्र है उसकी माता कृतकृत्य है॥१९॥

विश्वंभरापुण्यवतीचिल्लयोयस्यचेतसः ॥
ब्रह्मज्ञानंतुयत्पृष्टंत्वयापर्वतसत्तम ॥ २० ॥

भा०टी०—और उस पुरुषसे पृथ्वी पुण्यशालिनी होती है. हे पर्वतराज ! आपने जो मुझसे ब्रह्मज्ञानका विषय पूँछा ॥ २० ॥

कथितंतन्मयासर्वंनाऽतोवक्तव्यमस्तिहि ॥
इदंज्येष्ठायपुत्रायभक्तियुक्तायशीलिने ॥ २१ ॥

भा०टी०—वह मैंने सब कह दिया इस विषयमें अब कुछ कहना नहीं है यह ज्येष्ठपुत्र भक्तिमान् शीलसम्पन्न ॥ २१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शिष्यायचयथोक्तायवक्तव्यंनाऽन्यथाक्वचित् ॥
यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ॥ २२ ॥

भा०टी०—यथोक्त शिष्यसे कहना अन्यसे नहीं कहना जिसकी इष्टदेवमें पराभक्ति होती है और देवताके समान गुरुमें भक्ति होती है ॥ २२ ॥

तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनः ॥
येनोपदिष्टाविद्येयंसएवपरमेश्वरः ॥ २३ ॥

भा०टी०—उसीके निमित्त श्रेष्ठ पुरुष यह ब्रह्मविद्या प्रकाश करते हैं अर्थात् उसी महात्माको यह विद्या प्रकाशित होती है जो इस ब्रह्मविद्याका उपदेश करतेहैं वह साक्षात् परमेश्वर स्वरूप हैं ॥ २३ ॥

यस्यायंसुकृतंकर्तुमसमर्थस्ततोऋणी ॥
पित्रोरप्यधिकःप्रोक्तोब्रह्मजन्मप्रदायकः ॥२४ ॥

भा०टी०—इस विद्याको प्राप्त होकर शिष्य प्रत्युपकारमें असमर्थ होता है इससे जीवनपर्यन्त गुरुके समीप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋणी रहता है, जो ब्रह्मरूपमें युक्त करते हैं वह ब्रह्म-जन्मदाता गुरु माता पितासेभी अधिकपूज्य हैं ॥ २४ ॥

पितृजातंजन्मनष्टंनेत्थंजातंकदाचन ॥
तस्मैनदुह्येदित्यादिनिगमोऽप्यवदन्नग ॥ २५ ॥

भा०टी०—पितासे प्रगट होकर जन्म मरण होनेसे नष्ट होते हैं परन्तु ब्रह्मरूप जन्मसे फिर कभी नष्ट नहीं होता. हे पर्वतराज ! " तस्मै नद्रुह्येत्कृतमस्यजानन् " इस श्रुतिनेभी कहा है कि, ब्रह्मदाता गुरुका कार्य स्मरण कर कभी उससे द्रोह न करै ॥ २५ ॥

तस्माच्छास्त्रस्यसिद्धांतोब्रह्मदातागुरुःपरः ॥
शिवेरुष्टेगुरुस्त्रातागुरौरुष्टेनशंकरः ॥ २६ ॥

भा०टी—इस कारण शास्त्रके सिद्धान्त अनुसार ब्रह्म-दाता गुरु सबसे श्रेष्ठ है । शिवके रुष्ट होनेपर गुरु रक्षक होसकता है पर गुरुके रुष्ट होनपर शिव कभी उसकी रक्षा नहीं करते ॥ २६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तस्मात्सर्वप्रयत्नेनश्रीगुरुंतोषयेन्नग ॥
कायेनमनसावाचासर्वदातत्परोभवेत् ॥ २७ ॥

भा०टी०—हे पर्वतराज! इस कारण काय मन वचनेसे सर्वदा यत्नपूर्वक श्रीगुरुको संतुष्ट करै ॥ २७ ॥

अन्यथातुकृतघ्नःस्यात्कृतघ्नेनास्तिनिष्कृतिः ॥
इंद्रेणाऽथर्वणायोक्ताशिरश्च्छेदप्रतिज्ञया ॥२८॥

भा०टी०—अन्यथा वह कृतघ्नी होगा और कृतघ्न, पुरुषकी निष्कृति नहीं होती. गुरुके वचन उल्लंघन करनेसे क्या दशा होती है सो कहते हैं दध्यङ्नामक आथर्वण मुनिने इन्द्रसे प्रार्थना की कि, आप मुझे ब्रह्मविद्या दीजिये इन्द्रने कहा विद्या तो दूंगा पर यदि आप अन्य किसीको यह विद्या दोगे तो मैं तुम्हारा मस्तक छेदन करूंगा. उनके स्वीकार करनेपर इंद्रने ब्रह्मविद्या दी॥२८॥

अश्विभ्यांकथनेतस्याशिरश्छित्त्वांचवाज्रिणा ॥
अश्वीयंतच्छिरोनष्टंदृष्ट्वावैद्यौसुरोत्तमौ ॥ २९ ॥

भा०टी०—तब कुछ काल उपरान्त दोनों अश्विनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुमारोंने मुनिके पास आय विद्याकी प्रार्थना की मुनिने कहा विद्या देनेसे इन्द्र मेरा मस्तक छेदन करेगा तब अश्विनीकुमार बोले हम आपका यह मस्तक छेदन-कर आपके देहमें अश्वका मस्तक लगाये देते हैं उस मस्तकसे आप हमको विद्या उपदेश कीजिये जब इंद्र आपका यह मस्तक छेदन करेगा तब हम आपका पूर्व-शिर संयुक्त करदेंगे मुनिने सम्मत हो उनको ब्रह्मविद्याका उपदेश किया तब इन्द्रने आकर उनका वह मस्तक छेदन किया; तब अश्विनीकुमारोंने ॥ २९ ॥

पुनःसंयोजितंस्वीयंताभ्यांमुनिशिरस्तदा ॥
इतिसंकटसंपाद्याब्रह्मविद्यानागाधिप ॥
लब्धायेनसधन्यःस्यात्कृतकृत्यश्चभूधर ॥३०॥
इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधेदेवी-
गीतायां षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

भा०टी०—उनका मुख्य शिर जोडकर फिर उनके शिरसे ब्रह्मविद्या सुनी यह कथा श्रुतिसिद्ध है, इस प्रकार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संकटसे प्राप्त होनेवाली विद्याको जिसने प्राप्त किया, हे पर्वतराज ! वह धन्य और कृतकृत्य है ॥ ३० ॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कन्धे देवी-गीता भाषाटीकायां षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ सप्तमोऽध्यायः ७.

हिमालय उवाच ।

स्वीयांभक्तिंवदस्वांबयेनज्ञानंसुखेनहि ॥
जायेतमनुजस्याऽस्यमध्यमस्याऽविरागिणः ॥१॥

भा०टी०—हिमालय बोले, हे मातः ! अविरागी मध्यम अधिकारी पुरुषको जिस प्रकार सुखपूर्वक ज्ञान लाभ होसके इस समय आप वही अपना भक्तियोग कहो॥१॥

देव्युवाच ।

मार्गास्त्रयोमेविख्यातामोक्षप्राप्तौनगाधिप ॥
कर्मयोगोज्ञानयोगोभक्तियोगश्चसत्तम ॥ २॥

भा०टी०—देवीने कहा, हे नगेन्द्र! मुक्तिप्राप्तिके निमित्त तीन मार्ग हैं कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग ॥२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रयाणामप्ययंयोग्यःकर्तुंशक्योऽस्तिसर्वथा ॥
सुलभत्वान्मानसत्वात्कायचित्ताद्यपीडनात् ३॥

भा०टी०–इन तीनोंमें भक्तियोगही सहजमें सिद्ध होता है; कारण कि, यह योग द्रव्यव्यय और शरीरकी पीडाके विना केवल मनकी वृत्तिसेही संपादित होता है; इससे सुलभ है ॥ ३ ॥

गुणभेदान्मनुष्याणांसाभक्तिस्त्रिविधामता ॥
परपीडांसमुद्दिश्यदम्भंकृत्वापुरःसरम् ॥ ४ ॥

भा०टी०–सत्त्व,रज, तम इन तीन प्रकारके गुणभेदसे मनुष्यकी भक्तिसात्त्विकी राजसी और तामसी ऐसी तीन प्रकारकी होती है जो दम्भप्रकाशपूर्वक दूसरेको पीडा देनेके निमित्त ॥ ४ ॥

मात्सर्यक्रोधयुक्तोयस्तस्यभक्तिस्तुतामसी ॥
परपीडादिरहितः स्वकल्याणार्थमेवच ॥ ५ ॥

भा०टी०–मात्सर्य और क्रोधादियुक्त होकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपासना करता है उसकी तामसी भक्ति है और जो परपीडादिसे रहित अपने कल्याणके निमित्तही ॥ ५ ॥

नित्यंसकामोऽदयेयशोऽर्थीभोगलोलुपः ॥
तत्तत्फलसमावाप्त्यैमामुपास्तेऽतिभक्तितः ॥६॥

भा०टी०—सकाम भावसे यश और भोगमें लोलुप हो अतिभक्तिसे उस उस फलप्राप्तिके निमित्त अत्यन्त भक्तिसे उपासना करते हैं ॥ ७ ॥

भेदबुद्ध्यात्वमांस्वस्मादन्यांजानातिपामरः ॥
तस्यभक्तिःसमाख्याताननगाधिपतुराजसी ॥७॥

भा०टी०—और अपनी अज्ञतासे हुई भेदबुद्धिद्वारा मुझे अपनेसे अन्य जानते हैं. हे नगाधिप ! उस पामरकी भक्ति राजसी है ॥ ६ ॥

परमेशार्पणंकर्मपापसंक्षालनायच ॥
वेदोक्तत्वादवश्यंतत्कर्तव्यंतुमयाऽनिशम् ॥ ८ ॥

भा०टी०—परमात्माको अर्पण किये कर्महीं पापनाश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करनेमें समर्थ होते हैं वह वेदोक्त कर्म दिन रात मुझे अवश्य कर्तव्य हैं ॥ ८ ॥

इतिनिश्चितबुद्धिस्तुभेदबुद्धिमुपाश्रितः ॥
करोतिप्रीतयेकर्मभक्तिःसानगसात्त्विकी ॥ ९ ॥

भा०टी०—इस प्रकार निश्चय कर जो भेदबुद्धिसे मेरे प्रसन्नताके निमित्त नित्यकर्मानुष्ठान करताहै. हे पर्वतराज! उसकी सात्त्विकी भक्ति है ॥ ९ ॥

परभक्तेःप्रापिकेयंभेदबुद्ध्यवलंबनात् ॥
पूर्वप्रोक्तेह्युभेभक्तीनपरप्रापिकेमते ॥ १० ॥

भा०टी०—यह सात्त्विकी भक्ति परम प्रेमरूपा और परभक्तिकी प्रापिका है किन्तु यह स्वयंही परभक्ति नहीं है कारण कि, इसमें भेदबुद्धि वर्तमान रहतीहै परन्तु राजसी और तामसी भक्ति परभक्तिकी प्रापिका नहीं इससे तामसी और राजसी भक्तिका त्यागकरके इसकाही आश्रय करै ॥ १० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अधुनापरभक्तिंतुप्रोच्यमानांनिबोधमे ॥
मद्गुणश्रवणंनित्यंममनामानुकीर्तनम् ॥ ११ ॥

भा०टी०—हे नगेन्द्र ! अब मैं पराभक्तिको वर्णन-करतीहूं तुम सुनो, जो कोई सदा मेरे गुणश्रवण और सदा मेरे नामको कीर्तन करता है ॥ ११ ॥

कल्याणगुणरत्नानामाकरायांमयिस्थिरम् ॥
चेतसोवर्तनंचैवतैलधारासमंसदा ॥ १२ ॥

भा०टी०—जिसका मन कल्याण और गुण रत्नका आकर मुझमेंही तैलधारके समान अविच्छिन्नभावसे सदा स्थित रहता है ॥ १२ ॥

हेतुस्तुतत्रकोवापिनकदाचिद्भवेदपि ॥
सामीप्यसार्ष्टिसायुज्यसालोक्यानांनचैषणा ॥ १३

भा०टी०—और उसमें किसी फलके हेतु व किसी फलकी आकांक्षा नहीं करता तथा सामीप्य, सार्ष्टि, सायुज्य और सालोक्य मुक्तिकी भी कामना नहीं करता॥ १३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मत्सेवातोऽधिकंकिंचिन्नैवजानातिकर्हिचित् ॥
सेव्यसेवकताभावात्तत्रमोक्षंनवांछति ॥ १४ ॥

भा०टी०—और जो प्राणी मेरी सेवासे अधिक और कुछ नहीं जानता, जो सेव्यसेवकभाव त्यागकर मोक्षकी भी आकांक्षा नहीं करता ॥ १४ ॥

परानुरक्त्यामामेवचिंतयेद्योह्यतन्द्रितः ॥
स्वाभेदेनैवमांनित्यंजानातिनाविभेदतः ॥ १५ ॥

भा०टी०—जो जितेन्द्रिय हो परानुरक्तिपूर्वक मेरीही आकांक्षा करता है और मुझको अपनेसे पृथक् न करके मैंही सच्चिदानंदरूप हूं ऐसा जानता है ॥ १५ ॥

मद्रूपत्वेनजीवानांचिंतनंकुरुतेतुयः ॥
यथास्वस्यात्मनिप्रीतिस्तथैवचपरात्मनि॥ १६॥

भा०टी०—और जो सब जीवोंमें मेराही रूप जानता है अपने परायेमें समान प्रीतियुक्त है ॥ १६ ॥

चैतन्यस्यसमानत्वान्नभेदंकुरुतेतुयः ॥
सर्वत्रवर्तमानांमांसर्वरूपांचसर्वदा ॥ १७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—जो चैतन्यके समानत्वसे सर्वत्र विद्यमान सर्वस्वरूपिणी मेरे सहित सदा सब जीवोंका अभिन्नत्व जानता है ॥ १७ ॥

नमतेयजतेचैवाप्याचांडालांतमीश्वर ॥
नकुत्रापिद्रोहबुद्धिंकुरुतेभेदवर्जनात् ॥ १८ ॥

भा०टी०—हे नगेश्वर ! जो भेदबुद्धि त्यागके कारण चण्डालपर्यन्त सब जीवोंको नमस्कार और सत्कार करता है और भेदवर्जनसे कहीं भी जिसकी द्रोहबुद्धि नहीं है १८

मत्स्थानदर्शनश्रद्धामद्भक्तदर्शनेतथा ॥
मच्छास्त्रश्रवणेश्रद्धामंत्रतंत्रादिषुप्रभो ॥ १९ ॥

भा०टी—जो मेरा और मेरे भक्तोंका दर्शन मेरा शास्त्र श्रवण और मेरे मंत्रादिविषयमें श्रद्धायुक्त है ॥ १९ ॥

मयिप्रेमाकुलमती रोमांचिततनुःसदा ॥
प्रेमाश्रुजलपूर्णाक्षःकंठगद्गदनिस्वनः ॥ २० ॥

भा०टी०—मेरेहीमें प्रेमसे आकुलमति हो मेरी कथा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मात्र सुननेसे रोमांचित शरीर होता है प्रेमके आंसुओंसे जिसके नेत्र पूर्ण और गद्गद कण्ठ होता है ॥ २० ॥

अनन्येनैवभावेनपूजयेद्योनगाधिप ॥
मामीश्वरींजगद्योनिंसर्वकारणकारणम् ॥ २१ ॥

भा०टी०—हे नगेश्वर ! जो अनन्यभावसे जगत्की योनि सर्वकारणोंकी कारण मुझ परमेश्वरीकी पूजा करता है॥ २१ ॥

व्रतानिममदिव्यानिनित्यनैमित्तिकान्यपि ॥
नित्यंयःकुरुतेभक्त्यावित्तशाठ्यविवर्जितः २२॥

भा०टी०—जो भक्तिपूर्वक कृपणता त्याग मेरे नित्यनैमित्तिकके दिव्यव्रत करताहै ॥ २२ ॥

मदुत्सवदिदृक्षाचमदुत्सवकृतिस्तथा ॥
जायतेयस्यनियतंस्वभावादेवभूधर ॥ २३ ॥

भा०टी०—जिसको स्वभावसेही मेरे उत्सव करने और देखनेकी इच्छा रहती है हे भूधर ! ॥ २३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उच्चैर्गायंश्चनामानिममैवखलुनृत्यति ॥
अहंकारादिरहितोदेहतादात्म्यवर्जितः॥ २४ ॥

भा०टी०—जो मेरे नाम ऊंचे स्वरसे लेकर गाते और नृत्य करते हैं जो अहंकार और देहके तादात्म्यभावसे रहित हैं ॥ २४ ॥

प्रारब्धेनयथायच्चक्रियतेतत्तथाभवेत् ॥
नमेचिंतास्तितत्रापिदेहसंरक्षणादिषु ॥ २५ ॥

भा०टी०—जो कोई यह समस्तही प्रारब्धकर्मानुसार होताहै यह जानकर मेरे ध्यानके अतिरिक्त देहरक्षादि विषयमें भी चिन्ता नहीं करते ॥ २५ ॥

इतिभक्तिस्तुयाप्रोक्तापराभक्तिस्तुसास्मृता ॥
यस्यांदेव्यतिरिक्तंतुनकिंचिदपिभाव्यते॥ २६ ॥

भा०टी०—उन पुरुषोंकी यह भक्ति पराभक्ति कहाती है, जिसमें देवीविचारके अतिरिक्त अन्य किसी विषयकी चिन्ता नहीं रहती ॥ २५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्थंजातापराभक्तिर्यस्यभूधरतत्त्वकः ॥
तदैवतस्यचिन्मात्रेमद्रूपेविलयोभवेत् ॥ २७ ॥

भा०टी०—हे पर्वतराज ! इस प्रकार तत्त्वसे जिसको पराभक्ति प्राप्त हुई है वह तत्कालही मेरे चिद्रूपमें लीन होजाता है ॥ २७ ॥

भक्तेस्तुयापराकाष्ठासैवज्ञानंप्रकीर्तितम् ॥
वैराग्यस्यचसीमासाज्ञानेतदुभयंयतः ॥ २८ ॥

भा०टी०—जिस ज्ञानसे भक्ति और ज्ञानकी पूर्णता होती है इस कारण वैराग्य और भक्तिकी परा काष्ठाकाही नाम ज्ञ है ज्ञानमें यह दोनोंही हैं ॥ २८ ॥

भक्तौकृतायांयस्यापिप्रारब्धवशतोनग ॥
नजायतेममज्ञानंमणिद्वीपंसगच्छति ॥ २९ ॥

भा०टी०—हे पर्वतराज ! जो भक्तिकरकेभी प्रारब्ध वश मेरे ज्ञानके अधिकारी नहीं होते वह मणिद्वीपमें गमन करते हैं ॥ २९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तत्रगत्वाऽखिलान्भोगाननिच्छन्नपिचर्च्छति ॥
तदंतेममाचिद्रूपज्ञानंसम्यग्भवेन्नग ॥ ३० ॥

भा०टी—हे पर्वतराज ! वहां जाकर इच्छा न करनेसे भी अनेक भोगोंकी प्राप्ति होती है उसके अन्तमें मेरा चिद्रूप ज्ञानलाभ करके ॥ ३० ॥

तेनमुक्तःसदैवस्याज्ज्ञानान्मुक्तिर्नचान्यथा ॥
इहैवयस्यज्ञानंस्याद्धृतप्रत्यगात्मनः ॥ ३१ ॥

भा०टी०—उस ज्ञानसे मुक्तहोजाता है. कारण कि, ज्ञानके विना मुक्ति नहीं होती यहां जिसको संवित् स्वरूप हृदयमें प्राप्त प्रत्यगात्मका ज्ञान होताहै ॥ ३१ ॥

ममसंवित्परतनोस्तस्यप्राणाव्रजंतिन ॥
ब्रह्मैवसंस्तदाप्नोतिब्रह्मैवब्रह्मवेदयः ॥ ३२ ॥

भा०टी०—तो मेरे संवित् रूपका ज्ञान होनेसे उसके प्राण उत्क्रान्त नहीं होते इस शरीरमें ही लय होजाते हैं "न तस्य प्राणा उत्क्रामान्ति" इतिश्रुतेः। उसका ब्रह्मके साथ अभेद होता है "ब्रह्मविद्ब्रह्मैव भवति" इति श्रुतेः ॥ ३२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कंठचामीकरसममज्ञानाच्युतिरोहितम् ॥
ज्ञानादज्ञाननाशेनलब्धमेवहिलभ्यते ॥ ३३ ॥

भा०टी०—जिस प्रकार कंठमें स्थित सुवर्णका भ्रमवश नष्ट होना जानाजाता है और भ्रमके नष्ट होनेसे प्राप्त वस्तुकी ही प्राप्ति मानी जाती है ॥ ३३ ॥

विदिताविदितादन्यन्नगोत्तमवपुर्मम ॥
यथादर्शेतथाऽऽत्मनियथाजलेतथापितृलोके ॥ ३४ ॥

भा०टी०—हे नगसत्तम! मेरे चिद्रूपतनुविहित घटादि कार्य अविदित माया रूपसे भिन्न हैं जिस प्रकार दर्पणमें प्रतिबिम्ब पडता है इसीप्रकार इस देहमें आत्माका अनुभव होता है और जिसप्रकार जलमें प्रतिबिम्ब पूर्वकी अपेक्षा विविक्तभावसे प्रकाशित होता है इसीप्रकारसे पितृलोकमें देहसे विविक्तभावमें आत्माका अनुभव होता है ॥ ३४ ॥

छायातपौयथास्वच्छौविविक्तौतद्वदेवहि ॥
ममलोकेभवेज्ज्ञानंद्वैतभावविवर्जितम् ॥ ३५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—जैसे छाया और आतपका भेद प्रकाश स्वरूपसे स्वच्छरूपसे दीखता है इसीप्रकार मणिद्वीपमें द्वैतभाववर्जित ज्ञान होता है ॥ ३५ ॥

यस्तुवैराग्यवानेवज्ञानहीनोम्रियेतचेत् ॥
ब्रह्मलोकेवसेन्नित्यंयावत्कल्पंततःपरम् ॥ ३६ ॥

भा०टी०—जो वैराग्यवान् होकर पूर्णज्ञान प्राप्त हुये विना प्राणत्याग करते हैं वह प्रलयपर्यन्त ब्रह्मलोकमें निवास करके ॥ ३६ ॥

शुचीनांश्रीमतांगेहेभवेत्तस्यजनिःपुनः ॥
करोतिसाधनंपश्चात्ततोज्ञानंहिजायते ॥ ३७ ॥

भा०टी०—फिर पवित्र श्रीमान् पुरुषोंके घर जन्म-ग्रहण कर साधन करने उपरान्त फिर ज्ञानलाभ करते हैं ॥ ३७ ॥

अनेकजन्मभीराजञ्ज्ञानंस्यान्नैकजन्मना ॥
ततःसर्वप्रयत्नेनज्ञानार्थंयत्नमाश्रयेत् ॥ ३८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—हे राजन् ! एक जन्ममें नहीं अनेक जन्मोंमें ज्ञान होता है इस कारण सब प्रयत्नसे ज्ञानको आश्रय करै ॥ ३८ ॥

नोचेन्महान्विनाशःस्याज्जन्मैतद्दुर्लभंपुनः ॥
तत्राऽपिप्रथमेवर्णेवेदेप्राप्तिश्चदुर्लभा ॥ ३९ ॥

भा०टी०—यदि मनुष्यजन्म प्राप्त होकर ज्ञानलाभ न किया तो विनाश होगा कारण कि, मनुष्यजन्म बडा-दुर्लभ है उसमें भी ब्राह्मण और उसमेंभी वेदप्राप्ति बहुतही दुर्लभ है ॥ ३९ ॥

शमादिषट्कसंपत्तिर्योगसिद्धिस्तथैवच ॥
तथोत्तमगुरुप्राप्तिःसर्वमेवाऽत्रदुर्लभम् ॥ ४० ॥

भा०टी०—शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान और श्रद्धा यह षट्सम्पत्ति, योगसिद्धि और उत्तम गुरुकी प्राप्ति यह इस लोकमें बडी दुर्लभ है ॥ ४० ॥

तथेंद्रियाणांपटुतासंस्कृतत्वंतनोस्तथा ॥
अनेकजन्मपुण्यैस्तुमोक्षेच्छाजायतेततः ॥४१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—इन्द्रियोंकी पटुता शरीरका संस्कार और अनेक जन्मोंके पुण्योदयसे मोक्षमें इच्छा होती है॥४१॥

साधनेसफलेऽप्येवंजायमानेऽपियोनरः॥
ज्ञानार्थंनैवयततेतस्यजन्मनिरर्थकम्॥४२॥

भा०टी०—जो मनुष्य साधनसे सफल होनेवाले इस शरीरको प्राप्त करके ज्ञानके निमित्त यत्न नहीं करता उसका जन्म निरर्थक है॥४२॥

तस्माद्राजन्यथाशक्त्याज्ञानार्थंयत्नमाश्रयेत्॥
पदेपदेऽश्वमेधस्यफलमाप्नोतिनिश्चितम्॥४३॥

भा०टी०—हे राजन्! इस कारण यथाशक्ति ज्ञानप्राप्तिके निमित्त यत्न करे तो अवश्य उसको पदपदमें अश्वमेधका फल प्राप्तहोता है॥४३॥

घृतमिवपयासिनिगूढंभूतेभूतेचवसतिविज्ञानम्॥
सततंमंथयितव्यंमनसामंथानभूतेन॥४४॥

भा०टी०—जैसे दूधमें घृत निमग्न है इसीप्रकार सब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूतोंमें ज्ञान निवास करता है, उसको मंथानभूत मनसे सदा मथना चाहिये ॥ ४४ ॥

ज्ञानंलब्ध्वाकृतार्थःस्यादितिवेदांतडिंडिमः॥
सर्वमुक्तंसमासेनाकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ४५ ॥
इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे
देवीगीतायां सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

भा०टी०—ज्ञानको प्राप्त होकरही यह प्राणी कृतार्थ होता है यह वेदान्तकी घोषणा है यह संक्षेपसे आपके प्रति सब वर्णन किया अब क्या सुननेकी इच्छा है ? ॥४५॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे देवी-
गीताभाषाटीकायां सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ अष्टमोऽध्यायः ८.

हिमालय उवाच ।

कतिस्थानानिदेवेशिद्रष्टव्यानिमहीतले ॥
मुख्यानिचपवित्राणिदेवीप्रियतमानिच ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—हिमालय बोले, हे देवि ! इस पृथ्वीमें तुम्हारे मुख्य और प्रिय कितने स्थान हैं सो तुम मुझसे कहो ॥ १ ॥

व्रतान्यपितथायानितुष्टिदान्युत्सवाअपि ॥
तत्सर्ववदमेमातःकृतकृत्योयतोनरः ॥ २ ॥

भा०टी०— हे मातः ! जिन सब व्रत और उत्सवका अनुष्ठान करनेसे मनुष्य कृतकृत्य होते हैं अपने प्रीतिदायक उन सब व्रत और उत्सवका वर्णन कीजिये ॥ २ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

सर्वंदृश्यंममस्थानंसर्वंकालाव्रतात्मकाः ॥
उत्सवाःसर्वकालेषुयतोऽहंसर्वरूपिणी ॥ ३ ॥

भा०टी०—श्रीदेवी बोलीं, हे पर्वतराज ! मैं सर्वाधिष्ठान स्वरूपिणी हूं इस कारण भूमण्डलमें जितने स्थान विद्यमान हैं वह सबही मेरी अधिष्ठान भूमि हैं और मैं सब कालमयी हूं इस कारण सब कालही मेरा व्रत और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्सवात्मक है इस कारण जिस समय जिसका अनुष्ठान करै उसकोही मेरी प्रीतिप्रद जाने ॥ ३ ॥

तथापिभक्तवात्सल्यात्किंचित्किंचिदथोच्यते ॥
शृणुष्वाऽवहितोभूत्वानगराजवचोमम ॥ ४ ॥

भा०टी०—पर तथापि भक्तवत्सलतासे कुछ तुमसे कहती हूँ हे नगराज! वह सावधान होकर मुझसे सुनो ४ ॥

कोलापुरंमहास्थानंयत्रलक्ष्मीःसदास्थिता ॥
मातुःपुरंद्वितीयंचरेणुकाधिष्ठितंपरम् ॥ ५ ॥

भा०टी०—दक्षिणदेशमें कोलापूर (करवीर) स्थानमें लक्ष्मी नामसे सदा स्थित हूं सह्यनाम पर्वतमें मातृपुरस्थानमें रेणुका रूपसे निवास करती हू ॥ ५ ॥

तुलजापुरंतृतीयंस्यात्सप्तशृंगंतथैवच ॥
हिंगुलायामहास्थानंज्वालामुख्यास्तथैवच ॥ ६ ॥

भा०टी०—तुलजापुर और सप्तशृंग स्थानमें हिंगुला और ज्वालामुखी निवास करती हैं ॥ ६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शाकंभर्याःपरंस्थानंभ्रामर्याःस्थानमुत्तमम् ॥
श्रीरक्तदंतिकास्थानंदुर्गास्थानंतथैवच ॥ ७ ॥

भा०टी०—यह शाकम्भरी, भ्रामरी. श्रीरक्तदन्तिका दुर्गाका स्थान है ॥ ७ ॥

विंध्याचलनिवासिन्याः स्थानंसर्वोत्तमोत्तमम् ॥
अन्नपूर्णामहास्थानंकांचीपुरमनुत्तमम् ॥ ८ ॥

भा०टी०—विन्ध्याचल निवासिनीका सर्वोत्तम स्थान है कांचीपुरमें अन्नपूर्णाका महास्थान है ॥ ८ ॥

भीमादेव्याः परंस्थानंविमलास्थानमेवच ॥
श्रीचंद्रलामहास्थानंकौशिकीस्थानमेवच ॥ ९॥

भा०टी०—यही पुर भीमा देवी विमला श्रीचन्द्रकला और कौशिकीका महास्थान है ॥ ९ ॥

नीलांबायाः परंस्थानंनीलपर्वतमस्तके ॥
जांबूनदेश्वरीस्थानंतथाश्रीनगरंशुभम् ॥ १० ॥

भा०टी०—नीलपर्वतके शृंगमें नीलाम्बरीका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परमस्थान और सुन्दर श्रीनगरको जाम्बूनदेश्वरीका परम स्थान जानो ॥ १० ॥

गुह्यकाल्यामहास्थानंनेपालेयत्प्रतिष्ठितम् ॥
मीनाक्ष्याः परमंस्थानंयच्चप्रोक्तंचिदंबरे॥ ११ ॥

भा०टी०—नेपालमें गुह्यकालीका उत्कृष्ट स्थान है. चिदम्बरदेशमें मीनाक्षीका परमस्थान है ॥ ११ ॥

वेदारण्यंमहास्थानंसुंदर्याः समाधीष्ठितम् ॥
एकांबरंमहास्थानंपरशक्त्याप्रतिष्ठितम् ॥ १२॥

भा०टी०—वेदारण्यक महास्थानमें सुन्दरी देवी, एकाम्बर महास्थानमें पराशक्ति स्थित रहती है ॥ १२॥

महालसापरंस्थानंयोगेश्वर्यास्तथैवच ॥
तथानीलसरस्वत्याःस्थानंचीनेषुविश्रुतम् ॥१३॥

भा०टी०—महालसा, योगेश्वरी और नीलसरस्वतीका स्थान चीनदेशमें है ॥ १३ ॥

वैद्यनाथेतुबगलास्थानंसर्वोत्तमंमतम् ॥
श्रीमच्छ्रीभुवनेश्वर्यामणिद्वीपंममस्मृतम् ॥ १४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—वैद्यनाथमें बगलाका सर्वोत्तमस्थान है मणिद्वीपमें मुझ भुवनेश्वरीका परम स्थान है ॥ १४ ॥

श्रीमत्त्रिपुरभैरव्याः कामाख्यायोनिमंडलम् ॥
भूमंडलेक्षेत्ररत्नंमहामायाधिवासितम् ॥ १५ ॥

भा०टी०—जिस कामरूदेशमें सतीका योनिमंडलगिरा है वह कामाख्या योनिमंडल त्रिपुरभैरवीका महास्थान है भूमण्डलमें यह क्षेत्ररत्न है इस कारण ऐसा दूसरा स्थान नहीं है ॥ १५ ॥

नातःपरतरं स्थानंक्वचिदस्तिधरातले ॥
प्रतिमासंभवेद्देवीयत्रसाक्षाद्रजस्वला ॥ १६ ॥

भा०टी०—इससे अधिक पृथ्वीमें ऐसा कोई स्थान नहीं है इस स्थानमें महामाया प्रत्येक मासमें रजस्वला होती है ॥ १६ ॥

तत्रत्यादेवताः सर्वाः पर्वतात्मकतांगताः ॥
पर्वतेषुवसंत्येवमहत्योदेवताअपि ॥ १७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—यहांके सब देवता पर्वतभावको प्राप्त हो वहां निवास करते हैं ॥ १७ ॥

तत्रत्यापृथिवीसर्वादेवीरूपास्मृताबुधैः ॥
नातः परतरंस्थानंकामाख्यायानिमंडलात् ॥ १८ ॥

भा०टी०—वहांकी सब पृथ्वी देवीरूप है ऐसा पंडित कहते हैं, इस कामाख्या योनिमण्डलसे श्रेष्ठ दूसरा स्थान नहीं है ॥ १८ ॥

गायत्र्याश्चपरंस्थानंश्रीमत्पुष्करमीरितम् ॥
अमरेशेचंडिकास्यात्प्रभासे पुष्करेक्षिणी ॥ १९ ॥

भा०टी—पुष्करक्षेत्र गायत्रीका परम स्थान है अमरेश चण्डिका और प्रभासमें पुष्करेक्षिणी निवास करती हैं ॥ १९ ॥

नैमिषेतुमहास्थानेदेवीसालिङ्गधारिणी ॥
पुरुहूतापुष्कराक्षेआषाढौचरतिस्तथा ॥ २० ॥

भा०टी०—नैमिषमहास्थानमें लिंगधारिणी देवी. पुष्कराक्षमें पुरुहूता और आषाढी स्थानमें रति निवास करती हैं ॥ २१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चंडमुंडीमहास्थानेदंडिनीपरमेश्वरी ॥
भारभूतौभवेद्भूतिर्नाकुलेनकुलेश्वरी ॥ २१ ॥

भा०टी०—चण्डमुण्डके महास्थानमें दण्डिनी, परमेश्वरी भारभूतिस्थानमें भूति, नकुलस्थानमें नकुलेश्वरी निवास करती हैं ॥ २१ ॥

चंद्रिकातुहरिश्चंद्रेश्रीगिरौशांकरीस्मृता ॥
जप्येश्वरेत्रिशूलास्यात्सूक्ष्माचाम्रातकेश्वरे॥२२॥

भा०टी०—हरिश्चन्द्रस्थानमें चन्द्रिका, श्रीपर्वतमें शांकरी जप्येश्वरमें त्रिशूला और आम्रातकेश्वरमें सूक्ष्मा निवास करती हैं ॥ २२ ॥

शांकरीतुमहाकालेशर्वाणीमध्यमाभिधे ॥
केदाराख्येमहाक्षेत्रेदेवीसामार्गदायिनी ॥ २३ ॥

भा०टी०—उज्जयनीमें शांकरी मध्यमेश्वरमें शर्वाणी केदार महाक्षेत्रमें प्रसिद्ध मार्गदायिनी ॥ २३ ॥

भैरवाख्येभैरवीसागयायांमंगलास्मृता ॥
स्थाणुप्रियाकुरुक्षेत्रेस्वायंभुव्यपिनाकुले ॥२४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—भैरवस्थानमें भैरवी, गयामें मंगला, कुरुक्षेत्रमें स्थाणुप्रिया, नाकुलमें स्वायम्भुवी ॥ १४ ॥

कनखलेभवेदुग्राविश्वेशाविमलेश्वरे ॥
अट्टहासेमहानंदामहेंद्रेतुमहांतका ॥ २५ ॥

भा०टी०—कनखलमें उग्रा, विमलेश्वरमें विश्वेशा अट्टहासमें महानन्दा, महेन्द्र पर्वतमें महान्तका ॥ २५ ॥

भीमेभीमेश्वरीप्रोक्तास्थानेवस्त्रापथेपुनः ॥
भवानीशांकरीप्रोक्तारुद्राणित्विर्धकोटिके ॥२६॥

भा०टी०—भीम स्थानमें भीमेश्वरी, वस्त्रापथमें भवानी शांकरी अर्धकोटि स्थानमें रुद्राणी ॥ २६ ॥

अविमुक्तेविशालाक्षीमहाभागामहालये ॥
गोकर्णेभद्रकर्णीस्याद्भद्रास्याद्भद्रकर्णके ॥२७॥

भा०टी०—अविमुक्त स्थानमें विशालाक्षी, महालयमें महाभागा, गोकर्णमें भद्रकर्णी, भद्रकर्णमें भद्रा ॥ २७॥

उत्पलाक्षीसुवर्णाक्षेस्थाण्वीशास्थाणुसंज्ञिके ॥
कामलालयेतुकमलाप्रचंडाच्छगलंडके ॥ २८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—सुवर्णाख्य स्थानमें उत्पलाक्षी, स्थाणु-स्थानमें स्थाण्वीशा, कमलालयमें कमला, छगलंडस्थान, (दक्षिण देशमें समुद्रके निकट है) में प्रचण्डा ॥ २८॥

कुरंडलेत्रिसंध्यास्यान्माकोटेमुकुटेश्वरी ॥
मंडलेशेशांडकीस्यात्कालीकालंजरेपुनः ॥२९॥

भा०टी०—कुरण्डमें त्रिसंध्या, माकोटमें मुकुटेश्वरी मण्डलेशमें शाण्डकी, कालंजरमें काली ॥ २९ ॥

शंकुकर्णेध्वनिः प्रोक्तास्थूलास्यात्स्थूलकेश्वरे ॥
ज्ञानिनांहृदयांभोजेहृल्लेखापरमेश्वरी ॥ ३० ॥

भा०टी०—शंकुकर्णमें ध्वनि, स्तूलकेश्वरमें स्थूला और ज्ञानियोंके हृदयकमलमें परमेश्वरी देवी हृल्लेखा प्राणशक्ति रूपसे निवास करती हैं ॥ ३० ॥

प्रोक्तानीमानिस्थानानिदेव्याः प्रियतमानिच ॥
तत्तत्क्षेत्रस्यमाहात्म्यंश्रुत्वापूर्वंनगोत्तम ॥३१ ॥

भा०टी—हे नगेश्वर ! यह सब स्थान देवीके प्रिय हैं, उन उन क्षेत्रोंका माहात्म्य सुनकर ॥ ३१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तदुक्तेनविधानेनपश्चादेवींप्रपूजयेत् ॥
अथवासर्वक्षेत्राणिकाश्यांसंतिनगोत्तम ॥ ३२ ॥

भा०टी०—उसमें कही विधिके अनुसार देवीकी पूजा कर हे नगोत्तम ! अथवा सब पुण्यक्षेत्र काशीमें विद्यमान हैं ॥ ३२ ॥

तत्रनित्यंवसन्नित्यंदेवीभक्तिपरायणः ॥
तानिस्थानानिसंपश्यज्जपन्देवींनिरंतरम् ॥३३॥

भा०टी०—देवीकी भक्तिमें तत्पर मनुष्य नित्य काशीमें निवास करै उन स्थानोंको देखताहुआ निरन्तर देवीका जप करै ॥ ३३ ॥

ध्यायस्तच्चरणांभोजंमुक्तोभवतिबंधनात् ॥
इमानिदेवीनामानिप्रातरुत्थाययः पठेत् ॥३४॥

भा०टी०—और भगवतीके चरणकमलका ध्यान करताहुआ भवबंधनसे छूटजाता है. यह देवीके नाम जो प्रभातकाल उठकर पढताहै ॥ ३४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भस्मीभवंतिपापानितत्क्षणान्नगसत्वरम् ॥
श्राद्धकालेपठेदेतान्यमलानिद्विजाग्रतः ॥३५॥

भा०टी०—हे नगसत्तम! उसीसमय उसके पाप नष्ट हो जाते हैं और ब्राह्मणोंके समीप श्राद्धकालमें जो निर्मल नाम पढता है ॥ ३५ ॥

मुक्तास्तत्पितरःसर्वेप्रयांतिपरमांगतिम् ॥
अधुनाकथयिष्यामिव्रतानितवसुव्रत ॥ ३६ ॥

भा० टी०—उसके सब पितर मुक्त होकर परगतिको प्राप्त होते हैं हे सुव्रत! अब तुमसे व्रतोंको कहती हूं॥ ३६॥

नारीभिश्चनरैश्चैवकर्तव्यानिप्रयत्नतः ॥
व्रतमनंततृतीयाख्यंरसकल्याणिनीव्रतम्॥३७॥

भा०टी०—नरनारियोंको यत्नपूर्वक व्रतानुष्ठान करना चाहिये अनन्तर तृतीयाव्रत, रसकल्याणिनीव्रत ॥ ३७ ॥

आर्द्रानंदकरंनाम्नातृतायायाव्रतंचयत् ॥
शुक्रवारव्रतंचवतथाकृष्णचतुर्दशी ॥ ३८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—आर्द्रानन्दकरव्रत यह तृतीयाके व्रत हैं शुक्रवारका व्रत कृष्णचतुर्दशीका व्रत ॥ ३८ ॥

भौमवारव्रतंचैवप्रदोषव्रतमेवच ॥
यत्रदेवोमहादेवोदेवींसंस्थाप्यविष्टरे ॥ ३९ ॥

भा०टी०—भौमवारव्रत प्रदोषव्रत यह चारप्रकारके व्रत हैं इन व्रत और प्रदोषसमय देवदेव महादेव देवीको आसनमें बैठाय ॥ ३९ ॥

नृत्यकरातिपुरतःसार्धंदेवैर्निशामुखे ॥
तत्रोपोष्यरजन्यादौप्रदोषेपूजयेच्छिवाम् ॥४० ॥

भा०टी०—देवताओंके सहित देवीके सन्मुख नृत्य करते हैं इन व्रतोंमें उपवास कर प्रदोषके समय मंगलमयी शिवाका पूजन करै ॥ ४० ॥

प्रतिपक्षंविशेषेणतद्देवीप्रीतिकारकम् ॥
सोमवारव्रतंचैवममाऽतिप्रियकृन्नृग ॥ ४१ ॥

भा०टी०—और जो प्रति पखवारेमें ऐसा करताहै

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसपर देवी अधिक प्रसन्न होतीहै. हे नग ! सोमवारका व्रत मुझको अतिप्रिय है ॥ ४१ ॥

तत्रापिदेवींसंपूज्यरात्रौभोजनमाचरेत् ॥
नवरात्रद्वयंचैवव्रतंप्रीतिकरंमम ॥ ४२ ॥

भा०टी०—उसमेंभी देवीको पूजन कर रात्रिमें भोजन करै दोनों नवरात्रियोंमें मेरा व्रत प्रसन्न करनेवाला है ४२॥

एवमन्यान्यपिविभोनित्यनैमित्तिकानिच ॥
व्रतानिकुरुतेयोवैमत्प्रीत्यर्थंविमत्सरः ॥ ४३ ॥

भा०टी०—इस प्रकारसे और भी जो मत्सरहीन होकर मेरी प्रीतिके निमित्त नित्यनैमिक व्रत करताहै वह वे उपांग ललितादि व्रत हैं ॥ ४३ ॥

प्राप्नोतिममसायुज्यंसमेभक्तःसमेप्रियः ॥
उत्सवानपिकुर्वीतदोलोत्सवमुखान्विभो ॥४४॥

भा०टी०—इनके करनेसे मेरी सायुज्य मिलती है वह मेरा भक्त और मुझे प्रिय है फिर चैत्र शुक्ल तीजको दोला-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्सव करे शंकर सहित देवीकी कुंकुम, अगर, कपूर, मणि, वस्त्र, सुगंध, माला, धूप, दीपादिसे पूजाकर झुलावे इत्यादि और भी उत्सव करै ॥ ४४ ॥

शयनोत्सवंयथाकुर्यात्तथाजागरणोत्सवम् ॥
रथोत्सवंयथाकुर्याद्दमनोत्सवमेवच ॥ ४५ ॥

भा०टी०—आषाढपूर्णिमाको शयनोत्सव वा इसके आगेकी तीज कार्तिक पूर्णिमाको जागरणोत्सव आषाढ शुक्लतृतीयाको रथोत्सव करै; इसमें पृथ्वीको रथ, चन्द्र-सूर्यको चक्र, वेदोंको अश्व ब्रह्माको सारथि याने अनेक-मणियोंसे जटित फूलमालायुक्त रथकी कल्पना कर उसमें शिवाको बैठावे और लोकोंकी रक्षा तथा लोकोंके देखनेको अम्बा रथपरचढी हैं यह भावना करे रथके चलनेमें शत २ जय शब्द करै. हे भगवती! हम दीन जनोंकी रक्षा करो, इस प्रकार स्तोत्र पढ बाजेबजाय सीमाके समीप रथ लेजाय पूजा करै. फिर घर लावै

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उमासंहिता (शिवपुराण) में यह कथा वर्णन की है चैत्रपूर्णिमाको दमनोत्सव ॥ ४५ ॥

पवित्रोत्सवमेवापिश्रावणेप्रीतिकारकम् ॥
ममभक्तःसदाकुर्यादेवमन्यान्महोत्सवान् ॥४६॥

भा० टी०—श्रावणपूर्णिमाको पवित्रोत्सव मेरा प्रियकारक है, इस प्रकार मेरे भक्त दूसरे उत्सवोंकोभी सदा करैं ॥ ४६ ॥

मद्भक्तान्भोजयेत्प्रीत्यातथाचैवसुवासिनीः ॥
कुमारीर्बटुकांश्चापिमद्बुद्ध्यातद्गतांतरः ॥ ४७ ॥

भा० टी०—प्रीतिसे मेरे भक्त सुवासिनी कुमारी और बटुकोंको मेरा स्वरूप जानकर तद्गतचित्त हो भोजन करावें ॥ ४७ ॥

वित्तशाठ्येनरहितोयजेदेतान्सुमादिभिः ॥
यएवंकुरुतेभक्त्याप्रतिवर्षमतंद्रितः ॥ ४८ ॥

भा० टी०—वित्तशाठ्य कृपणता छोडकर कुसुमादि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्वारा इनकी पूजा करै जो सावधान हो प्रतिवर्ष भक्तिसे ऐसा करता है ॥ ४८ ॥

सधन्यःकृतकृत्योऽसौमत्प्रीतेःपात्रमंजसा ॥
सर्वमुक्तंसमासेनममप्रीतिप्रदायकम् ॥४९॥

भा०टी०—वह धन्य कृतकृत्य और मेरी प्रीतिका पात्र है इसमें सन्देह नहीं यह अपनी प्रियकर वस्तुओंका संक्षेपसे वर्णन किया ॥ ४९ ॥

नाशिष्यायप्रदातव्यं नाभक्तायकदाचन ॥५०॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कन्धे देवीगीतायामष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

भा० टी०—यह वार्ता अशिष्य और अभक्तको कभी न देनी चाहिये ॥ ५० ॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे देवीगीता भाषाटीकायामष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ नवमोऽध्यायः ९।

हिमालय उवाच।

देवदेविमहेशानिकरुणासागरेऽम्बिके ॥
ब्रूहिपूजाविधिंसम्यग्यथावद्धुनानिजम् ॥ १ ॥

भा०टी०—हिमालय बोले, हे महेश्वरी ! देवदेवि ! महेशानि ! करुणासागर ! जगदम्बा ! अब भलीप्रकार अपने पूजाविधानको कहिये ॥ १ ॥

श्रीदेव्युवाच।

वक्ष्येपूजाविधिंराजन्नंबिकायायथाप्रियम् ॥
अत्यंतश्रद्धयासार्धंशृणुपर्वतपुंगव ॥ २ ॥

भा०टी०—श्रीदेवी बोली, हे राजन् ! मैं अपनी प्रियकर पूजाविधि कहती हूं. हे पर्वतश्रेष्ठ ! तुम अतिशय श्रद्धापूर्वक श्रवण करो ॥ २ ॥

द्विविधाममपूजास्याद्बाह्याचाऽभ्यंतराऽपिच ॥
बाह्याऽपिद्विविधाप्रोक्तावैदिकीतांत्रिकीतथा ॥ ३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—बाह्य अभ्यन्तरके भेदसे मेरी पूजा दो प्रकारकी है उसमें बाह्य वैदिक और तांत्रिक भेदसे दो प्रकारकी है ॥ ३ ॥

वैदिक्यर्चाऽपिद्विविधामूर्तिभेदेनभूधर ॥
वैदिकीवैदिकैःकार्यावेददीक्षासमन्वितैः ॥ ४ ॥

भा०टी०—हे भूधर ! वैदिकपूजामें मूर्तिभेदसे दो प्रकारकी है, उसमें विराट्रूपसे देवीका ध्यानरूप पहली पूजा और करचरणादियुक्त देवीकी मूर्तिका ध्यानकर वैदिकमंत्रोंसे देवीका आवाहन और विसर्जन करना, यह दूसरी पूजा है. इनमें वैदिकमंत्रमें दीक्षितपुरुषको वेदविधिके अनुसार वैदिकी पूजा ॥ ४ ॥

तंत्रोक्तदीक्षावद्भिस्तुतांत्रिकीसंश्रिताभवेत् ॥
इत्थंपूजारहस्यंचनज्ञात्वाविपरीतकम् ॥ ५ ॥

भा०टी०—और तंत्रमार्गमें दीक्षित पुरुषको तंत्रोक्तविधिसे पूजा करनी चाहिये, जो मूढ इस प्रकार पूजा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहस्य न जानकर वैदिक तांत्रिक रीतिसे और तांत्रिकदीक्षावाले वैदिकरीतिसे पूजा करै तो ॥ ५ ॥

करोतियोनरोमूढःसपतत्येवसर्वथा ॥
तत्रयावैदिकीप्रोक्ताप्रथमातांवदाम्यहम् ॥ ६ ॥

भा०टी०--इस विपरीतभावके कारण वह मूढ पतित होता है अब प्रथम वैदिकी पूजाका विषय वर्णन करती हूं ॥ ६ ॥

यन्मेसाक्षात्परंरूपंदृष्टवानसिभूधर ॥
अनंतशीर्षनयनमनंतचरणंमहत् ॥ ७ ॥

भा०टी०--हे भूधर! जो तुमने मेरे साक्षात् पररूपका दर्शन किया है जिसमें अनन्तशिर अनन्तनेत्र अनन्त चरण हैं ॥ ७ ॥

सर्वशक्तिसमायुक्तंप्रेरकंयत्परात्परम् ॥
तदेवपूजयेन्नित्यंनमेद्धचायेत्स्मरेदपि ॥ ८ ॥

भा०टी०--जो सब शक्तिसे युक्त प्रेरक परात्पर है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसीका निरन्तर पूजन करै इसीका नमस्कार ध्यान और स्मरण करै ॥ ८ ॥

इत्येतत्प्रथमाचार्यायःस्वरूपंकथितंनग ॥
शांतःसमाहितमनादंभाहंकारवर्जितः ॥ ९ ॥

भा०टी०—हे नगराज ! यही प्रथम वैदिकी पूजाका स्वरूप है यह पूजा शान्त, सावधानमन, दंभ अहंकार हीन होकर करनी चाहिये ॥ ९ ॥

तत्परोभवतद्याजीतदेवशरणंव्रज ॥
तदेवचेतसापश्यजपध्यायस्वसर्वदा ॥ १० ॥

भा०टी०—उसीमें तत्पर उसीका यजन और उसीकी शरण हो उसको चित्तसे देखकर सदा जप ध्यान करो १०

अनन्ययाप्रेमयुक्तभक्त्यामद्भावमाश्रितः ॥
यज्ञैर्यजतपोदानैर्मामेवपरितोषय ॥ ११ ॥

भा०टी०—अनन्यप्रेमभक्तिसे मेरे भावको आश्रित हो यज्ञोंसे मेरा यजन और तप दानसे मुझ विराट्रूपको ही सन्तुष्ट करो ॥ ११ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इत्थंममाऽनुग्रहतोमोक्ष्यसेभवबंधनात् ॥
मत्परायेमदासक्तचित्ताभक्तवरामताः ॥ १२ ॥

भा०टी०—इस प्रकार करते हुए मेरे अनुग्रहसे संसार बंधनसे मुक्त होंगे मुझमें तत्पर और मुझमें आसक्त चित्त भक्तश्रेष्ठ कहे हैं ॥ १२ ॥

प्रतिजानेभवादस्मादुद्धराम्यचिरेणतु ॥
ध्यानेनकर्मयुक्तेनभक्तिज्ञानेनवापुनः ॥ १३ ॥

भा०टी०—यह मेरी प्रतिज्ञा है. ऐसे भक्तोंको मैं बहुत शीघ्र उद्धार करदेती हूं हे गिरिराज! कर्मयुक्त ध्यान योग, अथवा भक्तिमिश्रित ज्ञानयोगसे ही ॥ १३ ॥

प्राप्याऽहंसर्वथाराजन्नतुकेवलकर्मभिः ॥
धर्मात्संजायतेभक्तिर्भक्त्यासंजायतेपरम् ॥ १४ ॥

भा०टी०—मैं प्राप्त होसकती हूं केवल कर्मसेही कोई मुझे प्राप्त नहीं करसकता धर्मसे भक्ति और भक्तिसे ज्ञानकी उत्पत्ति होती है ॥ १४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रुतिस्मृतिभ्यामुदितंयत्सधर्मः प्रकीर्तितः ॥
अन्यशास्त्रेणयःप्रोक्तोधर्माभासःसउच्यते॥ १५॥

भा०टी०—श्रुतिस्मृतिमें प्रतिपादन किये कर्मकोही धर्म कहते हैं श्रुतिस्मृतिके विपरीत अन्य शास्त्रोंका कहा-हुआ धर्म यथार्थ धर्म नहीं किन्तु धर्माभास हैं ॥ १५॥

सर्वज्ञात्सर्वशक्तेश्चमत्तोवेदःसमुत्थितः ॥
अज्ञानस्यममाऽभावादप्रमाणानचश्रुतिः॥ १६॥

भा०टी—सर्वज्ञ और सब शक्तिसम्पन्न मेरे स्वरूपसेही वेद प्रगट हुए हैं, इस कारण वेदके अप्रमाणकी शंका नहीं होसकती. कारण कि, मैं अज्ञानरहित हूं इससे मुझसे प्रगट हुए वेद भ्रान्तिरहित सत्यवस्तु हैं दूसरे शास्त्र अज्ञपुरुषों-द्वारा कल्पित हैं इससे वह वेदके सन्मुख अप्रमाण हैं इसीसे उनमेंका कहा हुआ धर्म धर्माभास है फल पक्षमें वेदोक्त धर्मही यथार्थ धर्म है ॥ १६ ॥

स्मृतयश्चश्रुतेरर्थंगृहीत्वैवचनिर्गताः ॥
मन्वादीनास्मृतीनांचततःप्रामाण्यमिष्यते ॥ १७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—वेदोंका अर्थ ग्रहणकर स्मृतिशास्त्र प्रणीत हुआ है इससे मनुआदि महर्षि प्रणीत स्मृतिशास्त्रका ग्रहण होता है ॥ १७ ॥

क्वचित्कदाचित्तंत्रार्थकटाक्षेणपरोदितम् ॥
धर्मंवदंतिसोंशस्तुनवैग्राह्योऽस्तिवादिकैः ॥१८॥

भा०टी०—स्मृति और पुराणादिमें जिस किसी स्थलमे कटाक्षपूर्वक वेदविरुद्ध विषय कहागया वह वादकाको ग्रहण न करना चाहिये ॥ १८ ॥

अन्येषांशास्त्रकर्तृणामज्ञानप्रभवत्वतः ॥
अज्ञानदोषदुष्टत्वात्तदुक्तेर्नप्रमाणता ॥ १९ ॥

भा०टी—कारण कि, वेदके अतिरिक्त अन्यशास्त्रकर्ताओंके वचन अज्ञानसंभूत हैं तो अज्ञानदोष वर्तमान होनेसे उनकी उक्तिका प्रमाण नहीं होसकता ॥ १९ ॥

तस्मान्मुमुक्षुर्धर्मार्थंसर्वथावेदमाश्रयेत् ॥
राजाज्ञाचयथालोकेहन्यतेनकदाचन ॥ २० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—इस कारण मुमुक्षुओंको धर्मज्ञानके निमित्त सर्वथा वेदमार्गका आश्रय लेना चाहिये जिस प्रकार लोकमें राजाकी आज्ञा कभी नष्ट नहीं होती ॥ २० ॥

सर्वेशान्याममाज्ञासाश्रुतिस्त्याज्याकथंनृभिः ॥
मदाज्ञारक्षणार्थंतुब्रह्मक्षत्रियजातयः ॥ २१ ॥

भा०टी०—इसी प्रकार सर्वेशानी राजराजेश्वरी मेरी श्रुतिरूप आज्ञाको मनुष्य कैसे त्यागसकते हैं अपनी आज्ञा रक्षा करनेको मैंने ब्राह्मण क्षत्रियजाति ॥ २१ ॥

मयासृष्टास्ततोज्ञेयंरहस्यंमेश्रुतेर्वचः ॥
यदायदाहिधर्मस्यग्लानिर्भवतिभूधर ॥ २२ ॥

भा०टी०—उत्पन्न की है इस कारण मेरा रहस्यरूप श्रुति वाक्य अवश्य जानना चाहिये, हे भूधर ! जब जब धर्मकी ग्लानि होती है ॥ २२ ॥

अभ्युत्थानमधर्मस्यतदावेषान्बिभर्म्यहम् ॥
देवदैत्यविभागश्चाऽप्यतएवाऽभवन्नृप ॥ २३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—और अधर्मका अभ्युत्थान होता है तब मैं शाकंभरी आदि अनेक वेष रामकृष्णादि अवतार धारण करती हैं वेदके सद्भावसेही वेदरक्षक देवता और वेदविनाशक दैत्य हूं यह विभाग कल्पित हुआ है ॥२३॥

येनकुर्वंतितद्धर्मंतच्छिक्षार्थंमयासदा ॥
संपादितास्तुनरकास्त्रासोयच्छ्रवणाद्भवेत्॥२४॥

भा०टी०—जो वेदोक्तधर्मका अनुष्ठान नहीं करते उनकी शिक्षाके निमित्तही नरकोंकी कल्पना की है जिनकी वार्ता मात्रके श्रवणसे उनको भय प्राप्त होगा ॥ २४ ॥

योवेदधर्ममुज्झित्वधर्ममन्यंसमाश्रयेत् ॥
राजाप्रवासयेद्देशान्निजादेतानधर्मिणः ॥ २५ ॥

भा०टी०—जो वेदधर्मको छोडकर दूसरे धर्मोंका आश्रय करते हैं राजाको उन अधर्मियोंको अपने देशसे निकलवा देना चाहिये ॥ २५ ॥

ब्राह्मणैर्नचसंभाष्याःपंक्तिग्राह्यानचद्विजैः ॥
अन्यानियानिशास्त्राणिलोकेऽस्मिन्विविधानिच २६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—ब्राह्मणोंको उनके साथ संभाषण न करना चाहिये और उनको ब्रह्मभोजकी पंक्तिमें ग्रहण न करना चाहिये इस लोकमें जो और भी अनेकप्रकारके शास्त्र हैं ॥ २६ ॥

श्रुतिस्मृतिविरुद्धानितामसान्येवसर्वशः ॥
वामंकापालकंचैवकौलकंभैरवागमः ॥ २७ ॥

भा०टी०—उनमें जो श्रुति स्मृति विरुद्ध हैं वे सब तामसीहैं यदि कहो कि, फिर शिवने तंत्र क्यों बनाये इसपर कहते हैं वाम, कापालक, कौल, भैरवागम ॥ २७ ॥

शिवेनमोहनार्थायप्रणीतोनान्यहेतुकः ॥
दक्षशापाद्भृगोःशापाद्धीचस्यचशापतः ॥२८॥

भा०टी—जो पापी होकर वेदधर्माचरण करते हैं अर्थात् जब पापियोंकी वेदधर्माचरणसे सद्गति होगी तो कर्मकी विचित्रताके अभावसे प्रपंच विचित्र न होगा इस प्रकार उनको अनेक फल दिखाकर उनकी प्रवृत्तिको मोहित कर वेदसे श्रद्धा च्यावित करनेको शिवजीने मोह-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नार्थं तंत्र निर्माण किये हैं कारण कि, पापी होनेसे वेदका अधिकार नहीं रहता इससे वे पापका फल पाकर शुद्ध हो पश्चात् वेदानुसार कर्म करै तथा दक्षके शाप, भृगुके शाप, दधीचके शापसे जो ॥ २८ ॥

दग्धायेब्राह्मणवरावेदमार्गबहिष्कृताः ॥
तेषामुद्धरणार्थायसोपानक्रमतःसदा ॥ २९ ॥

भा०टी०—ब्राह्मण वेदसे बहिष्कृत हुए हैं उन ब्राह्मणोंको सोपानक्रमसे जन्मान्तरमें वेदाधिकार प्राप्तिके निमित्त कुछ परमेश्वरकी उपासना वक्तव्य है यह विचार कर ॥ २९ ॥

शैवाश्चवैष्णवाश्चैवसौराःशाक्तास्तथैवच ॥
गाणपत्याआगमाश्चप्रणीताःशंकरेणतु ॥ ३० ॥

भा०टी—शैव, वैष्णव, सौर, शाक्त, गाणपत्य यह पांचप्रकारके आगम शंकरने निर्माण किये ॥ ३० ॥

तत्रवेदाविरुद्धोंशोप्युक्तएवक्वचित् क्वचित् ॥
वैदिकैस्तद्भेदोषानभवत्येवकर्हिचित् ॥ ३१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—इनमें किसी २ अंशमें वेदानुकूल और कहीं २ वेदके विरुद्धभी कहा है इनमें वैदिकोंको वेदानुकूल अंशग्रहणमें दोष नहीं है कारण कि, वायुसंहितामें लिखा है श्रौत, अश्रौत भेदसे शिवागम दो प्रकारका है श्रौत वेदका सार और अश्रौत स्वतंत्र है, वैदिकोंको श्रौतअंश ग्रहण करना कहा है ॥ ३१ ॥

सर्वथावेदभिन्नार्थेनाधिकारीद्विजोभवेत् ॥
वेदाधिकारहीनस्तुभवेत्तत्राधिकारवान् ॥ ३२॥

भा०टी०—सर्वथा वेदविरुद्ध अंशमें ब्राह्मण अधिकारी नहीं है जिनका वेदमें अधिकार नहीं है वही उस वेदविरुद्ध अंशके अधिकारी हैं ॥ ३२ ॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेनवैदिकोवेदमाश्रयेत् ॥
धर्मेणसहितंज्ञानंपरंब्रह्मप्रकाशयेत् ॥ ३३ ॥

भा०टी०—इस कारण वैदिकद्विजाति सब प्रयत्नसे वेदका आश्रय करै कारण कि, वेदोक्त धर्मानुष्ठानसे उत्पन्न हुआ ज्ञानही परब्रह्मका प्रकाशक है ॥ ३३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सर्वैषणाः परित्यज्यमामेवशरणंगताः ॥
सर्वभूतदयावंतोमानाहंकारवर्जिताः ॥ ३४ ॥

भा०टी०—जो सब प्रकारकी वासना त्यागकर मेरी शरण हुए हैं जो सब प्राणियोंमें दया करते मान और अहंकारसे वर्जित हैं ॥ ३४ ॥

मच्चित्तामद्गतप्राणामत्स्थानकथनेरताः ॥
संन्यासिनोवनस्थाश्चगृहस्थाब्रह्मचारिणः॥३५॥

भा०टी०—मुझमें चित्त लगाये मुझमें प्राण अर्पण किये मेरे स्थानवर्णनमें निरत सन्यासी, वनवासी, गृहस्थ, ब्रह्मचारी ॥ ३५ ॥

उपासंतेसदाभक्त्यायोगमैश्वरसंज्ञितम् ॥
तेषांनित्याभियुक्तानामहमज्ञानजंतमः ॥ ३६ ॥

भा०टी०—जो सदा भक्तिसे इस विराट्स्वरूप उपासनानामक योगका अनुष्ठान करते हैं सदा भक्तिसे उपासना करते हैं उन नित्ययोगानुष्ठान करनेवालोंका मैं अज्ञानसे उत्पन्न हुआ अंधकार ॥ ३६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्ञानसूर्यप्रकाशेननाशयाम्यनसंशयः ॥
इत्थंवैदिकपूजायाः प्रथमायानगाधिप ॥ ३७॥

भा०टी०—अपने ज्ञानरूपी सूर्यके प्रकाशसे नष्ट कर-देती हूं इसमें सन्देह नहीं हे पर्वतराज ! इस प्रकार यह मैंने पहली वैदिक पूजाका ॥ ३७ ॥

स्वरूपमुक्तंसंक्षेपाद्वितीयायाअथोब्रुवे ॥
मूर्तौवास्थंडिलेवापितथासूर्येंदुमंडले ॥ ३८ ॥

भा०टी०—स्वरूप संक्षेपसे कहा अब करचरणादि विशिष्ट मूर्तिपूजा दूसरी कहती हूं मूर्तिमें स्वच्छ भूमिमें सूर्यमंडल, चन्द्रमंडल ॥ ३८ ॥

जलेऽथवाबाणालिंगेयंत्रेवाऽपिमहापटे ॥
तथाश्रीहृदयांभोजेध्यात्वादेवींपरात्पराम् ॥३९॥

भा०टी०—जल, बाणलिंग, यंत्र, वस्त्र, हृदयकमलमें परात्परा जगदम्बिका देवीका ध्यान करै ॥ ३९ ॥

सगुणांकरुणापूर्णांतरुणीमरुणारुणाम् ॥
सौंदर्यसारसीमांतांसर्वावयवसुंदराम् ॥ ४० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—जो सगुण अर्थात् सत्त्वादिगुणसम्पन्न करुणारस परिपूर्ण युवती अरुणवर्ण सुन्दरताके सारकी सीमा सर्वाङ्गसुन्दरी ॥ ४० ॥

शृंगाररससंपूर्णांसदाभक्तार्तिकातराम् ॥
प्रसादसुमुखीमंबांचंद्रखंडशिखंडिनीम् ॥ ४१ ॥

भा०टी०—शृंगाररसमें परिपूर्ण भक्तोंके दुःख देखतेही कातरहोनेवाली प्रसादसे सुमुखी, अम्बा अर्धचन्द्रसे शोभित शिरवाली ॥ ४१ ॥

पाशांकुशवराभीतिधरामानंदरूपिणीम् ॥
पूजयेदुपचारैश्चयथावित्तानुसारतः ॥ ४२ ॥

भा०टी०—चारों हाथोंमें पाश, अंकुश, वर और अभय धारण किये, आनंदरूपिणीका वित्तके अनुसार षोडश उपचारसे पूजन करै ॥ ४२ ॥

यावदांतरपूजायामधिकारोभवेन्नहि ॥
तावद्बाह्यामिमांपूजांश्रयेज्जातुतांत्यजेत् ॥४३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी–जबतक आभ्यन्तर पूजामें अधिकार न हो तब तक इसीप्रकार पूजा करता रहै जब आभ्यन्तर पूजाका अधिकार होजाय तो इच्छासे बाह्यपूजा छोडदे॥४३॥

आभ्यंतरातुयापूजासातुसंविल्लयः स्मृतः ॥
संविदेवपरंरूपमुपाधिरहितंमम ॥ ४४ ॥

भा०टी०–इपाधिरहित सांवित् वा ब्रह्मही मेरा स्वरूप है, इस संवित् स्वरूपमें चित्तके लीन करनेकोही आभ्यन्तरपूजा कहते हैं ॥ ४४ ॥

अतःसंविदिमद्रूपेचेतःस्थाप्यांनिराश्रयम् ॥
संविद्रूपातिरिक्तंतुमिथ्यामायामयंजगत् ॥ ४५ ॥

भा०टी०–इस कारण मेरे सवित्रूपमें एकान्तभावसे चित्त स्थापन करै. कारण कि, संवित् वा ब्रह्मके अतिरिक्त अन्य समस्त जगत् मायामय मिथ्या है॥४५॥

अतःसंसारनाशायसाक्षिणीमात्मरूपिणीम् ॥
भावयेन्निर्मनस्केनयोगयुक्तेनचेतसा ॥ ४६ ॥

भा०टी०–इस कारण संसार नाशके निमित्त आत्म-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वरूपिणी सर्वसाक्षिणी मेरी निर्विकल्प भक्तियोगयुक्त चित्तसे भावना करै ॥ ४६ ॥

अतः परंबाह्यपूजाविस्तारः कथ्यतेमया ॥
सावधानेनमनसाशृणुपर्वतसत्तम ॥ ४७ ॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे देवी-गीतायांनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

भा०टी०—इसके आगे बाह्यपूजाका विस्तार कहती हूं हे पर्वतसत्तम ! तुम सावधान मनसे सुनो ॥ ४७ ॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे देवीगीता भाषाटीकायां नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ दशमोऽध्यायः १०.

श्रीदेव्युवाच ।

प्रातरुत्थायशिरसिसंस्मरेत्पद्ममुज्ज्वलम् ॥
कर्पूराभंस्मरेत्तत्रश्रीगुरुंनिजरूपिणम् ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—श्रीदेवी बोलीं, हे पर्वतराज ! साधक प्रभातही उठकर मस्तकके ब्रह्मरंध्रमें स्थित कर्पूरवर्णकी समान उज्ज्वल सहस्रार कमलका स्मरण कर उसमें अपने अनुरूप गुरुके समान आकार स्मरण करै ॥ १ ॥

सुप्रसन्नंलसद्भूषाभूषितंशक्तिसंयुतम् ॥
नमस्कृत्यततोदेवींकुंडलींसंस्मरेद बुधः ॥ २ ॥

भा०टी०—जो प्रसन्नतायुक्त उत्तम वेषसे भूषित भूषणोंसे सम्पन्न शक्ति पत्नीसहित है इस प्रकार पत्नीसहित गुरुका ध्यान करके देवी कुंडलिनीका ध्यान करै ॥ २॥

प्रकाशमानांप्रथमेप्रयाणेप्रतिप्रयाणेऽप्यमृतायमानाम्
अंतःपदव्यामनुसंचरंतीमानंदरूपामबलांप्रपद्ये॥ ३ ॥

भा०टी०-जो मूलाधारसे ब्रह्मरंध्रमें गमन करनेके समय प्रकाशमान अर्थात् चैतन्यरूपमें भासमान है और ब्रह्मरंध्रसे मूलाधारमें गमनकरनेके निमित्त आनन्दामृतमयी है, जो इस प्रकार सुषुम्ना पंथमें गमनागमनशील है उस पराशक्ति आनन्दरूपिणी कुंडलिनीकी मैं शरण होता हूं ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ध्यात्वैवंतच्छिखामध्येसच्चिदानंदरूपिणीम् ॥
मांध्यायेदथशौचादिक्रियाः सर्वाःसमापयेत् ॥४॥

भा०टी०—इस प्रकार ध्यान कर मूलाधारमें स्थित चैतन्यरूप अग्निकी कुंडलिनीरूप शिखाके भीतर मुझ सच्चिदानंदरूपिणीका ध्यान करै फिर शौच संध्यावंदनादि सब कार्य करै ॥ ४ ॥

अग्निहोत्रंततोहुत्वामत्प्रीत्यर्थंद्विजोत्तमः ॥
होमांतेस्वासनेस्थित्वापूजासंकल्पमाचरेत् ॥५॥

भा०टी०—फिर वह द्विजोत्तम मेरी प्रीतिके निमित्त अग्निहोत्र करके होमान्तमें आसनपर आकर पूजाका संकल्प करै ॥ ५ ॥

भूतशुद्धिंपुराकृत्वामातृकान्यासमेवच ॥
ह्लेखामातृकान्यासंनित्यमेवसमाचरेत् ॥ ६ ॥

भा०टी०—इससे पहले भूतशुद्धि और मातृका न्यास करै मातृकान्यास ह्लेखा अर्थात् मायाबीजद्वारा करै६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मूलाधारेहकारंचहृदयेचरकारकम् ॥
भ्रूमध्येतद्वदीकारंह्रींकारंमस्तकेन्यसेत् ॥ ७ ॥

भा०टी०—मूलाधारमें हकार हृदयमें रकार भ्रूमध्यमें ईकार मस्तकमें ह्रींकारका न्यास करै ॥ ७ ॥

तत्तन्मंत्रोदितान्न्यासान्सर्वान्समाचरेत् ॥
कल्पयेत्स्वात्मनोदेहेपीठंधर्मादिभिः पुनः ॥८॥

भा०टी०-फिर प्रत्येक मंत्रमें किये न्यासोंको यथोक्त करै अपने देहमें धर्मादि पीठकल्पना कर पूजा करै ॥८॥

ततोध्यायेन्महादेवींप्राणायामैर्विजृंभिते ॥
हृदंभोजेममस्थानेपंचप्रेतासनेबुधः ॥ ९ ॥

भा०टी०—फिर प्राणायामद्वारा विकसित हृदय

---

१ उस पीठपर अनन्तायनमः। पद्मायनम। अं सूर्यमंडलायनमः। सं सत्त्वायनमः। रं रजसेनमः तं तमसेनमः। पूर्वादिदिशाओंमें आं आत्मनेनमः। अं अंतरात्मनेनमः।पं परमात्मने नमः। ह्री ज्ञानात्मने नमः फिर पद्मके पूर्वादिदलमें जयायै नमः। विजयायैनमः। अपराजितायैः। नित्यायैनमः। विलासिन्यैनमः। दोग्ध्र्यै नमः। अघोरायैनमः। मंगलायैनमः। यह पीठशक्तिकी पूजा शारदामें है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कमलरूप मेरे स्थानमें पंच प्रेतासनपर स्थित महादेवीकी चिन्तना करै ॥ ९ ॥

ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चईश्वरश्चसदाशिवः ॥
एतेपंचमहाप्रेताः पादमूलेममास्थिताः ॥ १० ॥
पंचभूतात्मकाह्येतेपंचावस्थात्मकाअपि ॥
अहंत्वव्यक्तरूपिद्रूपातदतीतास्मिसर्वथा ॥११॥

भा०टी०—ब्रह्मा विष्णु, रुद्र, ईश्वर सदाशिव यह पंच प्रेत कहे जाते हैं यह मेरे पादमूलमें सदा स्थित रहते हैं, यह पृथ्वी, अपू, तेज, वायु, आकाश इन पांच महाभूतोंके और जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय, अतीत इन पांचों अवस्थाओंके अधिपति हैं और मैं पंचभूत तुरीय और अतीत अवस्थासेभी परे ब्रह्मरूपिणी हूं ॥ १०॥११ ॥

ततोविष्टरतांयाताः शक्तितंत्रेषुसर्वदा ॥
ध्यात्वैवंमानसैर्भोगैः पूजयेन्मांजपेदपि ॥ १२॥

भा०टी०—इसी कारण यह मेरे आसनको प्राप्त हुए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं यह शक्तितंत्रमें प्रसिद्ध हैं इस प्रकार मेरा ध्यान कर मानस उपचारसे मेरा पूजन और जप करै ॥ १२ ॥

जपंसमर्प्यश्रीदेव्यैततोऽर्घ्यस्थापनंचरेत् ॥
पात्रासादनकंकृत्वापूजाद्रव्याणिशोधयेत् ॥१३॥

भा टी०—जपका फल श्रीदेवीको समर्पण कर फिर अर्घ्य स्थापन करै फिर अर्घ्यपात्रादिको स्थापन करके पूजाके द्रव्योंकी शुद्धि करै ॥ १३ ॥

जलेनतेनमनुनाचास्त्रमंत्रेणदेशिकः ॥
दिग्बंधंचपुराकृत्वागुरून्नत्वाततः परम्॥१४ ॥

भा०टी०—साधक मूलमंत्र वा फट् इस मंत्रसे अभिमंत्रित किये जलसे सब पूजाद्रव्य शुद्ध करै दिग्बंधकर गुरुओंको प्रणाम पूर्वक ॥ १४ ॥

तदनुज्ञांसमादायबाह्यपीठेततः परम् ॥
हृदिस्थांभावितांमूर्तिममदिव्यांमनोहराम्॥१५।

भा०टी०—उनकी आज्ञाको ले पूर्वोक्त यंत्रादि द्वारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बाह्यपीठमें पूर्वमें भावना कीहुई हृदयमें स्थिते मेरी मनोहर मूर्तिको ॥ १५ ॥

आवाहयेत्ततः पीठेप्राणस्थापनविद्यया ॥
आसनावाहनेचार्घ्यपाद्याद्याचमनंतथा ॥१६॥

भा०टी०—प्राण स्थापन मंत्रद्वारा आवाहन करै, फिर भक्तिपूर्वक आसन, आवाहन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन१६

स्नानंवासोद्वयंचैवभूषणानिचसर्वशः ॥
गंधंपुष्पंयथायोग्यंदत्त्वादेव्यैस्वभक्तितः॥ १७ ॥

भा०टी०—स्नान, दो वस्त्र, भूषण और गंध, पुष्प यथा-योग्य भक्तिसे देवीके निमित्त प्रदान करै ॥ १७ ॥

यंत्रस्थानामावृतीनांपूजनंसम्यगाचरेत् ॥
प्रतिवारमशक्तानांशुक्रवारोनियम्यते ॥ १८ ॥

भा०टी०—फिर भलीप्रकार यंत्रस्थ आवरण देव-ताकी पूजा करै यदि प्रतिदिन आवरण देवताकी पूजा न करसके तो शुक्रवारको करै ॥ १८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मूलदेवीप्रभारूपाःस्मर्तव्याअंगदेवताः ॥
तत्प्रभापटलव्याप्तंत्रयलोक्यंविचिंतयेत् ॥ १९॥

भा०टी०—आवरण देवताको मूलदेवीका प्रभारूप जानना चाहिये और त्रिलोकीको उसकी प्रभा मंडलसे व्याप्त चिन्तन करै ॥ १९ ॥

पुनरावृत्तिसहितांमूलदेवींचपूजयेत् ॥
गंधादिभिःसुगंधैस्तुतथापुष्पैःसुवासितैः॥२०॥

भा०टी०—इस प्रकार आवरण देवताओंको यथा-स्थानमें ध्यान और पूजादि करके फिर सावरण सायुध शक्तिसम्पन्न श्रीभुवनेश्वरीकी सुगंध गंधादि सुगंधित पुष्प ॥ २० ॥

नैवेद्यैस्तर्पणैश्चैवतांबूलैर्दक्षिणादिभिः ॥
तोषयेन्मांत्वत्कृतेननाम्नांसाहस्रकेणच ॥ २१ ॥

भा०टी०—नैवेद्य, तर्पण ताम्बूल और दक्षिणादि उपचारसे पूजा करै और हे हिमालय ! तुम्हारे किये सहस्रनामसे मुझको संतुष्ट करै ॥ २१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कवचेनचसूक्तेनाऽहंरुद्रेभिरितिप्रभो ॥
देव्यथर्वशिरोमंत्रैर्ह्लेखोपनिषद्भवैः ॥ २२ ॥

भा०टी०—तंत्रादिप्रोक्त कवच और "अहं रुद्रेभिः" यह सूक्त और भुवनेश्वरी उपनिषद् में "सर्वेवै देवा देवीमुपतस्थुः" ह्लेखा उपनिषत्स्थ मंत्र ॥ २२

महाविद्यामहामंत्रैस्तोषयेन्मांमुहुर्मुहुः ॥
क्षमापयेज्जगद्धात्रींप्रेमार्द्रहृदयोनरः ॥ २३ ॥

भा०टी०—तथा महाविद्याके महामंत्रोंसे वारंवार देवीको संतुष्ट करै और प्रेमसे आर्द्र हृदय होकर देवीसे अपना अपराध क्षमा करावै ॥ २३ ॥

पुलकांकितसर्वांगैर्बाष्परुद्धाक्षिनिःस्वनः ॥
नृत्यगीतादिघोषेणतोषयेन्मांमुहुर्मुहुः ॥ २४ ॥

भा०टी०—पुलकित अंग होकर प्रेमाश्रुसे परिपूर्ण नेत्र हो गद्गद वचनसे नृत्यगीतादिद्वारा मुझको वारंवार संतुष्ट करै ॥ २४ ॥

---

१ यह श्लोक कूर्मपुराणके बारहवें अध्यायमें है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वेदपारायणैश्चैवपुराणैःसकलैरपि ॥
प्रतिपाद्यायतोऽहंवैतस्मात्तैस्तोषयेत्तुमाम् ॥२५॥

भा०टी०--कारण कि, समस्त वेद और पुराणकी प्रतिपाद्य वस्तु मैं हूँ इस कारण वेदाध्ययन और पुराणोंके पाठद्वारा मुझे सन्तुष्ट करै ॥ २५ ॥

निजंसर्वस्वमपिमेसदेहंनित्यशोऽर्पयेत् ॥
नित्यहोमंततःकुर्याद्ब्राह्मणांश्चसुवासिनीः ॥२६॥

भा०टी०—और समस्त ऐश्वर्य अपनी देह सहित मेरे अर्पण करै फिर नित्य हवनकर ब्राह्मण और सुन्दर वस्त्रधारी कुमारी ॥ २६ ॥

बटुकान्पामरानन्यान्देवीबुद्ध्यातुभोजयेत् ॥
नत्वापुनःस्वहृदयेव्युत्क्रमेणविसर्जयेत् ॥२७॥

भा०टी०—ब्राह्मणोंके बालक तथा दूसरे पामरजनोंको भी देवीकी बुद्धिसे भोजन करावे फिर अपने हृदयमें देवीको प्रणाम कर संहार मुद्राद्वारा विसर्जन करै ॥२७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सर्वत्रह्लेखयाकुर्यात्पूजनंममसुव्रत ॥
ह्लेखासर्वमंत्राणांनायिकापरमास्मृता ॥२८॥

भा०टी०--हे सुव्रत ! सब मंत्रोंमें मायाबीज प्रधान है इस कारण मेरी सब पूजा इसी मंत्रसे करै ॥ २८ ॥

ह्लेखादर्पणेनित्यमहंतुप्रतिबिंबिता ॥
तस्मांद्ध्लेखयादत्तंसर्वमंत्रैःसमर्पितम् ॥ २९ ॥

भा०टी०--ह्लेखारूपी दर्पणमें मैं सदा प्रतिबिम्बित हूँ इस कारण हल्लेखामंत्रसे दिया हुआ मानो सब मंत्रोंसे समर्पित होता है ॥ २९ ॥

गुरुंसंपूज्यभूषाद्यैःकृतकृत्यत्वमावहेत् ॥
यएवंपूजयेद्देवींश्रीमद्भुवनसुंदरीम् ॥ ३० ॥

भा०टी०--इस प्रकार मेरी पूजा करनेपर भूषणादिसे गुरुकी पूजा करै और अपनेको कृतकृत्य जाने जो इस प्रकारसे श्रीभुवनेश्वरकी पूजा करता है ॥ ३० ॥

नतस्यदुर्लभंकिंचित्कदाचित्क्वाचिदस्तिहि ॥
देहांतेतुमणिद्वीपंममयात्येवसर्वथा ॥ ३१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—उसको कहीं कभी कुछभी दुर्लभ नहीं है, देहान्तमें वह मेरे मणिद्वीपको सर्वथा प्राप्त होता है ३१॥

ज्ञेयोदेवीस्वरूपोऽसौदेवानित्यंनमंतितम् ॥
इतितेकथितंराजन्महादेव्याःप्रपूजनम् ॥३२॥

भा०टी०—वह देवीका स्वरूपही जानना चाहिये देवता उसको नित्य नमस्कार करते हैं, हे राजन्! इस प्रकार आपसे यह देवीका पूजन कहा ॥ ३२ ॥

विमृश्यैतदशेषेणाप्यधिकारानुरूपतः ॥
कुरुमेपूजनंतेनकृतार्थस्त्वंभविष्यसि ॥ ३३ ॥

भा०टी०—इसको भलीप्रकार विचारकर अपने अधिकारके अनुसार मेरा पूजन करो इससे तुम कृतार्थ हो जाओगे ॥ ३३ ॥

इदंतुगीतिशास्त्रंमेनाऽशिष्यायवदेत्क्वचित् ॥
नाऽभक्तायप्रदातव्यंनधूर्तायचदुर्हृदे ॥ ३४ ॥

भा०टी०—यह गीताशास्त्र कभी अशिष्यके निमि न देना अभक्त धूर्त और दुर्मनवालेको न देना चाहिये ३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain . Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एतत्प्रकाशनंमातुरुद्घाटनमुरोजयोः ॥
तस्मादवश्यंयत्नेनगोपनीयमिदंसदा ॥ ३५ ॥

भा०टी०—इस शास्त्रका प्रकाश मानो माताके स्तनोंका उद्घाटन करना है, इस कारण यत्नसे इसको गुप्त रखना चाहिये ॥ ३५ ॥

देयंभक्तायशिष्यायज्येष्ठपुत्रायचैवहि ॥
सुशीलायसुवेषायदेवीभक्तियुतायच ॥ ३६ ॥

भा०टी०—भक्त शिष्य और ज्येष्ठपुत्रके निमित्त देना चाहिये तथा सुशील सुवेष देवीभक्तसे कहना उचित है ॥ ३६ ॥

श्राद्धकालेपठेदेतद्ब्राह्मणानांसमीपतः ॥
तृप्तास्तत्पितरःसर्वेप्रयांतिपरमंपदम् ॥ ३७ ॥

भा०टी०—श्राद्धकालमें यह ब्राह्मणोंके समीप पढ़े तो उसके सब पितर तृप्त होकर परमपदको प्राप्त होते हैं ॥ ३७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यास उवाच।

इत्युक्त्वासाभगवतीतत्रैवांतरधीयत ॥
देवाश्चमुदिताःसर्वेदेवीदृशंनतोऽभवन् ॥ ३८ ॥

भा०टी०—व्यासजी बोले ऐसा कहकर भगवती वहाँही अन्तर्धान होगई और देवीके दर्शनसे सब देवताभी प्रसन्न हुए ॥ ३८ ॥

व्यास उवाच।

ततोहिमालयेजज्ञेदेवीहैमवतीतुसा ॥
यागौरीतिप्रसिद्धाऽसीद्दत्तासाशंकरायच॥ ३९॥

भा०टी०—व्यासजी बोले, तब वही हैमवती देवी हिमालयके घर प्रगट होकर गौरीनामसे प्रसिद्ध हुई और शंकरने उनका पाणिग्रहण किया ॥ ३९ ॥

ततःस्कंदःसमुद्भूतस्तारकस्तेनपातितः ॥
समुद्रमंथनेपूर्वंरत्नान्यासुर्नराधिप ॥ ४० ॥

भा०टी०—तब उनसे कार्तिकेयने जन्म लाभकरके तारक असुरको मारा " गौरी उत्पत्ती ज्येष्ठशुक्ल चौथको अरुणोदयमें हुई यह रत्नावलीमें लिखाहै " यह गौरीकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्पत्ति कही. अब लक्ष्मीकी उत्पत्ति सुनो. पूर्वमें समुद्र मंथनेके समय अनेक रत्न प्रगट हुए थे ॥ ४० ॥

तत्रदेवैःस्तुतादेवीलक्ष्मीप्राप्त्यर्थमादरात् ॥
तेषामनुग्रहार्थायनिर्गतातुरमाततः ॥४१॥

भा०टी०—उस समय लक्ष्मीकी प्राप्तिके निमित्त देवताओंने परम आदरसे उनकी स्तुति की. तब उनके ऊपर अनुग्रह करनेके निमित्त समुद्रसे लक्ष्मी निकली४१

वैकुण्ठायसुरैर्दत्तातेनतस्यशमोऽभवत् ॥
इतितेकथितंराजन्देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥४२॥

भा०टी०—देवताओंने उनको भगवान् विष्णुको दिया जिसमें वह बडी प्रसन्न हुई हे राजन्! यह आपसे उत्तम देवीका माहात्म्य वर्णन किया ॥ ४२ ॥

गौरीलक्ष्म्योःसमुद्भूतिविषयंसर्वकामदम् ॥
नवाच्यंत्वेतदन्यस्मैरहस्यंकथितंयतः॥४३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०--यह गौरी और लक्ष्मीका प्रादुर्भाव सब कामनाका देनेवाला है यह रहस्य· जिस किसीके प्रति नहीं कहना चाहिये ॥ ४३ ॥

गीतारहस्यभूतेयंगोपनीयाप्रयत्नतः ॥
सर्वमुक्तंसमासेनयत्पृष्टंतत्त्वयाऽनघ ॥ ४४॥

भा०टी०--रहस्यमयी इस गीताको बडे यत्नसे गुप्त रखना चाहिये हे पापरहित ! तुमने जो विषय पूँछा था वह सब संक्षेपसे वर्णन किया ॥ ४४ ॥

पवित्रंपावनंदिव्यंकिंभूयःश्रोतुमिच्छासि ॥४५॥

इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कंधेदेवीगीतायांदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा०टी०—यह पवित्र पावन और दिव्य चरित्र है आपको अब और क्या सुननेकी इच्छा है ? ॥ ४५ ॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे पण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृतदेवीगीता-भाषाटीकायां दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

इति देवीगीताभाषाटीका समाप्ता।

॥ श्रीरस्तु ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDP

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MoE

पुस्तकें मिलने के स्थान :-

१. खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
सातवीं खेतवाड़ी खम्बाटा लेन
बम्बई-४०० ००४

२. गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्या बाई चौक, कल्याण,
(जि० ठाणे-महाराष्ट्र)

३. खेमराज श्रीकृष्णदास, चौक-वाराणसी (उ. प्र.)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, K

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu